हमारे विनम्र परमेश्वर के क्रिया

परमेश्वर के चरित्र पर एक नय नई रोशनी

जे ए। शुल्बर्ग

हमारे विनम्र परमेश्वर के क्रिया

परमेश्वर के चरित्र पर एक नय नई रोशनी

अहिंसक परमेश्वर का प्रकरण:

परमेश्वर के बारे में गलतफहमियो को चुनौती देने का और

उतसाहजनक वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य का प्रस्ताव देने का अध्ययन

जे ए। शुल्बर्ग

कॉपीराइट © 2017 © जे ए शुलबर्ग

सभी अधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक के किसी भी भाग का उपयोग नहीं किया जा सकता है या किसी भी तरह से, ग्राफिक, इलेक्ट्रॉनिक, या मैकेनिकल द्वारा पुनरुत्पादित फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, टेपिंग या किसी भी सहित लिखित के बिना सूचना भंडारण पुनर्प्राप्ति प्रणाली संक्षिप्त उद्धरणों के मामले को छोड़कर लेखक की अनुमति आलोचनात्मक लेखों और समीक्षाओं में सन्निहित।

शास्त्र उद्धरण किंग जेम्स संस्करण से लिया गया है ।

द्वारा छपा

www.fatheroflove.in

जून 2021

विषय - सूची

आपने कभी सोचा है? 6

अध्याय 1. क्या यह वास्तव में माईने रखता है? 7

अध्याय 2. हमारा सही प्रतिरूप 9

अध्याय 3. हमारे जीवन का स्रोत 11

अध्याय 4. उनकी स्वरूप में निर्मित 13

अध्याय 5. मास्टर धोखेबाज 15

अध्याय 6. पाप क्या है? 17

अध्याय 7. शैतान क्यों है? 19

अध्याय 8. नष्ट करने वाला सर्प 25

अध्याय 9. अयूब की कैद 27

अध्याय 10. हम बाइबल को क्यों गलत समझते हैं? 32

अध्याय 11. हम परमेश्वर को क्यों गलत समझते हैं? 34

अध्याय 12. परमेश्वर कैसे नष्ट करते हैं? 38

अध्याय 13. परमेश्वर का क्रोध क्या है? 39

अध्याय 14. परमेश्वर युद्ध कैसे लड़ते हैं? 48

अध्याय 15. सदोम और अमोरा 50

अध्याय 16. बाढ़ के बारे में क्या? 52

अध्याय 17. क्रॉस की गवाही 56

अध्याय 18. परमेश्वर एक अत्याचारी नहीं है 59

अध्याय 19. हमारे निर्माता और स्थायी 66

अध्याय 20. हम अनंत जीवन कैसे पा सकते हैं? 71

अध्याय 21. क्या हमें न्याय से डरना चाहिए? 77

अध्याय 22. परमेश्वर का न्याय कैसा दिखता है? 85

अध्याय 23. परमेश्वर विनम्र है 89

अध्याय 24. परमेश्वर एक सेवक है, गुलाम का मालिक नहीं 91

अध्याय 25. परमेश्वर आपको बिना शर्त प्यार करता है 93

अध्याय 26. परमेश्वर का राज्य 95

अध्याय 27. परमेश्वर हमें सच्ची स्वतंत्रता प्रदान करता है 99

इनकैप्सुलेशन 102

प्रस्तावना

आपने कभी सोचा है?

कानूनी भाषा में, एक आपदा जो पूरी तरह से प्रकृति की शक्तियों पर निर्भर हो और यथोचित रोका नहीं जा सकता हो वो परमेश्वर के क्रिया के रूप में जाना जाता है। यह वाक्यांश अक्सर बीमा नीति में शामिल होती है। यह विचार कहां से मिला कि परमेश्वर हमारी दुनिया में हेरफेरी करता है? क्या परमेश्वर तय करता है वह कब और कहाँ प्राकृतिक आपदाएँ जैसे कि बवंडर, भूकंप, तूफान, बाढ़ भेजेगा? और वह हमारी दुनिया में दुख रोकने के लिए और अधिक क्यों नहीं करता? परमेश्वर इस संसार के कष्टों को समाप्त करने के लिए कुछ क्यों नहीं करता? अंत में, क्या परमेश्वर बाइबल में पाए जाने वाले हिंसा के लिए जिम्मेदार था? क्या उसने खुद हिंसा का सहारा लिया?

बाइबल इन सवालों के जवाब देती है, लेकिन हमें उन्हें खोजने के लिए सतह के नीचे देखने की ज़रूरत है । हमें भी यह सुनने को तैयार होना चाहिए कि परमेश्वर अपने बारे में क्या कहता है और कैसे काम करता है, भले ही यह हमारे विश्वासों को चुनौती देता हो।

यह पुस्तक परमेश्वर के चरित्र की जांच करेगी जैसा कि पवित्र बाइबल में सामने आया है – उसके कार्य क्या हैं और जैसे ही महत्वपूर्ण हैं, क्या वो नहीं हैं। कई लोग मानते हैं कि जब हम उनके नियम का अनुसरण करते हैं तो परमेश्वर हमसे प्यार करता है, लेकिन हमारे गलत कामों से परमेश्वर नाराज होता है और उन लोगों को दंडित करते हैं जो उसके हुक्म के खिलाफ जाते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह हैं कि बाइबल से दिखाया जाये कि परमेश्वर ने कभी भी विध्वंसक के रूप में नहीं चला, परन्तु केवल एक निर्माता, निर्वाहक और उद्धारकर्ता के रूप में काम किया है।

पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहिले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है। – याकूब 3:17

1

क्या यह वास्तव में मायने रखता है?

परमेश्वर कैसे है, क्यों यह जानना महत्वपूर्ण हैं? क्या यह जानना जरूरी है के हम परमेश्वर के बारे में क्या सोचते हैं? क्या यह भी मायने रखता है कि हम परमेश्वर के बारे में क्या सोचते हैं? इन सवालों के जवाब इस बात पर निर्भर करते हैं कि इन सवालों के जवाब आपके लिए कितने मूल्यवान हैं । हमारा अपना चरित्र इस पर निर्धारित करता है- कि हम परमेश्वर के बारे में और उनके चरित्र के बारे में क्या मानते हैं। और हमारा चरित्र सभी दुनियावी भौतिक धन की तुलना में अधिक मूल्यवान है ।

यीशु ने कहा, "मैं और मेरे पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30)। परमेश्वर पिता और परमेश्वर का पुत्र एक उद्देश्य में हैं - एक से चरित्र में है। उनका संबंध पूर्ण सामंजस्य में से एक है। इब्रियों के लेखक ने यह घोषणा की कि यीशु परमेश्वर पिता की महिमा की चमक, और उनके व्यक्ति की अभिव्यक्ति स्वरूप है (इब्रियों 1: 3)। परमेश्वर की महिमा उनके वैभव से कहीं अधिक है; यह उसका चरित्र है । जब मूसा ने परमेश्वर से उसे अपनी महिमा दिखाने के लिए कहा, तब परमेश्वर मूसा के सामने से गुजरा और उसके चरित्र की घोषणा की:

और यहोवा उसके साम्हने हो कर यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, हजारों पीढिय़ों तक निरन्तर करूणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला है । (निर्गमन 34:6-7)

यदि हम परमेश्वर को उस रूप में जान सकें जैसे वह वास्तव में है, तब हमारा उस से मेल हो जाएगा। यह ज्ञान स्वास्थ्य चंगाई और जीवन देने वाला है। सुनिए यीशु ने पृथ्वी पर रहते हुए अपनी एक प्रार्थना में अपने पिता से क्या कहा था: “और यह जीवन अनन्त है, कि वे यह मान सके कि तू ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर और यीशु मसीह है, जिसे तूने भेजा ”(यूहन्ना 17: 3)। यीशु ने अपने शब्दों और जीवन से परमपिता परमात्मा जैसा है वैसा ही प्रदर्शन किया । उन्होंने कहा, "वास्तव में मैं कहता हूं , पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह (पिता) करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है ”(यूहन्ना 5:19)।

जब हम जानेंगे कि परमेश्वर निरंतर प्रेममय और दयालु है, हम प्रेम और विश्वास में उसकी ओर खिंचे चले आएंगे। हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम और भलाई को जानने से, हम निश्चिंत रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर कभी बदलते नहीं । परमेश्वर मलाकी 3:6 में घोषणा करते हैं, “क्योंकि मैं परमेश्वर हूं मैं

कभी नहीं बदलता । वह इंसानों की तरह समय-समय पर नहीं बदलता । जब तक हमारे साथ अच्छा व्यवहार और हमारा सम्मान किया जाता है, तब तक हम दयालु, प्रेमपूर्ण और विचारशील रहते हैं | लेकिन जब लोग हमें चोट पहुँचाते हैं तो हम क्रोधित हो जाते हैं और प्रतिशोध लेना चाहते हैं। यह है पाप की ओर हमारा झुकाव । लेकिन परमेश्वर कभी भी गुस्से में या प्रतिशोध से जवाब नहीं देते।

परमेश्वर का वचन इस बात की पुष्टि करता है कि यीशु और परमेश्वर पिता कभी नहीं बदलते: "यीशु मसीह कल, और आज और हमेशा के लिए समानये है"(हेब। 13: 8)। हर अच्छा उपहार और हर सही उपहार ऊपर से है, रोशनी के पिता से नीचे आ रहा है, जिसके साथ बदल के कारण कोई भिन्नता या मोड़ की छाया नहीं है।" (जेम्स 1:17)। ये शब्द हमें यह भी विश्वास दिलाते हैं कि हमारा विनम्र परमेश्वर हिंसक पक्ष का नहीं है।

"और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:14)।

2

हमारा सही प्रतिरूप

पर्वत पर उपदेश की घटना में, यीशु हमें शत्रुतापूर्ण दुनिया में रहने का सही तरीका देते है:

“तुमने सुना है: कहा गया है ‘तू अपने पड़ौसी से प्रेम कर और शत्रु से घृणा कर।’ किन्तु मैं कहता हूँ अपने शत्रुओं से भी प्यार करो। जो तुम्हें यातनाएँ देते हैं, उनके लिये भी प्रार्थना करो। ताकि तुम स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता की सिद्ध संतान बन सको। क्योंकि वह बुरों और भलों सब पर सूर्य का प्रकाश चमकाता है। पापियों और धर्मियों, सब पर वर्षा कराता है। यह मैं इसलिये कहता हूँ कि यदि तू उन्हीं से प्रेम करेगा जो तुझसे प्रेम करते हैं तो तुझे क्या फल मिलेगा। क्या ऐसा तो कर वसूल करने वाले भी नहीं करते? यदि तू अपने भाई बंदों का ही स्वागत करेगा तो तू औरों से अधिक क्या कर रहा है? क्या ऐसा तो विधर्मी भी नहीं करते? इसलिये परिपूर्ण बनो, वैसे ही जैसे तुम्हारा स्वर्ग-पिता परिपूर्ण है। (मत्ती 5:43-48)

यह अंश हमें परमेश्वर के बारे में क्या सिखाता है? यीशु कहते हैं, “अपने शत्रुओं से भी प्यार करो,” और आगे इस प्रकार है, “ताकि तुम स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता की सिद्ध संतान बन सको।“ और वह इसके साथ निष्कर्ष निकालते हैं, “इसलिये परिपूर्ण बनो, वैसे ही जैसे तुम्हारा स्वर्ग-पिता परिपूर्ण है”। यीशु हमसे अपने शत्रुओं के साथ व्यवहार करने के लिए कह रहे हैं जैसे हमारे स्वर्गीय पिता अपने शत्रुओं के साथ प्रेम से पेश आते हैं।। वह चाहता है कि हम यह समझें कि ऊंचा सिद्धांत जो वह हमारे सामने पर्वत पर उपदेश देते समय रखता है वह तभी प्राप्य है जब हम उन्हें स्वयं परमेश्वर से उत्पन्न होते हुए देखते हैं।

यीशु के जीवन में, हम हमारे दुश्मनों के साथ केसा व्यावहार करे, उसका आदर्श प्रतिरूप पाते हैं। उन्होंने उन लोगों के खिलाफ, जिन्होने उसके साथ अन्याय किया, कभी भी प्रतिशोध नहीं की। उसके विश्वासघात और उसकी गिरफ्तारी से सूली पर चढ़ा दिया जाने तक, जब उसे धोखा दिया गया, गिरफ्तार किया गया, और सूली पर चढ़ाया गया, तब भी उसने परमेश्वर से अपने सताने वालों को क्षमा करने के लिए कहा। यीशु बोला, “हे परम पिता, इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं” (लूका 23:34)। इसमें यीशु ने परमेश्वर पिता के न बदल ने वाला प्रेम का प्रदर्शन किया।

जब यीशु का एक सामरी गाँव में स्वागत नहीं किया गया, तो उसके चेलों, याकूब और यूहन्ना, ने सोचा कि गाँव अग्नि से नष्ट होना चाहिए । उस समय उन्होंने यीशु से कहा: “प्रभु क्या तू चाहता है कि हम आदेश दें कि आकाश से अग्नि बरसे और उन्हें भस्म कर दे?” इस पर वह उनकी तरफ़ मुड़ा और

उनको डाँटा फटकार और कहा, “क्या तुम नहीं जानते कि तुम नहीं जानते कि तुम किस प्रकार की आत्मा के हो। मनुष्य का पुत्र मनुष्य की आत्माओं को नष्ट करने नहीं बल्कि उनका उद्धार करने आया है।“ फिर वे दूसरे गाँव चले गये (लूका 9:54-56)।

यीशु के जीवन का अध्ययन करना परमेश्वर को वह जैसा है उसे जानने का सबसे अच्छा तरीका है। उसने कभी किसी को नहीं मारा या ऐसा करने की धमकी नहीं दी। यीशु ने कभी किसी को चोट नहीं पहुंचाई। उन्होंने कभी किसी की निंदा नहीं की। जब शिष्यों की ओर से फिलिप ने यीशु को उन्हें पिता को दिखाने के लिए कहा तब उन्होंने उत्तर दिया: “फ़िलिप्पॉस! इतने लंबे समय से मैं तुम्हारे साथ हूँ, क्या फिर भी तुम मुझे नहीं जानते? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को भी देख लिया. फिर तुम यह कैसे कह रहे हो, ‘हमें पिता के दर्शन करा दीजिए’? क्या तुम यह नहीं मानते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें? जो वचन मैं तुमसे कहता हूँ, वह मैं अपनी ओर से नहीं कहता; मेरे अंदर बसे पिता ही हैं, जो मुझमें हो कर अपना काम पूरा कर रहे हैं (यूहन्ना 14:9-10)।

जैसा कि हम इस अध्ययन पर विचार करते हैं जो धर्मशास्त्र को यथास्थिति चुनौती देगा, हम यीशु और उसके शब्दों को और उनकी सही प्रतिरूप को अपने विचारो मे सबसे आगे रखने का उदेश्य बनाइए ।

3

हमारे जीवन का स्रोत

कुछ प्रारंभिक जमीनी सचाई स्थापित करने के साथ कि परमेश्वर निरंतर प्रेममय है, हम बाइबल से परमेश्वर के क्रिया की जांच करेंगे, जो यीशु द्वारा सिखाया गये सिद्धांतों से विपरीत प्रतीत होती है। यशायाह की पुस्तक में, हम परमेश्वर के तरीकों और विचारों के बारे में गहन अंतर्दृष्टि पाते हैं: क्योंकि मेरे विचार तुम्हारे विचार नहीं हैं, न ही तुम्हारे मार्ग मेरे मार्ग हैं, यहोवा की यही वाणी है। जैसे धरती से ऊँचे स्वर्ग हैं वैसे ही तुम्हारी राहों से मेरी राहें ऊँची हैं और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से ऊँचे हैं।" ये बातें स्वयं यहोवा ने ही कहीं हैं। (यशायाह 55: 8-9)

परमेश्वर के तरीके और विचार हमारे तरीकों और विचारों की तुलना से उद्देश्य और चरित्र में असीम रूप से उत्तम हैं । परमेश्वर के बारे में यह निश्चित सत्य को समझ पाना हमारे लिए मुश्किल है। हमारे दृढ़ संकल्प में अपने आप को सही ठहराने के लिए, हम कल्पना करते हैं कि परमेश्वर हमारे जैसा है। हमें गुस्सा आता है, इसलिए हमें लगता है कि परमेश्वर को भी गुस्सा करना चाहिए जैसे हम करते हैं। जब कोई हमें गलत करता है तो हम प्रतिशोध के लिए गुस्से से आगे बढ़ते हैं, इसलिए हमें लगता है कि जब दूसरे परमेश्वर को चोट पहुँचाते हैं, तो परमेश्वर भी उनसे बदला लेने की कोशिश कर रहे होंगे । लेकिन प्रिय पाठक, भगवान हमसे अन्यथा कहते हैं ।

ये काम तू ने किए हैं, और मैं चुप रहा; तुमने सोचा था कि मैं तुम्हारे जैसा एक था। देखो, मैं चुप नहीं रहूँगा, परन्तु मैं तुझे स्पष्ट कर दूँगा, और तेरे ही मुख पर तेरे दोष बताऊँगा । (भजन संहिता 50:21)

जब परमेश्वर ने हमारी दुनिया बनाई, तो उसने इसके लिए इरादा नहीं किया कि वे अपने आप कार्य करें। परमेश्वर के लिए हमारी दुनिया के साथ शामिल न होना केवल अपने उद्देश्य के विपरीत होना नहीं, इसका मतलब यह होगा कि हमारे ग्रह पर जीवन जारी नहीं रह सकेगा- "क्योंकि उसी में हम रहते हैं उसी में हमारी गति है और उसी में है हमारा अस्तित्व (प्रेरितों के काम 17:28)। हम हर सांस लेते हैं क्योंकि परमेश्वर हमें सम्हालते हैं।

परमेश्वर हमारे जीवन का स्रोत और निर्वाहक है । हालाँकि, एक बात है जो हमें उससे अलग कर सकती है -पाप। लेकिन पाप क्या है? हम अक्सर पाप के बारे में बुरी चीजों को करना

या परमेश्वर की आज्ञाएँ तोड़ने को सोचते हैं। विचार यह है कि पाप को किसी भी तरह से परिमाणित किया जा सकता है, हम में से कुछ को बड़ी मात्रा में और दूसरों को बहुत कम या जयदा

नहीं की मात्रा में । बाइबल में, हम सीखते है कि हम जो बुरे काम करते हैं, वे एक अंतर्निहित दुर्भावनाओ के गहरे लक्षण हैं जो हम सभी को अपने पहले माता-पिता से विरासत में मिली है। यह दुर्भावना उस झूठ पर विश्वास कर रही है कि परमेश्वर खुद के सर्वोत्तम हित के लिए देखता है। शैतान के इस झूठ को ईडन के बगीचे में मानव जाति के सामने रखा गया था, और तब से इसने हमारे जीवन में परमेश्वर की तस्वीर को विकृत कर दिया है।

जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया और उन्हें उद्यान के अंदर रखा, उन्हें एक प्रतिबंध दिया गया था - और केवल एक: यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, “तुम बग़ीचे के किसी भी पेड़ से फल खा सकते हो। लेकिन तुम अच्छे और बुरे की जानकारी देने वाले पेड़ का फल नहीं खा सकते। यदि तुमने उस पेड़ का फल खा लिया तो तुम मर जाओगे।”(उत्पत्ति 2:16-17)

यह समझना आसान है कि परमेश्वर ने बगीचे में "जीवन का पेड़" क्यों रखा (उत्पत्ति 2: 9), लेकिन यह हमारे लिए सराहना मुश्किल है कि उसने “अच्छे और बुरे के ज्ञान का पेड़” उस सही वातावरण में क्यों रखा। उस पेड़ से खाने के खिलाफ चेतावनी आपदा के निमंत्रण की तरह लगती है।

4

उनकी स्वरूप में निर्मित

उत्पत्ति में हम अपनी विरासत पाते हैं: तब परमेश्वर ने कहा, “अब हम मनुष्य बनाएं। हम मनुष्य को अपने स्वरूप जैसा बनाएगे। मनुष्य हमारी तरह होगा: .... इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरुप में सृजा। परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया” (उत्पत्ति 1:26-27) । इसका क्या मतलब है कि हम परमेश्वर की स्वरूप में बनाए गए है, और परमेश्वर का स्वरूप क्या है? परमेश्वर का स्वरूप क्या होता है इसका प्रकाश हम एक परिभाषा, जो परमेश्वर का वर्णन करती है कि परमेश्वर कौन है, से पाते हैं।

जब हम परमेश्वर के शास्त्र में एक परिभाषा (डेफिनिशन) पाएंगे जो परमेश्वर का वर्णन करता है, तब हम जानेंगे कि परमेश्वर का स्वरूप क्या है।

ठीक परिभाषा (डेफिनिशन) 1 यूहन्ना 4:8 में पाई जाती है: "परमेश्वर प्रेम है”। ध्यान दें कि पद्य केवल "परमेश्वर स्नेहशील है" नहीं कहती, जैसे कि प्रेम उसकी कई विशेषताओं में से एक है, लेकिन केवल यह कहता है, "परमेश्वर प्रेम है।", "परमेश्वर प्रेम है।" और जो कुछ भी हम परमेश्वर के बारे में जान सकते हैं वह इस परिभाषा के अनुरूप होना चाहिए। इसलिए, जेसे परमेश्वर परिपूर्ण है , हम यथोचित निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि परमेश्वर का प्रेम भी परिपूर्ण, बिना किसी स्वार्थ के भी पूर्ण होना चाहिए। , इसके अलावा, उसका प्रेम ना बदलने वाला होना चाहिए जेसे वह ना बदलने वाला है।

अगर हम परमेश्वर की स्वरूप में बने हैं, तो हमें प्रेम का अनुभव करने के लिए परमेश्वर द्वारा आध्यात्मिक रूप से बनाए जाना चाहिए । क्योंकि प्यार प्यार है, इसे किसी भी तरह से हुक्म या जबरदस्ती नहीं किया जा सकता। । यह केवल एक विकल्प के रूप में स्वतंत्र रूप से दिया जा सकता है। यह आसानी से समझ में आता है अगर हम एक भरी हुई बंदूक के साथ बस में एक रोमांटिक आदमी की कल्पना करते हैं जो मौत की धमकी पर यात्रियों से प्यार की मांग करना चाहेगा। क्या यह प्यार पैदा करने का एक अच्छा तरीका है?

मान लीजिए कि हम प्यार प्राप्त करने के कम कठोर तरीके की कोशिश एक रोबोट बनाकर करे जो हमारे उपस्थिति में आते ही "आई लव यू" कहे। क्या इसका परिणाम एक संतोषजनक और सार्थक प्रेम आधारित संबंध होगा? क्या ये तरीके, जो हमें सच्चा प्यार और संतुष्टि देने में विफल हैं, परमेश्वर के लिए काम करेंगे?

आइए हम अदन के बाग और वह बहुत ही हैरान करनेवाला निषिद्ध वृक्ष में वापस जाएँ। यदि परमेश्वर ने वह पेड़ नहीं बनाया होता, तो क्या मानव जाति के लिए परमेश्वर से प्रेम करना संभव होता? प्रेम को प्रेम बनाया रखने के लिए स्वतंत्र रूप से दिया जाना चाहिए ये आवश्यक है। प्रेम को

स्वतंत्र रूप से दिया जाने के लिए हमें भी प्रेम न करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। प्रेम हमेशा एक विकल्प होता है ; प्रेम की आज्ञा या ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती।

अगर परमेश्वर ने हमारे पहले माता-पिता को अदन के बाग में उसे प्यार ना करने का और उस पर भरोसा नहीं करने के लिए कुछ ठोस रास्ता प्रदान नहीं किया होता तो उनके लिए यह संभव नहीं होता कि वे परमेश्वर से स्वतंत्रता से प्रेम करें। जिस प्रकार परमेश्वर हमारे जीवन का स्रोत है, वह भी हमारा वास्तविक प्रेम का स्रोत है - जीवन और प्रेम अविभाज्य हैं। परमेश्वर की स्वरूप में रचे जाने से हम प्रत्येक को हमें हमारे निर्माता के दोस्त बने की क्षमता देती है।

परमेश्वर ने अच्छे और बुरे के ज्ञान का पेड़ को उसकी शाखाओं से खाने की मनाही के साथ इसलिए नहीं लगाया कि हमारी आज्ञाकारिता परखी जाए, लेकिन एक आश्वासन के रूप में कि वह हमारी विकल्प की स्वतंत्रता को इतना महत्व देता है कि वह इसके लिए जोखिम उठाने को तैयार था की हम उससे मोड़ना चुन सकते। जब हम इस कारण को समझते है कि परमेश्वर ने निषिद्ध वृक्ष को उद्यान में क्यों रखा था, हम उस पर आत्म-सेवा तानाशाही करने का आरोप नहीं लगाएंगे। हालाँकि, एक था (शैतान), जो उस बात का परमेश्वर पर आरोप लगाने के लिए तैयार था ।

5

मास्टर धोखेबाज

अब सर्प, जिसे यहोवा परमेश्वर ने बनाया था, किसी भी जानवर की तुलना में अधिक सूक्ष्म था। और उसने महिला से कहा, हाँ, क्या परमेश्वर ने कहा, तुम बगीचे के हर पेड़ का फल नहीं खाओगे? और महिला ने सर्प से कहा, हम उद्यान के पेड़ों का फल खा सकते हैं: लेकिन जो पेड़ बीच में है उस का फल, परमेश्वर ने कहा, न तो इसे खाओगे, न ही तुम इसे छूओगे, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ। और सर्प ने महिला से कहा, तुम निश्चित रूप से नहीं मरोगे: क्योंकि परमेश्वर को पता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे, उस दिन के बाद तुम्हारी आंखें खुल जायेगी, और तुम अच्छे और बुरे को जानकर देवताओं के समान हो जाओगे। --- उत्पत्ति 3: 1-5

पहले, आइए इस बात करने वाले साँप की पहचान निर्धारित करें। यह साँप कौन है? “और वह बड़ा अजगर अर्यात वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए“ (प्रकाशीत वाकय 12:9) । हव्वा सिर्फ एक बुद्धिमान साँप के साथ बात नहीं कर रही थी, लेकिन शैतान के साथ - जो खुद एक मास्टर धोखेबाज है।

सूक्ष्म आग्रह द्वारा सर्प ने परमेश्वर पर आदम और हव्वा से झूठ बोलने का और उनसे कुछ अच्छा रोकने का आरोप लगाया । इसके अलावा, उसने उनसे कहा कि यदि वे फल खाएंगे, तो उनकी आंखें खुल जाएंगी, और वे "देवताओं" के समान हो जाएंगे जो अच्छे और बुरे को जानते हैं।" हव्वा ने किस पर विश्वास करना चुना, परमेश्वर या शैतान?

और जब महिला ने देखा कि पेड़ खाने के लिए अच्छा था, और यह आंखों के लिए सुखद था, और एक पेड़ जो बुद्धिमान बनाने के लिए वांछित था, तत्पश्चात, उसने वह फल ले लिया और खाया, और उसके साथ अपने पति को भी दिया; और उसने खाया। और उन दोनों की आँखें खुल गई, और वे जान गए कि वे नग्न थे; और उन्होंने अंजीर के पत्तों को एक साथ सिल दिया, और खुद अपने लिए तहबंद बनाए। और उन्होंने दिन की ठंडी में परमेश्वर को बगीचे में घूमने की आवाज सुनी: और आदम और उसकी पत्नी ने खुद को पेड़ों के बीच में परमेश्वर की उपस्थिति से छिपा लिया। और यहोवा परमेश्वर ने आदम को बुलाया, और कहा, तू कहां है? (उत्पत्ति 3: 6-9)

जब आदम और हव्वा ने निषिद्ध पेड़ से खाया, तो उनकी आँखें खुल गई (वे आत्म-सचेत हो गए), और उन्होंने स्वयं को परमेश्वर से छिपने को चाहा। परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी? वह उनकी

तलाश करते आया। उनके पहले शब्द थे, "आदम तुम कहाँ हो?" वह अपने उन बच्चों के साथ फिर से जुड़ना चाहता था जो पाप के कारण उससे अलग हो गए थे।

“क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो कोई खो गया है, उसे ढूँढने और उसकी रक्षा के लिए आया है”। ---- (लूका 19:10)

6

पाप क्या है?

अब, इस सवाल पर वापस जाना: पाप क्या है? सही परिभाषा (डेफिनिशन) खोजने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम पहले ठीक पहचान लें कि “अच्छे और बुराई के ज्ञान के पेड़” पर क्या गलत हुआ। उत्पत्ति 3:6 में, महिला ने पेड़ के तीन वांछनीय गुणों को देखा:

1. "पेड़ भोजन के लिए अच्छा था।" सतह पर यह सच दिखाई दे सकता है, क्या यह इस तथ्य के लिए नहीं था कि पेड़ को भोजन का एक स्रोत निषिद्ध किया गया था। समस्या केवल फल के साथ नहीं थी बल्कि वह महिला अब इसे अच्छा देख रही थी।

2. पेड़ "आंखों के लिए सुखद था।" वह सब कुछ जिसे परमेश्वर ने बगीचे में बनाया सही था, इसलिए दरअसल पेड़ "आंखों के लिए सुखद" हो सकता था । महिला ने पेड़ की एक और वांछनीय गुणवत्ता देखि।

3. "पेड़ बुद्धिमान बनाने के लिए वांछित है।" वास्तव में क्या इस पेड़ में रहस्यमय गुण था? क्या साँप सही था ? क्या वास्तव में एक अच्छाई और बुराई का ज्ञान वांछनीय होगा? और अच्छाई और बुराई का ज्ञान होने का क्या मतलब है? क्या यह सिर्फ अधिग्रहण जानकारी है?

बाइबल के पद से हम निष्कर्ष निकालते हैं, "उसने फल लेकर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने खाया।" इसे अक्सर मानवता का पहला पाप माना जाता है, लेकिन पाप क्या है? पहले क्या आया - फल खाना या परमेश्वर के बारे में सर्प का झूठ विश्वास करना?

प्राथमिक समस्या तब शूरू हुई जब हवा ने परमेश्वर के विरुद्ध बोले गए सर्प के झूठ पर विश्वास किया । परोक्ष रूप से सर्प ने उससे कहा था, परमेश्वर स्वार्थी है और इसलिए वह उनसे कुछ अच्छा रोक रहा है। पाप केवल कर्म नहीं है, जैसे कि पाप एक मात्रा का पदार्थ है। पाप, इसके मूल में, एक मानसिक रोग स्थिति है जो परमेश्वर को आत्म-केन्द्रित के अस्तित्व में देखता और इस प्रकार उस पर भरोसा करने में असमर्थ है।

पाप की तुलना एक बीमारी से की जा सकती है। एक बीमारी के कई कारण जैसे जीवाणु संक्रमण, चयापचय रोग या प्रतिरक्षा प्रणाली का रोग। ये प्राथमिक कारण एक से अधिक लक्षणों के परिणाम में है: बुखार, मतली, दर्द, चक्कर आना, सुस्ती। इसी तरह पाप के साथ, प्राथमिक कारण है - परमेश्वर के बारे में झूठ पर विश्वास करना और इसके परिणामस्वरूप, खुद को उससे, जिसका प्रेम

अन्य-केंद्रित है, अलग करना। हमारे बाहरी पाप (लक्षण) यह विश्वास करने का परिणाम है कि परमेश्वर स्वयं-सेवा कर रहे हैं। यीशु, के साथ, शास्त्री और फरीसी, अपनी बातचीत में पाप की इस सादृश्यता का इस्तेमाल उपचार की आवश्यकता में करते थे: “और शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर, कि वह तो पापियों और चुंगी लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है, उसके चेलों से कहा, “वह तो चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाता पीता है!” यीशु ने यह सुनकर, उनसे कहा, “भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है: मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।”(मरकुस 2:16-17)

पाप घातक है क्योंकि यह हमें परमेश्वर जो जीवन का स्रोत हैं उसे अलग करता है। परमेश्वर कभी खुद को हमसे अलग नहीं करता - हम खुद उससे हमेशा अलग होते है। आदम और हव्वा शैतान की तुलना परमेश्वर से डरने लगे जबकि उन्हें शैतान से सबसे ज्यादा डरना चाहिए था । फल खाने के बाद, बाइबल कहती है, "आदम और उसकी पत्नी ने अपने आप को परमेश्वर के सामने से बाटिका के वृक्षों के बीच छिपा लिया (उत्पत्ति 3:8)।" उस दिन से हम अपने दीन परमेश्वर से छिप रहे हैं।

हम अच्छा करेंगे यदि हम ध्यान दें कि जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पेड़ से न खाने की चेतावनी दी, तो उसने उनसे यह नहीं कहा, "जिस दिन तुम इसे खाओगे, मैं तुम्हें मार डालूंगा।" लेकिन उन्होंने कहा, “यदि तुमने उस पेड़ का फल खा लिया तो तुम मर जाओगे ।" जब आदम और हव्वा ने पेड़ से खा लिया, उसी दिन से उन पर मरने की प्रक्रिया शुरू हुई जैसे उन्होंने अपने जीवन के स्रोत से खुद को अलग कर लिया। यह पाप है (झूठ पर विश्वास करना कि परमेश्वर स्वार्थी और असत्य है) जो घातक है, परमेश्वर नहीं: “क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, रोमियों 6:23) । परमेश्वर पाप के व्यवसाय में नहीं है, और वह पाप की मजदूरी का भुगतान नहीं करता है।

यह भी स्पष्ट है कि जब आदम और हव्वा ने पेड़ का फल खाया, तो उन्हें अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त हुआ। उसने अनजाने में खुद को और अपने वंशजों को अच्छे और बुरे के ज्ञान का अनुभव करने के लिए प्रतिबद्ध किया। आदम के बेटे-बेटियाँ न केवल बुराई के बारे में जानेंगे; वे यह सोचेंगे, वे इसे जीएंगे, वे इसके दास होंगे, और परिणामस्वरूप वे दर्द, पीड़ा, भय और मृत्यु को जानेंगे।

जब पाप हमारी दुनिया में प्रवेश किया तब मानव जाति अपरिहार्य रूप से परिणाम पीड़ित होने में अकेले नहीं थे। सारी प्रकृति आदम और हव्वा के पाप द्वारा शुरू किया गया निर्माण और निर्माता के बीच की असहमति से प्रभावित थी: “क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है” (रोमियों 8:22)। मानव जाति और जानवरो के लिए पृथ्वी एक खतरनाक जगह बन गई। नूह के दिन की बाढ़ के बाद से, पृथ्वी हिंसक मौसम के अधीन रही है, भूकंप, ज्वालामुखी, और प्रकृति के अन्य विनाशकारी बल। प्रकृति में स्पष्ट होते खतरनाक बल परमेश्वर से नहीं हैं; वे केवल मौजूद हैं क्योंकि हमने परमेश्वर को अपने आप से दूर रखा है।

7

शैतान क्यों है?

इस पुस्तक में, शैतान नामक एक शाब्दिक आध्यात्मिक जीव का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है, जिसने खुद को परमेश्वर के खिलाफ स्थापित किया है।

दो सौ साल पहले की तुलना में, आज पश्चिमी सभ्यता के लोग बहुत छोटी प्रतिशत में शाब्दिक शैतान को मानते है। हमारी आधुनिक संस्कृति में, शैतान को अक्सर अंधविश्वास और अज्ञान के दायरे में आरोपित किया जाता है। इस विचार के साथ, हम बाइबल से शैतान के बारे में जाँच करेंगे और प्रश्नों के उत्तर खोजेंगे।

शैतान की पहचान बाइबल में गिरे हुए स्वर्गदूत के रूप में है। गिरी अवधि का मतलब है कि शैतान मूल रूप से एक निष्पापी था । लेकिन बाद में अपने जीवन में, शैतान ने स्थायी रूप से विद्रोह करने और अपने निर्माता के खिलाफ आध्यात्मिक रूप से लड़ने का फैसला किया ।

यदि स्वर्ग एक आदर्श स्थान है तो उसने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह क्यों किया यह कोई रहस्य नहीं है। स्वर्गदूतों के बीच शैतान का सम्मान और प्रभाव का स्थान था।

कुछ समय बाद, उसके हृदय में गर्व का एक बीज पनपने लगा, और इसलिए वह स्वर्ग में अपनी सबसे अच्छी स्थिति से भी संतुष्ट नहीं था। यह अंततः परमेश्वर के खिलाफ खुले विद्रोह में समाप्त हुआ।

शैतान अपने विद्रोह में अकेला नहीं था। वह कई अन्य स्वर्गदूतों से समर्थन हासिल करने में सक्षम था, हालांकि अधिकांश स्वर्गदूतों ने परमेश्वर के प्रति वफादार रहना चुना। यीशु और उसके स्वर्गदूतों और शैतान और उसके स्वर्गदूतों के बीच का युद्ध एक आध्यात्मिक और बौद्धिक युद्ध था। इस युद्ध में बम या बंदूक जैसे सांसारिक हथियार नहीं थे।

स्वार्थ के खिलाफ प्यार, धोखे के खिलाफ सच्चाई, गोपनीयता के खिलाफ पारदर्शिता, तर्कहीनता के खिलाफ कारण, हताशा के खिलाफ धैर्य, और संदेह के खिलाफ भरोसा दिखा कर यीशु ने शैतान के खिलाफ जीत हासिल की। शैतान ने हमारे पहले माता-पिता को परमेश्वर से अलग करने के लिए उन्हीं तरीकों का इस्तेमाल किया था जिनका इस्तेमाल उसने स्वर्ग में अनुयायियों को हासिल करने के लिए किया था।

उस समय तक शैतान ने परमेश्वर की निष्पक्षता के बारे स्वर्गीय देवदूत के सामने कई सवाल रखे। परमेश्वर के स्वर्गदूतों के पास निश्चित रूप से यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि परमेश्वर के

खिलाफ शैतान के आरोपों की कोई वैधता थी या नहीं। इस कारण से, परमेश्वर ने शैतान को अपने तरीके से अपना शासन प्रदर्शित करने का अवसर दिया।

हम सवाल कर सकते हैं कि विद्रोह की शुरुआत में भगवान ने अपने विरोधी को नष्ट क्यों नहीं किया। क्या इससे पाप और विद्रोह की वृद्धि रुक नहीं जाती? नहीं, यह केवल स्वर्गदूतों को इस बात की पुष्टि देता कि परमेश्वर के खिलाफ लगाए गए शैतान के आरोपो कीवैधता है। यदि परमेश्वर ने शैतान को नष्ट कर दिया होता, तो यह कार्य स्वतंत्रता की अवधारणा को अमान्य कर देता जो केवल परमेश्वर के राज्य में पाई जाती है। बाइबल में ऐसे ढेरों सबूत और उदाहरण हैं जो हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर कभी नष्ट नहीं करता, लेकिन पाप हमें नष्ट कर देता है। शैतान अंत में नष्ट हो जाएगा। यह विनाश उस पर परमेश्वर से नहीं आएगा, लेकिन शैतान के उसका अपना पाप उसे नष्ट कर देगा।

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा : “हे मनुष्य के सन्तान, सोर के राजा के विषय में विलाप का गीत बनाकर उससे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है : तू तो उत्तम से भी उत्तम है; तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है। तू परमेश्वर की अदन नामक बारी में था; तेरे पास आभूषण, माणिक्य, पुखराज, हीरा, फीरोजा, सुलैमानी मणि, यशब, नीलमणि, मरकत, और लाल सब भाँति के मणि* और सोने के पहरावे थे; तेरे डफ और बाँसुलियाँ तुझी में बनाई गई थीं; जिस दिन तू सिरजा गया था; उस दिन वे भी तैयार की गई थीं। तू सुरक्षा करनेवाला अभिषिक्त करूब था, मैंने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था; तू आग सरीखे चमकनेवाले मणियों* के बीच चलता फिरता था। जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझमें कुटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपनी सारी चालचलन में निर्दोष रहा। परन्तु लेन-देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भरकर पापी हो गया; इसी से मैंने तुझे अपवित्र जानकर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा, और हे सुरक्षा करनेवाले करूब मैंने तुझे आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच से नाश किया है। सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और वैभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी। मैंने तुझे भूमि पर पटक दिया; और राजाओं के सामने तुझे रखा कि वे तुझको देखें। तेरे अधर्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्रस्थान अपवित्र हो गए; इसलिए मैंने तुझमें से ऐसी आग उत्पन्न की जिससे तू भस्म हुआ, और मैंने तुझे सब देखनेवालों के सामने भूमि पर भस्म कर डाला है। देश-देश के लोगों में से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए; तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी पाया न जाएगा।” (यहेजकेल 28:11-19)

टायरस के राजा ने इस खाते में शैतान को प्रतीक किया। शैतान को घमंड के या स्वार्थ के बिना त्रुटिरहित बनाया गया था। उसका पूर्णता से पतन उसका अपना था, और उनके पास इस मार्ग के लिए कोई बहाना नहीं था। वह अपनी सुंदरता के कारण अभिमानी हो गया। शैतान को नष्ट करने वाली “आग” एक बाहरी स्रोत से नहीं आएगी; यह स्वयं शैतान के भीतर से आएगी। यह अग्नि उसका अपना स्वार्थ है। यह स्वयं उत्पन्न होने वाली आग है जो उसे खा जाएगी। शैतान का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा ।

“हे भोर के चमकनेवाले तारे, तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति-जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? तू मन में कहता तो था, ‘मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं अपने सिंहासन को परमेश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा; मैं मेघों से भी ऊँचे-ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा”। (यशायाह 14:12-14)

लूसिफ़ेर (शैतान का मूल शीर्षक) गिर गया क्योंकि उसने अपने आप की प्रशंसा करना चहा। यीशु ने अपने अनुयायियों को सिखाया, “जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा” (मत्ती 23:12)। लूसिफ़ेर अपने बारे में अपमान लाया। उसके शब्द “मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा” सच्चाई को धोखा देती है कि उसने केवल भगवान की स्थिति को प्रतिष्ठित किया। उसकी परमेश्वर के चरित्र को दर्शाने की कोई रुचि नहीं थी (एक ही तरीका जिससे बनाया गया जीव परमेश्वर जैसा हो सकता है)।

इस लेखांश की जांच करते समय, यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि परमेश्वर के बारे में व्यक्त विचार लूसिफ़ेर के हैं और परमेश्वर के उद्देश्यों का सटीक वर्णन नहीं । लूसिफ़ेर, अपने आत्म-उत्थान के लिए जुनून की वजह से, ये कल्पना करने लगा कि परमेश्वर भी इसी स्वार्थी मकसद को रखता है।

फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले; और अजगर और उसके दूत उससे लड़े, परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही। और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना साँप, जो शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए। (प्रकाशितवाक्य 12:7-9)

यह लेखांश स्वर्ग में युद्ध का दस्तावेज है जहां शैतान ने उसके धोखे का काम शुरू किया। उसका काम हमारे ग्रह का एक छोटा सा कोना तक सीमित नहीं रहा; उसने पूरी दुनिया को धोखा दिया है।

और उसने उनसे कहा, “मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। (लूका 10:18)

यीशु ने यहाँ शैतान के पतन की तेजी से निष्ठा से बग़ावत या वफादारी से विद्रोह करने की बात की है।

क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं। (1 कुरिन्थियों 4:9)

उन पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं। (1 पतरस 1:12)

जब शैतान ने स्वर्ग में बगावत की, तो वह अपने साथ कुछ गिंती के स्वर्गदूतों को लेकर गया, वफादार स्वर्गदूत पूरी तरह से नहीं समझें कि क्या हो रहा था और क्यों। सुसमाचार का संदेश हमारे लिए और साथ ही साथ परमेश्वर के स्वर्गदूतों के लिए भी है। परमेश्वर के स्वर्गदूत हमें बचाने के लिए परमेश्वर के प्रयासों में सहयोग करके मानव जाति को आत्म-विनाश से बचाने में अत्यधिक रुचि रखते हैं। "सार्वकालिक सुसमाचार" (प्रकाशितवाक्य 14:6) यह आश्वासन देता है कि ईश्वर की विश्वसनीयता के बारे में किसी भी संदेह से ब्रह्मांड हमेशा सुरक्षित रहेगा: “तुम यहोवा के विरुद्ध क्या कल्पना कर रहे हो? वह पूरी तरह से समाप्त कर देगा; विपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी” (नहूम 1:9)।

तब उस समय पवित्र आत्मा यीशु को एकांत में ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो। वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, तब उसे भूख लगी। तब परखनेवाले ने पास आकर उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।” यीशु ने उत्तर दिया, “लिखा है, “‘मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, “परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।” तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। और उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, ‘वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे।’ “यीशु ने उससे कहा, “यह भी लिखा है, ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।’ फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उससे कहा, “यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा।” तब यीशु ने उससे कहा, “हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है: ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।’ ” तब शैतान उसके पास से चला गया, और स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे। (मत्ती 4:1-11)

शैतान यीशु के पास एक लुभाने वाले के रूप में आया; उसका उद्देश्य यीशु के अपने पिता पर विश्वास और निर्भरता को तोड़ना था । शैतान ने ईडन के बगीचे में हव्वा पर इसी तरह के मार्ग का उपयोग करके सफलता हासिल की। शैतान मानवजाति को बचाने का यीशु के उद्देश्य को विफल करना चाहता था, इसलिए उसने यीशु को अपनी दैवीय शक्ति का उपयोग अपने लाभ के लिए करने के लिए प्रलोभित किया। धोखेबाज शैतान, यीशु को परमेश्वर की निस्वार्थता को प्रकट करने के अपने मिशन में सफल होने से रोकने के लिए बेताब था, क्योंकि इससे शैतान एक झूठा के रूप में बेनकाब हो जाता।

एक प्रलोभन में शैतान ने यीशु को “दुनिया के राजाओं” की पेशकश की यदि यीशु केवल गिर जाए और उसकी पूजा करें। यह उल्लेखनीय है कि यीशु ने शैतान के दावे का मुकाबला नहीं किया था कि वह "दुनिया के राज्यों" के क्षेत्र पर अधिकार करें। जब परमेश्वर ने मनुष्यों को पहले बनाया, उन्होंने मानव जाति को “सभी पृथ्वी पर प्रभुत्व” प्रदान किया (उत्पत्ति 1:26), लेकिन जब आदम और हव्वा ने अपने निर्माता के बारे में शैतान के झूठ को माना , उन्होंने अनिवार्य रूप से इस प्रभुत्व को शैतान को सौंप दिया। हम धोखे, दमन, ज़बरदस्ती, और "दुनिया के राज्यों" में असमानता देखते हैं । परमेश्वर के राज्य में बल का उपयोग किसी भी समय या किसी भी परिस्थिति में नहीं किया जाता है। उनके राज्य और इस दुनिया के राज्यों के बीच कोई समानता नहीं है, जो प्यार के कानून के बजाय कानून के शासन पर भरोसा करती है।

मैं अब से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूँगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ पर उसका कुछ अधिकार नहीं। (यूहन्ना 14:30)

यीशु ने पुष्टि की कि यह शैतान है जो “इस विश्व का राजकुमार” है। जब हम शैतान और हमारे ग्रह पर उसके व्यापक प्रभाव के अस्तित्व को नकारते हैं, हम अनजाने में हमारे दुख के लिए परमेश्वर पर दोष लगाते हैं।

सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए। (1 पतरस 5: 8)

शैतान हमारा विरोधी है - परमेश्वर नहीं।

परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और माँस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के शासकों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। (इफिसियों 6:11-12)

जब हमें पता चलता है कि हम सभी धोखे के शिकार हैं कि परमेश्वर मानव जाति पर थोपा गया, हम अन्य लोगों की ओर हमारे दुश्मनों के रूप में नहीं, लेकिन इस बड़े पैमाने पर धोखे के शिकार के रूप में देखेंगे।

अथाह कुण्ड का दूत उन पर राजा था, उसका नाम इब्रानी में अबद्दोन, और यूनानी में अपुल्लयोन है। (प्रकाशितवाक्य 9:11)

"अथाह गड्ढे का दूत" शैतान को संदर्भित करता है। उसे यहाँ ऑपलियन का नाम दिया गया, ग्रीक में इस का अर्थ विध्वंसक है। क्या हम अपने स्वर्गीय पिता को शैतान का नाम या उसकी उपाधि दे सकते हैं?

चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और हत्या करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।
--- यूहन्ना 10:10

8

नष्ट करने वाला सर्प

परमेश्वर ने मिस्रवासियों के खिलाफ जो विपत्तियाँ भेजी थीं, वे परमेश्वर के कुछ सबसे जानबूझकर विनाश के कार्य लगती हैं। सतह पर बाइबिल में इन घटनाओं की व्याख्या करने का कोई अन्य तरीका नहीं है। स्मरण करो, हालांकि, हम ये अनुवाक्य पहले पढ़ते हैं: “मेरे विचार तुम्हारे विचार नहीं हैं, न ही तुम्हारे मार्ग मेरे मार्ग हैं, यहोवा की यही वाणी है” (यशायाह 55:8)।

मूसा को परमेश्वर ने इजरायल के बच्चों को मिस्र के बंधन से आजादी तक के नेतृत्व के लिए नियुक्त किया था। उसने फिरौन के सामने उसके देश में उन आपदाओं से जो लेने वाले थे आगाह करने के लिए जाना था। जब परमेश्वर जंगल में मूसा से मिला, तो उसने उसे एक सबक दिया जो मूसा और हारून ने बाद में फिरौन के सामने प्रदर्शित करना था; जो शासक को आने वाली विपत्तिपूर्ण घटनाओं में परमेश्वर की भूमिका क्या होगी को दिखाएगा: और यहोवा ने उस से कहा, तेरे हाथ मे क्या है? और उसने कहा, एक डंडा । और उसने कहा, इसे जमीन पर रख। और उसने इसे जमीन पर रख दिया, और यह एक साँप बन गया; और मूसा इससे भागा। और यहोवा ने मूसा से कहा, तेरा हाथ आगे कर, और इसे पुंछ से पकड़ ले। और उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, और उसे पकड़ लिया, और यह उसके हाथ में फिर से डंडा बन गया। (निर्गमन 4: 2-4)

तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का और उसने कहा, "क्या तेरा भाई लेवीय हारून* नहीं है? मुझे तो निश्चय है कि वह बोलने में निपुण है,.... वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा; वह तेरे लिये मुँह और तू उसके लिये परमेश्वर ठहरेगा। और तू इस लाठी को हाथ में लिए जा, और इसी से इन चिन्हों को दिखाना।" (निर्गमन 4: 14, 16-17)

मूसा को फिरौन के आगे परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में जाना था। इस प्रदर्शन में परमेश्वर का उद्देश्य एक शक्ति का मात्र प्रदर्शन से अधिक होना था; यह एक असली विध्वंसक की पहचान करने के लिए दृष्टांत था। जब मूसा ने , परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में, अपने हाथ मे डंडे को पकड़ा, यह परमेश्वर के तहत नियंत्रण में प्रकृति की शक्तियों का प्रतीक है -

- विनाशक। जब तक परमेश्वर का सुरक्षात्मक हाथ प्रकृति के विनाशकारी शक्तियों को रोकता है तब तक मिस्र में कोई नुकसान नहीं पहुंच सकता। जब मूसा ने डंडा नीचे रखा, तो वह एक सर्प, बुराई और विनाश का प्रतीक बन गया । यह प्रकृति की ताकतों, जो परमेश्वर के नियंत्रण से बाहर और शैतान (विनाशक) के नियंत्रण में होने का प्रतीक है --

मूसा के समय से सैकड़ों साल पहले और जोसेफ के (जो अपने सौतेले भाइयों द्वारा गुलामी में बेच दिया गया था) फिरौन के परेशान करने वाले सपनों की व्याख्या के बाद, इज़राइल के बच्चों के लिए बेहतर व्यवस्था करी गई थी। फिरौन ने जोसेफ को भविष्य में आने वाले सात साल के अकाल के सपने की व्याख्या करने के लिए और राष्ट्र को उसकी तैयारी करने में उनकी दूरदर्शिता के लिए इज्ज़त और सम्मान की जगह पर उभार दिया। जोसेफ के परिवार का गर्मजोशी से स्वागत किया गया था। मिस्रियों ने यूसुफ और उसके परमेश्वर, जिसकी वे उपासना करता था, उसकी सराहना का प्रदर्शन किया। परमेश्वर देश को समृद्ध बनाने में सक्षम था । हालाँकि, यूसुफ की मृत्यु के कई साल बाद, मिस्र के लोग उसके और उसके परमेश्वर के बारे में भूल गए और इस्राएल के उन लोगों को गुलाम बनाया जो समृद्ध हो चुके और भूमि में गुणा किया जा चुके थे। मिस्र के लोग, अपने कार्यों से, ये संदेश भेज रहे थे कि वे परमेश्वर की उपस्थिति की इच्छा नहीं रखते थे। उनके अपने देवता थे और वे उनके दासों के परमेश्वर को स्वीकार नहीं करना चाहते थे। परमेश्वर अब पूर्ण रूप से अपने आशीर्वाद और सुरक्षा को जारी रखने में सक्षम नहीं था, जबकि, उस समय से ही मिस्र वासियों को उससे अलग होने की स्वतंत्रता देने की अनुमति की प्रतीक्रिया शुरू हो गई।

यदि विपत्तियों के आने के बाद किसी भी समय, फिरौन अपने अवज्ञाकारी पाठ्यक्रम से मुड़ जाता और इस्राएलियों को जाने देता, तो परमेश्वर ने प्रकृति की शक्तियों पर फिर से नियंत्रण कर लिया होता और विपत्तियाँ समाप्त हो जाती। जिद्दी शासक ने यह नहीं किया, और मिस्र को बर्बादी में छोड़ दिया गया था। जब हम परमेश्वर द्वारा डंडा और सर्प की प्रतीकात्मक संदेश पर विचार करते हैं तो मिस्र की विपत्तियों में परमेश्वर की भूमिका स्पष्ट हो जाती है।

1 राजाओं की पुस्तक में परमेश्वर को प्राकृतिक तत्वों द्वारा विनाश के आरोपों से बाहर निकालने के लिए अतिरिक्त समर्थन पाया जाता है। एलिय्याह नबी अपने सेविकायी में कम बिंदु पर रानी ज़ेबेल से एक गुफ़ा में छिपा था, जिसने उसकी जान को खतरे में डाला हुआ था। परमेश्वर उस भगोड़े भविष्यद्वक्ता के पास आए:

वहाँ वह एक गुफा में जाकर टिका और यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, "हे एलिय्याह तेरा यहाँ क्या काम?" उस ने उत्तर दिया "सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, तेरी वेदियों को गिरा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है, और मैं ही अकेला रह गया हूँ; और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।" उसने कहा, "निकलकर यहोवा के सम्मुख पर्वत पर खड़ा हो।" और यहोवा पास से होकर चला, और यहोवा के सामने एक बड़ी प्रचण्ड आँधी से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं, तो भी यहोवा उस आँधी में न था; फिर आँधी के बाद भूकम्प हुआ, तो भी यहोवा उस भूकम्प में न था। फिर भूकम्प के बाद आग दिखाई दी, तो भी यहोवा उस आग में न था; फिर आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया। (1 राजाओं 19:9-12) हमारे विनम्र परमेश्वर अभी भी सबसे छोटी आवाज़ में सबसे श्रव्य बोलता है।

9

अय्यूब की कैद

अय्यूब की पुस्तक में शैतान के दुख और विनाश के कार्य की भूमिका के स्पष्ट प्रमाण दिए गए हैं। यह हमें पर्दे के पीछे परमेश्वर और अनिष्ट की शक्तियाँ के बीच आध्यात्मिक लड़ाई की एक झलक भी देता है। अय्यूब, "एक सिद्ध और धर्मी मनुष्य" (अय्यूब 1:8), परमेश्वर और शैतान के बीच एक आध्यात्मिक लड़ाई में अटक गया था।

एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया। यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ से आता है?" शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, “मैं धरती पर इधर उधर घूम रहा था।” इस पर यहोवा ने शैतान से कहा, “क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब को देखा? पृथ्वी पर उसके जैसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है। अय्यूब एक खरा और विश्वासी व्यक्ति है। वह परमेश्वर की उपासना करता है और बुरी बातों से सदा दूर रहता है।” शैतान ने उत्तर दिया, “निश्चय ही! किन्तु अय्यूब परमेश्वर का एक विशेष कारण से उपासना करता है! तू सदा उसकी, उसके घराने की और जो कुछ उसके पास है उसकी रक्षा करता है। जो कुछ वह करता है, तू उसमें उसे सफल बनाता है। हाँ, तूने उसे आशीर्वाद दिया है। वह इतना धनवान है कि उसके मवेशी और उसका रेवड़ सारे देश में हैं। किन्तु जो कुछ उसके पास है, उस सब कुछ को यदि तू नष्ट कर दे तो मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ कि वह तेरे मुँह पर ही तेरे विरुद्ध बोलने लगेगा।” यहोवा ने शैतान से कहा, “अच्छा, अय्यूब के पास जो कुछ है, उसके साथ, जैसा तू चाहता है कर किन्तु उसके शरीर को चोट न पहुँचाना।” इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया। (अय्यूब 1:6-12)

शैतान ने तुरंत अय्यूब को नष्ट करने के लिए सब कुछ, जिसमें उनके बेटे और बेटियां शामिल थे निर्धारित किया। इस के बाद विनाश के लिए, शैतान ने दुश्मन हमलावरों के उपयोग का सहारा लिया, “सबीन्स ”(अय्यूब 1:15) और “चाल्डेंस” (अय्यूब 1:17), “स्वर्ग से परमेश्वर की अग्नि... ”(अय्यूब 1:16), और "मरुभूमि से एक महान हवा" (अय्यूब 1:19)।

जबकि यह अय्यूब की पुस्तक में स्पष्ट है कि विध्वंसक कौन है, कई पाठक अभी भी अय्यूब के कष्टों से परेशान हैं क्योंकि यह गलत माना गया कि परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब को पीड़ित करने दिया। यह उनके विचार हैं -- क्योंकि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, उसे अय्यूब को शैतान के हमलों से बचाना चाहिए था | हालांकि, प्रासंगिक दांव पर लगा मुद्दा कभी भी परमेश्वर की शक्ति नहीं था , यहां सवाल हमेशा से परमेश्वर के शासन के सिद्धांत के बारे में है और हमेशा रहेगा | -- क्या

परमेश्वर अपने द्वारा बनाए गए मनुष्यों को स्वतंत्रता देने में सुसंगत रहा है या नहीं? जिसका अर्थ है कि यह ना बदलने वाला है और स्थिति बदलने पर भी इसे बदला नहीं जा सकता है|

अय्यूब के मामले में, दांव पर परमेश्वर की प्रतिष्ठा के अलावा कुछ और था - वह हमारा ग्रह है। शैतान हमारी दुनिया को हथियाने और उसके राज्य का निर्माण करने की रणनीति के बारे में सोच रहा था: "प्रभु ने शैतान से पूछा," तुम कहाँ से आए हो? "शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "मैं पृथ्वी पर इधर-उधर भटकता रहा हूं।" (अय्यूब 1:7)।

यदि ऊपर वर्णित बाइबिल के छंदों को ध्यान से और सोच-समझकर पढ़ें तो हम देखेंगे कि शैतान अनिवार्य रूप से भगवान से कह रहा था, “मैं सारी पृथ्वी पर घूम रहा हूं और ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे मेरे कारण के लिए सर्वसम्मत समर्थन प्राप्त है; मैं पृथ्वी पर पूर्ण शासन के अपने अधिकार का दावा करता हूं”। शुक्र है इस नाटक के दौरान, परमेश्वर शैतान से एक कदम आगे ही रहे थे -परमेश्वर अपने भरोसेमंद सेवक को जानता था। अय्यूब बाइबल में दर्ज दूसरे सबसे शातिर शैतानी हमले से पीड़ित होने के बावजूद परमेश्वर के प्रति वफादार रहा। अंत में, परमेश्वर ने अय्यूब की ज़िंदगी को बचाया, और जब उसने अपने दोस्तों के लिए प्रार्थना की तो परमेश्वर ने अय्यूब की कैद को बदल दिया” (अय्यूब 42:10), जो वास्तव में स्वयं अय्यूब की तुलना में अधिक खतरनाक स्थिति में थे - वे परमेश्वर को नहीं जानते थे।

अय्यूब की पुस्तक हमें आज भी परमेश्वर और अंधकार की शक्तियों के बीच जारी आध्यात्मिक लड़ाई के बारे में जानकारी देती है। जब हम कई समझ से बाहर जटिल स्वतंत्र वसीयत को, जिन्हे परमेश्वर स्पष्ट रूप से देखता है, के बारे में कल्पना करने में सक्षम होते हैं तब हम उसके सामने आई चुनौती के परिमाण की सराहना करना शुरू कर देंगे।

हम अपनी दुनिया में एकमात्र बुद्धिमान जीव नहीं हैं। हमारे साथ कई आध्यात्मिक जीव हमारा स्थान साझा कर रहे हैं- वह शैतान और उसके दुष्ट स्वर्गदूत हैं। पृथ्वी पर हमारे व्यक्तिगत स्वार्थ और शैतानी ताकतों के कारण, हमारी पृथ्वी आत्मकेंद्रित स्वतंत्र इच्छाओं के कई टकरावों का मंच है। यह सब प्रतिदिन चलता रहता है। हमारे लिए यह समझना विशेष रूप से कठिन है कि शैतान और उसकी शैतानी सेना कैसे परमेश्वर को रोक सकती है या उसका सामना कर सकती है।

हमारे लिए यह महसूस करना असुविधाजनक हो सकता है कि हमारे ग्रह पर हर चीज़ पर परमेश्वर का पूर्ण नियंत्रण और अधिकार नहीं है। हालाँकि, परमेश्वर की हमारे व्यक्तिगत जीवन को नियंत्रित करने की कोई इच्छा नहीं है, न ही ऐसा करना उसके स्वभाव में है; उन्होंने हमें स्वतंत्र बुद्धिमान जीव बनने के लिए बनाया - कठपुतली नहीं।

अय्यूब की पुस्तक की शुरुआत में, तीन केंद्रीय प्रतिभागियों को देखने के लिए लाया जाता है: परमेश्वर, शैतान और अय्यूब। पुस्तक के अंत में शैतान का नाम नहीं दिया गया है। वह क्यों इस स्मारक परमेश्वर के साथ मुठभेड़ के महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर अनुपस्थित रहा?

अय्यूब का संपूर्ण चालीसवां अध्याय परमेश्वर द्वारा रचे गये एक रहस्यमय प्राणी, जिसे परमेश्वर ने "लिव्यातान" कहा, पर केंद्रित है। लिव्यातान क्या या कौन है? क्या बाइबल इस प्राणी की पहचान करने के लिए हमारी मदद को कोई सुराग प्रदान करती है? “उस समय यहोवा अपनी कड़ी, बड़ी, और दृढ़ तलवार से लिव्यातान नामक वेग और टेढ़े चलनेवाले सर्प को दण्ड देगा, और जो अजगर समुद्र में रहता है उसको भी घात करेगा (यशायाह 27:1)।" कौन “भेदी साँप", " वह टेढ़ा साँप”, और “अजगर जो समुद्र के अंदर है” का संदर्भ लें? “और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना साँप*, जो शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए (प्रकाशितवाक्य 12:9)”। आइए अय्यूब की पुस्तक के इकतालीसवें अध्याय पर इस जंतु के शैतानी विशेषताओं के विवरण को एक आंख के साथ देखें:

> "फिर क्या तू लिव्यातान को बंसी के द्वारा खींच सकता है, या डोरी से उसका जबड़ा दबा सकता है? क्या तू उसकी नाक में नकेल लगा सकता या उसका जबड़ा कील से बेध सकता है? क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाहट करेगा, या तुझ से मीठी बातें बोलेगा? क्या वह तुझ से वाचा बाँधेगा कि वह सदा तेरा दास रहे? क्या तू उससे ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से, या अपनी लड़कियों का जी बहलाने को उसे बाँध रखेगा? क्या मछुए के दल उसे बिकाऊ माल समझेंगे? क्या वह उसे व्यापारियों में बाँट देंगे? क्या तू उसका चमड़ा भाले से, या उसका सिर मछुए के त्रिशूलों से बेध सकता है? तू उस पर अपना हाथ ही धरे, तो लड़ाई को कभी न भूलेगा, और भविष्य में कभी ऐसा न करेगा। देख, उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है; उसके देखने ही से मन कच्चा पड़ जाता है। कोई ऐसा साहसी नहीं, जो लिव्यातान को भड़काए; फिर ऐसा कौन है जो मेरे सामने ठहर सके? किस ने मुझे पहले दिया है, जिसका बदला मुझे देना पड़े? देख, जो कुछ सारी धरती पर है, सब मेरा है। मैं लिव्यातान के अंगों के विषय, और उसके बड़े बल और उसकी बनावट की शोभा के विषय चुप न रहूँगा। उसके ऊपर के पहरावे को कौन उतार सकता है? उसके दाँतों की दोनों पाँतियों के अर्थात् जबड़ों के बीच कौन आएगा? उसके मुख के दोनों किवाड़ कौन खोल सकता है? उसके दाँत चारों ओर से डरावने हैं। उसके छिलकों की रेखाएं घमण्ड का कारण हैं; वे मानो कड़ी छाप से बन्द किए हुए हैं। वे एक-दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं, कि उनमें कुछ वायु भी नहीं पैठ सकती। वे आपस में मिले हुए और ऐसे सटे हुए हैं, कि अलग-अलग नहीं हो सकते। फिर उसके छींकने से उजियाला चमक उठता है, और उसकी आँखें भोर की पलकों के समान हैं। उसके मुँह से जलते हुए पलीते निकलते हैं, और आग की चिंगारियाँ छूटती हैं। उसके नथनों से ऐसा धुआँ निकलता है, जैसा खौलती हुई हाँड़ी और जलते हुए नरकटों से। उसकी साँस से कोयले सुलगते, और उसके मुँह से आग की लौ निकलती है। उसकी गर्दन में सामर्थ्य बनी रहती है, और उसके सामने डर नाचता रहता है। उसके माँस पर माँस चढ़ा हुआ है, और ऐसा आपस में

> सटा हुआ है जो हिल नहीं सकता। उसका हृदय पत्थर सा दृढ़ है, वरन् चक्की के निचले पाट के समान दृढ़ है। जब वह उठने लगता है, तब सामर्थी भी डर जाते हैं, और डर के मारे उनकी सुध-बुध लोप हो जाती है। यदि कोई उस पर तलवार चलाए, तो उससे कुछ न बन पड़ेगा; और न भाले और न बर्छी और न तीर से। वह लोहे को पुआल सा, और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है। वह तीर से भगाया नहीं जाता, गोफन के पत्थर उसके लिये भूसे से ठहरते हैं। लाठियाँ भी भूसे के समान गिनी जाती हैं; वह बर्छी के चलने पर हँसता है। उसके निचले भाग पैने ठीकरे के समान हैं, कीचड़ पर मानो वह हेंगा फेरता है। वह गहरे जल को हण्डे की समान मथता है उसके कारण नील नदी मरहम की हाण्डी के समान होती है। वह अपने पीछे चमकीली लीक छोड़ता जाता है। गहरा जल मानो श्वेत दिखाई देने लगता है। धरती पर उसके तुल्य और कोई नहीं है, जो ऐसा निर्भय बनाया गया है। जो कुछ ऊँचा है, उसे वह ताकता ही रहता है, वह सब घमण्डियों के ऊपर राजा है।" (अय्यूब 41)

यहोवा इस अध्याय में प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करते हुए मनुष्य को एक दुश्मन से, जो इतना शक्तिशाली और सहानुभूति से रहित है, अपने दम पर इस विरोधी से लड़ने के लिए शक्तिहीन होने का वर्णन करता है। परमेश्वर कल्पना करने योग्य सबसे दुर्जेय दुश्मन के साथ एक तीव्र संघर्ष में हैं, फिर भी परमेश्वर इस लड़ाई को हमारी ओर से लड़ने के लिए पूरी तरह से बिना किसी बल का उपयोग किए, किसी भी समय या किसी भी परिस्थिति में, प्रतिबद्ध हैं ।

शैतान ने परमेश्वर को स्वयं के रूप में प्रकट होने के लिए बनाया है: क्रोधी, प्रतिशोधी, अक्षम्य, बलवान, विधिसम्मत, न्यायपूर्ण और सटीक, जबकि उसी समय, वह हमें "एक प्रकाश का दूत के रूप में दिखाई देता है" (2 कुरिन्थियों 11:14), लेकिन परमेश्वर स्पष्ट रूप से देखता है जो हम नहीं देख सकते - धोखेबाज अपने शिल्प में कितना कुशल है।

परमेश्वर के प्रतिपक्षी के इस प्रतीकात्मक वर्णन के साथ इसकी कुछ समझ हासिल कर सकते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक के लिए हमारी दैनिक लड़ाई लड़ता है। परमेश्वर अपने बच्चों को नुकसान से निकालने के लिए हस्तक्षेप करता है जब शैतान अपनी हताशा में अपनी सीमाओं से आगे उन्हें, जो पवित्र आत्मा के लिए उत्तरदायी हैं, रोकें या नष्ट करें जाने के लिए निकल जाता है। इनमें से कुछ हस्तक्षेप हमारे लिए स्पष्ट हैं, जबकि अधिकांश नहीं। नतीजतन, परमेश्वर उस दुख के लिए जिसे हम अपनी दुनिया में देखते हैं अपने आप पर दोषारोपण जारी करेगा। उम्मीद है कि अय्यूब का अनुभव हमें यह महसूस करने में मदद करेगा कि परमेश्वर हर दुर्घटना, हर आपदा, हर बीमारी या हर मौत को रोक नहीं सकता जबकि वह एक ही समय में अपने बनाए गए बुद्धिमान प्राणी की स्वतंत्र इच्छा का सम्मान करते है।

कुछ और है जो परमेश्वर स्पष्ट रूप से देखता है। केवल वह ही आत्म-अस्तित्व है– शैतान नहीं। शैतान एक सृजित प्राणी है जिसने बुराई को चुना और बुराई अपने अस्तित्व के लिए अच्छाई पर निर्भर है। जब ब्रह्मांड के सभी बुद्धिमान प्राणी इस सत्य को समझते हैं, परमेश्वर के विश्वसनीयता के

बारे में रहस्योद्घाटन के संदर्भ में, वह शैतान को, बुराई के प्रवर्तक को आत्म विनाश की अनुमति देगा; इससे अच्छा और क्या हो सकता है?

मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर-उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा। ---- यशायाह 41:10

10

हम बाइबल को गलत क्यों समझते हैं?

बाइबल परमेश्वर की ओर से लिखी गई श्रुतलेख नहीं थी, “पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे” (2 पतरस 1:21)। बाइबल पुरुषों द्वारा अपने स्वयं के शब्द के उपयोग से और संस्कृति, पृष्ठभूमि और प्रत्येक व्यक्तिगत लेखक का व्यक्तित्व के संदर्भ में लिखी गई थी।

बाइबल में अक्सर यह क्यों दिखाई देता है कि परमेश्वर एक विनाशक है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए यह पहले मददगार होगा कि हम प्राचीन बाइबिल भूमि की धार्मिक संस्कृति पर विचार करें। एक बात स्पष्ट है - इस्राएल के लोग, बाइबिल कथा के मुख्य पात्र, मूर्तिपूजा के प्रभाव से घिरे थे। मूर्तिपूजा के लिए चेतावनी देने के बावजूद वे लगातार उनके पड़ोसियों की प्रचलित प्रथाओं से प्रभावित थे। इस्राएलियों की परमेश्वर की समझ प्रचलित संस्कृति से विकृत थी।

परमेश्वर स्वयं को लोगों के सामने प्रकट करना चाहता था। हालाँकि, प्रारंभिक वर्षों के दौरान, यदि परमेश्वर ने इस्राएलियों को उसके चरित्र की पूरी महिमा प्रकट की होती, तो वे उससे और दूर चले जाते। परमेश्वर को पाप से बचाने के लिए भगवान को मनुष्य के स्तर पर उतरना पड़ा। मानवता तक पहुँचने के लिए उन्हें उनसे उनकी पापी मानवीय भाषा और तरीकों में बात करनी पड़ी। उन्हें पाप से बचाने के लिए, वह इस्राएल के लोगों के साथ अपने संचार में गलत समझे जाने को तैयार था।

इसके अलावा, प्राचीन बाइबिल भूमि में, लोगों ने आसुरी प्रभाव के तहत उन देवताओं को बनाया जो हिंसक और आसानी से नाराज हो जाते थे। वे मानते थे कि जिन विपत्तियाँओ से वे गूजर रहे थे, वे इन क्रोधित देवताओं के कारण हैं। नतीजतन, लोगों ने उनके क्रोध को शांत करने के लिए बलिदान दिया और उनके धार्मिक समारोहों में उन्हें नमन किया।

पुराने नियम में, अपेक्षाकृत शैतान के बारे में कम उल्लेख किया गया है, जो वास्तव में हमारी दुनिया में दुख और मौत के लिए दोषी है। अगर शैतान की पहचान लोगों की विपत्तियाँओ के लिए जिम्मेदार होने से होती, उनका ध्यान परमेश्वर के बजाय उस पर केंद्रित हो जाता। इस्राएलियों ने शैतान को प्रकृति की शक्तियों पर प्रभावशाली शक्ति रखने वाला एक और भगवान मान लिया होता। यह उनके नेतृत्व में उन्हें बलिदान करने के लिए होता, और ऐसा करने से वे परमेश्वर के बजाय शैतान की पूजा करते।

परमेश्वर ऐसा होने से रोकने के लिए खुद को न केवल अच्छी चीजों के स्रोत, जिन्हे लोगों ने प्राप्त किया, के रूप में देखे जाने के साथ ही साथ बुरी चीजों के लिए भी अनुमति दी। परमेश्वर लोगों के

बारे में और अपनी प्रतिष्ठा से ज्यादा असली विध्वंसक की पहचान का समय से पहले अनावरण का उन पर प्रभाव के बारे में चिंतित थे। परमेश्वर के इस निस्वार्थ संवेदना के भाव के साथ भी, लोगों ने अभी भी मूर्तिपूजा के माध्यम से राक्षसी संस्थाएं को श्रद्धांजलि दी: “उन्होंने शैतानों को बलिदान दिया, परमेश्वर को नही” (व्यवस्थाविवरण 32:17)।

प्राचीन इस्राएली परमेश्वर के सौम्य और प्यार भरे चरित्र का स्पष्ट रहस्योद्घाटन के लिए तैयार नहीं थे। यदि वह उनके सामने, जैसे वह वास्तव में है - निःस्वार्थ प्रेम, आया होता तो उन्होंने परमेश्वर को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया होता। वे एक ऐसा परमेश्वर चाहते थे जो उनके लिए लड़े और अपने दुश्मनों के खिलाफ हिंसा का उपयोग करें। इस्राएलियों को एक ऐसा परमेश्वर चाहिए था जो खुद उनके जैसा था। बजाय इसके कि सच्चाई को स्वीकार किया जाए कि "परमेश्वर ने अपनी स्वरूप में मनुष्य को बनाया" (उत्पत्ति 1:27), वे अपनी स्वरूप में भगवान को बनाने के लिए दृढ़ संकल्प कर चुके थे। यह हमें समझ देता है (यदि हम इस पर विचार करने को तैयार हैं) कि मानव जाति मुख्य रूप से परमेश्वर के साथ, युगो युगो से आज के दिन तक, कैसे संबंधित है।

11

हम परमेश्वर को गलत क्यों समझते हैं?

जब परमेश्वर हमारे बीच चला, तो वह पहचाना या धार्मिक प्रतिष्ठान द्वारा स्वागत नहीं किया गया था:

जब वे बाहर जा रहे थे, तब, लोग एक गूँगे को जिसमें दुष्टात्मा थी उसके पास लाए। और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा। और भीड़ ने अचम्भा करके कहा, “इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।” परन्तु फरीसियों ने कहा, “यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।” और यीशु सब नगरों और गाँवों में फिरता रहा और उनके आराधनालयों* में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। (मत्ती 9:32-35)

यशायाह के निम्नलिखित शब्द उन लोगों के लिए उपयुक्त हैं जो यीशु पर शैतान के साथ संघ होने का आरोप लगाते हैं: “हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं! हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने लेखे बुद्धिमान हैं!” (यशायाह 5:20-21)

वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना। वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। (यूहन्ना 1:10-11)

यह मार्ग केवल प्राचीन इतिहास के बारे में बात नहीं कर रहा है। भगवान के बारे में अपरिचितता और गलतफहमी आज भी जारी है। हम भगवान को गलत समझते हैं क्योंकि हम गलत तरीके से मान लेते हैं कि वह आत्म-केंद्रित है जैसे हम हैं: परन्तु शारीरिक दुष्ट मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है। (1 कुरिन्थियों 2:14)

मानव जाति में बाहरी धर्म के प्रति आकर्षण है। इसके बजाय हमें परमेश्वर के प्रेम के लिए अपने स्वार्थ का आदान-प्रदान करने की आवश्यकता है। स्वार्थ त्यागने का विचार "प्राकृतिक आदमी" के लिए

बहुत बड़ी धमकी है। बाहरी धर्म ज्यादा सुरक्षित लगता है, लेकिन इस तरह की सुरक्षा एक कपटपूर्ण भ्रम है; बाहरी धर्म का उपयोग अक्सर परमेश्वर से चिपने के लिए किया जाता है।

तब फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, "क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?" उसने उत्तर दिया, "क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिसने उन्हें बनाया, उसने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?' अतः वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।" उन्होंने यीशु से कहा, "फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?" उसने उनसे कहा, "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्नी को छोड़ देने की अनुमति दी, परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था। (मत्ती 19:3-8)

पुराने नियम का अधिकांश भाग परमेश्वर का कठोर लोगों के करीब आने के प्रयासों को दर्शाता है। परमेश्वर को धर्मग्रंथों के लेखांश में गलत समझा जाता है जहाँ उन्होंने लोगों के निराशाजनक के रूप में छोड़ देंने के बजाय उनकी इच्छाशक्ति को समायोजित किया। हम ही हैं जिसके पास करुणा की कमी है - परमेश्वर नहीं। फिर भी हम पुराने नियम में निर्दयी लोगों के साथ परमेश्वर की बातचीत को हमेशा गलत ही पढ़ते हैं। परिणामस्वरूप, हम परमेश्वर पर गुलामी और बहुविवाह, विजय के युद्ध को प्रोत्साहित करना, नरसंहार की आज्ञा देना, और कानून तोड़ने वालों के लिए कठोर दंड देने का आरोप लगाते हैं । हम इन आरोपों को बनाते हैं क्योंकि हम मानवीय कठोरता से संबंधित समस्या की भयावहता को नहीं समझते हैं जिसे परमेश्वर ने प्राचीन इज़राइल के साथ उनकी बातचीत में लगातार सामना किया था।

यीशु ने, पहाड़ पर धर्मोपदेश में, व्यवस्था के नियम को बड़ाया, इसे प्रेम के नियम के आधार पर एक व्यावहारिक अनुप्रयोग दिया:

"तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, कि आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। और यदि कोई तुझ पर मुकद्दमा करके तेरा कुर्ता लेना चाहे, तो उसे अंगरखा भी ले लेने दे। और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा। जो कोई तुझ से माँगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उससे मुँह न मोड़। (मत्ती 5:38-42)

इन शब्दों में, यीशु ने परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के बारे में बताया जो कठोर हृदय वाले लोगों की इच्छा के विपरीत है।

यीशु ने उनसे कहा, “यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकलकर आया हूँ; मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा। तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिए कि मेरा वचन सुन नहीं सकते। तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं; जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है। परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ, इसलिए तुम मेरा विश्वास नहीं करते। तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिए नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।” यह सुन यहूदियों ने उससे कहा, “क्या हम ठीक नहीं कहते, कि तू सामरी है, और तुझ में दुष्टात्मा है?” (यूहन्ना 8:42-48)

यीशु ने धार्मिक नेताओं से कहा, "तुम अपने पिता शैतान से हो।" उनका पिता शैतान था क्योंकि उन्हें शैतान द्वारा परमेश्वर की विकृत तस्वीर विरासत में मिली थी और उन्होंने उस तस्वीर में किसी भी बदलाव का विरोध किया था।

और उसका दोषपत्र, उसके सिर के ऊपर लगाया, कि “यह यहूदियों का राजा यीशु है।” तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाएँ क्रूसों पर चढ़ाए गए। और आने-जानेवाले सिर हिला-हिलाकर उसकी निन्दा करते थे। और यह कहते थे, “तुम जो मंदिर को नष्ट करना चाहते थे, और मंदिर को तीन दिनों में बनाना चाहते थे, अपने आप को बचाओ।! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।” इसी रीति से प्रधान याजक भी शास्त्रियों और प्राचीनों समेत उपहास कर करके कहते थे, “इसने दूसरों को बचाया, और अपने आप को नहीं बचा सकता। यह तो ‘इस्राएल का राजा’ है। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। उसने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इसको चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इसने कहा था, कि ‘मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।’ ” (मत्ती 27:37-43)

क्रूस पर यीशु का मजाक उड़ाने वालों ने उसी आक्षेप का इस्तेमाल किया जिसे शैतान ने मसीह को लुभाने के लिए जंगल में इस्तेमाल किया था: "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो" (**मत्ती** 4: 3)।

और कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस मशकों को फाड़कर बह जाएगा, और मशकें भी नाश हो जाएँगी। परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरना चाहिये। (लूका 5:37-38)

यीशु, इस सादृश्य में, अपने क्रांतिकारी नए शिक्षण की तुलना “नया दाखरस” “पुरानी मशकों” को फाड़कर बह जाने से करता है। शब्द और उदाहरण के द्वारा यीशु ने परमेश्वर के प्रेम की एक स्पष्ट तस्वीर चित्रित की जो धार्मिक शिक्षकों ("पुरानी मशकों") द्वारा आयोजित परमेश्वर ("पुरानी दाखरस")

के विकृत चित्र के विपरीत था जिसका उन्होंने सामना किया। इन दो विपरीत विचारों को एक साथ नहीं मिलाया जा सकता था। ऐसा आज भी है। हमारे विनम्र परमेश्वर की जगह हमारे मन में बनाने के लिए एक हिंसक परमेश्वर की तस्वीर को निकाल देना चाहिए।

12

परमेश्वर कैसे नष्ट करता है?

परमेश्वर कैसे नष्ट करता है इसका एक स्पष्ट उदाहरण 1 इतिहास की पुस्तक में पाया जाता है। इस्राएल का राजा शाऊल ने परमेश्वर की सलाह की अवहेलना करी जिसे नबी सैमुएल के माध्यम से अपने विनाशकारी पाठ्यक्रम से मुड़ने के लिए सूचित किया गया था। शाऊल ने दाऊद को मारने के कई प्रयास किए, जो उसका वफादार नौकर था। वह नोब के पुजारियों को मारने का दोषी भी था, और उसने एक चुड़ैल का परामर्श लिया था। शाऊल पलिश्तियों के साथ युद्ध में घायल हो गया था, और वह घबरा गया था कि अगर वह पकड़ लिया गया तो क्या होगा। अपने हताशा में, "शाऊल ने तलवार ली, और उस पर गिर गया" (1 इतिहास 10:4)

ध्यान दें कि बाइबल शाऊल की मौत के इस दुखद खाते का कैसे समापन करती है:

यों शाऊल उस विश्वासघात के कारण मर गया, जो उसने यहोवा से किया था; क्योंकि उसने यहोवा का वचन टाल दिया था, फिर उसने भूतसिद्धि करने वाली से पूछकर सम्मति ली थी। उसने यहोवा से न पूछा था, इसलिये यहोवा ने उसे मार कर राज्य को यिशै के पुत्र दाऊद को दे दिया। (1 इतिहास 10:13-14)

यह स्पष्ट है कि शाऊल की मृत्यु में हम परमेश्वर को केवल एक ही क्रिया लेते देखते हैं कि वह शाऊल को अपने तरीके से जाने दे और उसके कार्यों के परिणाम को अनुभव करने दे। शाऊल की मौत का कारण आत्महत्या थी, हत्या नहीं, और फिर भी बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने उसे मारा। परमेश्वर ने जो किया, उसका वर्णन यहां इस्तेमाल किये गए शब्दकोश परिभाषा (डेफिनिशन) से निश्चित रूप से अलग है। यह एक अलग उदाहरण नहीं है। अगले अध्याय में, बाइबल के शब्द जैसे क्रोध, कोप, और ईर्ष्या की जांच जाएगी। शास्त्र इन शब्दों का अपने आम उपयोग से पूरी तरह अलग अर्थ देती है जब हम परमेश्वर के तरीकों और विचारों का जिक्र करते है।

"जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच-विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा। क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है"।
---- यशायाह 55:6-9

13

परमेश्वर का गुस्सा क्या है?

जब हम पुराना नियम पढ़ते है तो परमेश्वर के गुस्से का सवाल हम में से कई को हैरान कर देता है। परमेश्वर के क्रोध और कोप के बारे में कई संदर्भ हैं, लेकिन उनका क्रोध क्या है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये, बाइबिल में कुछ उदाहरणों को देखना ज्ञानवर्धक होगा। परमेश्वर के क्रोध का पहला उल्लेख तब किया गया था जब उन्होने मूसा को इस्राएल के बच्चों को मिस्र के बंधन से स्वतंत्रता के लिए नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया। उस समय क्या हालात थे जिन्होने परमेश्वर को अपने क्रोध को प्रकट करने के लिए मजबूर किया?

मूसा ने यहोवा से कहा, “हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा; मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ।” यहोवा ने उससे कहा, “मनुष्य का मुँह किसने बनाया है? और मनुष्य को गूँगा, या बहरा, या देखनेवाला, या अंधा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है? अब जा, मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखाता जाऊँगा।” उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, कृपया तू किसी अन्य व्यक्ति को भेज।” (निर्गमन 4:10-13)

मूसा फिरौन के सामने अकेले जाने से डर रहा था और एक प्रवक्ता का अनुरोध किया। परमेश्वर ने कैसे जवाब दिया?

तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का और उसने कहा, “क्या तेरा भाई लेवीय हारून नहीं है? मुझे तो निश्चय है कि वह बोलने में निपुण है, और वह तुझ से भेंट करने के लिये निकला भी गया है, और तुझे देखकर मन में आनन्दित होगा। (निर्गमन 4:14)

परमेश्वर ने अपने गुस्से को कैसे व्यक्त किया? मूसा को वो देकर जो वे चाहता था। आइए परमेश्वर के क्रोध के संदर्भों में कुछ अन्य बाइबिल के लेखांशो को देखें:

फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी, वह बेहतर भोजन की लालसा करने लगी; और फिर इस्राएली भी रोने और कहने लगे, “हमें माँस खाने को कौन देगा? और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने-अपने डेरे के द्वार पर रोते सुना; और यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का, और मूसा को भी उनका बुड़बुड़ाना बुरा लगा। तब यहोवा की ओर से एक बड़ी आँधी आई,

और वह समुद्र से बटेरें उड़ाके छावनी पर और उसके चारों ओर इतनी ले आई, कि वे इधर-उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊँचे तक छा गए। और लोगों ने उठकर उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटोरते रहे; जिसने कम से कम बटोरा उसने दस होमेर बटोरा; और उन्होंने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया। (गिनती 11:4,10,31-32)

इस घटना में, हम फिर से परमेश्वर के क्रोध का उल्लेख करते हैं। उसने क्या किया? उसने लोगों को वो दिया जो वे चाहते थे।

जब शमूएल बूढ़ा हुआ, तब उसने अपने पुत्रों को इस्राएलियों पर न्यायी ठहराया। उसके जेठे पुत्र का नाम योएल, और दूसरे का नाम अबिय्याह था; ये बेर्शेबा में न्याय करते थे। परन्तु उसके पुत्र उसकी राह पर न चले, अर्थात् लालच में आकर घूस लेते और न्याय बिगाड़ते थे। तब सब इस्राएली वृद्ध लोग इकट्ठे होकर रामाह में शमूएल के पास जाकर उससे कहने लगे, "सुन, तू तो अब बूढ़ा हो गया, और तेरे पुत्र तेरी राह पर नहीं चलते; अब हम पर न्याय करने के लिये सब जातियों की रीति के अनुसार हमारे लिये एक राजा नियुक्त कर दे।" परन्तु जो बात उन्होंने कही, 'हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे,' यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। और यहोवा ने शमूएल से कहा, "वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले; क्योंकि उन्होंने तुझको नहीं* परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूँ। (1 शमूएल 8:1-7)

परमेश्वर ने अपने पैगंबर सैमुअल के माध्यम से लोगों को एक संदेश भेज उस में कई कारण बताए कि उनके लिए एक राजा के अनुरोध को मानना उनके सर्वश्रेष्ठ हित में क्यों नहीं होगा। क्या उन्होंने सैमुअल को सुना?

तो भी उन लोगों ने शमूएल की बात न सुनी; और कहने लगे, "नहीं! हम निश्चय अपने लिये राजा चाहते हैं, जिससे हम भी और सब जातियों के समान हो जाएँ, और हमारा राजा हमारा न्याय करे, और हमारे आगे-आगे चलकर हमारी ओर से युद्ध किया करे।" (1 शमूएल 8:19-20)

परमेश्वर ने लोगों के आग्रह का कैसे जवाब दिया? यहोवा ने शमूएल से कहा, "उनकी बात मानकर उनके लिये राजा ठहरा दे।" हम कैसे जानते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें एक राजा गुस्से में दिया? पैगंबर होशे, इस ऐतिहासिक घटना पर वापस देखते हुए, हमें परमेश्वर का दृष्टिकोण के बारे में बताता है कि लोगों के अनुरोध को स्वीकार करते हुए उनकी क्या भूमिका रही थी:

हे इस्राएल, तेरे विनाश का कारण यह है, कि तू मेरा अर्थात् अपने सहायक का विरोधी है। अब तेरा राजा कहाँ रहा कि तेरे सब नगरों में वह तुझे बचाए? और तेरे न्यायी कहाँ रहे, जिनके विषय में तूने कहा था, “मेरे लिये राजा और हाकिम ठहरा दे?” मैंने क्रोध में आकर तेरे लिये राजा बनाये, और फिर जलजलाहट में आकर उनको हटा भी दिया। (होशे 13:9-11)

ये तीनों शास्त्रार्थ स्पष्ट रूप से यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर का गुस्सा उसे इस्राएलियों को जो वे चाहते थे देने का पर्याय था जब ऐसा करना उनके सर्वश्रेष्ठ हित में नहीं था। यह कम से कम सुझाव देने के लिए पर्याप्त होना चाहिए कि परमेश्वर के क्रोध का बाइबल से पाय जाने वाली परिभाषा (डेफिनिशन), डिक्शनरी में परिभाषित हुई परिभाषा से निश्चित रूप से अलग है। हालाँकि, इसके अलावा भी बहुत कुछ है। जब येशू को क्रोध आया तो क्या हुआ ?

और वह फिर आराधनालय में गया; और वहाँ एक मनुष्य था, जिसका हाथ सूख गया था। और वे उस पर दोष लगाने के लिये उसकी घात में लगे हुए थे, कि देखें, वह सब्त के दिन में उसे चंगा करता है कि नहीं। उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, “बीच में खड़ा हो।” और उनसे कहा, “क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना?” पर वे चुप रहे। और उसने उनके मन की कठोरता से उदास होकर, उनको क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” उसने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा हो गया। तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उसके विरोध में सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें। (मरकुस 3:1-6)

यह एक मुठभेड़ है जो यीशु ने फरीसियों के साथ की थी। उनके कानूनी प्रतिबंध सब्त के दिन चंगा करने के लिए निषिद्ध करते थे। यीशु, उनके दिलों को पढ़ते हुए, “उनके चारो ओर उन्हें गुस्से से देखा।" यीशु को किस तरह का गुस्सा आता था? उनके गुस्से का वर्णित "उनके दिल की कठोरता के लिए दुखी होकर होने से” किया गया है। यीशु को, इन दयनीय धार्मिक नेताओं द्वारा मुरझाए हाथ वाले आदमी के लिए प्यार और सहानुभूति की कमी प्रदर्शित की गई, पर दुःख या गहरी उदासी का अनुभव हो रहा था। हम बाइबल में परमेश्वर के क्रोध और कोप के बारे में और क्या खोज कर सकते हैं?

परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। (रोमियों 1:18)

परमेश्वर के क्रोध का कैसे पता चलता है?

इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। (रोमियों 1:24)

इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; (रोमियों 1:26)

और जब उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें। (रोमियों 1:28)

यहाँ पर परमेश्वर के क्रोध को उन्हें चोडने या उनका त्याग करदेने के रूप में परिभाषित किया है - दूसरे शब्दों में, परमेश्वर लोगों को खुद से अलग होने की स्वतंत्रता दे रहा है। यह विनाश वाला बदला लेने का प्रकोप बिल्कुल नहीं है जिसे हम अक्सर परमेश्वर के खाते में डालते हैं। आये हम पुराने नियम के कुछ और अधिक लेखांशो पर नजर डालते हैं।

और लोगों ने उठकर उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटोरते रहे; जिसने कम से कम बटोरा उसने दस होमेर बटोरा; और उन्होंने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया। माँस उनके मुँह ही में था, और वे उसे खाने न पाए थे कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा, और उसने उनको बहुत बड़ी मार से मारा। (गिनती 11:32-33)

हम यहाँ उस विशे में वापिस जाते हैं जब परमेश्वर ने गुस्से में उन्हें बटेर दिलाए थे। लोगों की लोलुपता से एक स्वाभाविक परिणाम था: "यहोवा ने लोगों को एक बहुत महान महामारी के साथ मारा था"।

यह ध्यान देने योग्य है कि रेगिस्तान के वातावरण में जहां इजरायलियों ने छावनी लगाई थी वहाँ ताजा बटेर मांस के टन लंबे समय तक नहीं रह सकते थे। मांस जल्दी खराब हो जाता जो की मानव खपत के लिये अस्वस्थ होता। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, किस प्रकार की महामारी के परिणाम की संभावना होगी? सही रोगाणु और सही परिस्थितियां में फूड पॉइजनिंग जैसी एक घातक बीमारी है: और उस स्थान का नाम किब्रोतहत्तावा (लालायित की कब्र) पड़ा, क्योंकि जिन लोगों ने माँस की लालसा की थी क्योंकि उन्हें वहीं दफनाया गया था। (गिनती 11:34) "यहोवा का क्रोध" क्या था? क्या यह यथोचित रूप से पालन नहीं करता है कि एक कारण और प्रभाव की घटना में परमेश्वर का प्रकोप उसका प्रतिस्पर्धा अयोग था?

उस समय मेरा कोप इन पर भड़केगा, और मैं भी इन्हें त्याग कर इनसे अपना मुँह छिपा लूँगा, और ये भस्म हो जाएँगे; और बहुत सी विपत्तियाँ और क्लेश इन पर आ पड़ेंगे, यहाँ तक कि ये उस समय कहेंगे, 'क्या ये विपत्तियाँ हम पर इस कारण तो नहीं आ पड़ीं, क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे मध्य में नहीं रहा?' उस समय मैं उन सब बुराइयों के कारण जो ये पराये देवताओं की ओर फिरकर करेंगे निःसन्देह उनसे अपना मुँह छिपा लूँगा। (व्यवस्थाविवरण 31:17-18)

जब परमेश्वर अपना चेहरा छिपाता है, तो इसका क्या मतलब है? 'क्या ये विपत्तियाँ हम पर इस कारण तो नहीं आ पड़ीं, क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे मध्य में नहीं रहा?' यह फिर से वह भाषा है जो परमेश्वर के अविच्छेदन का वर्णन करती है। परमेश्वर ने क्यों कहा कि वह अपना चेहरा छिपाएगा? 'उन सब बुराइयों के कारण जो ये पराये देवताओं की ओर फिरकर करेंगे'। और इसका परिणाम क्या होगा? और ये भस्म हो जाएँगे; और बहुत सी विपत्तियाँ और क्लेश इन पर आ पड़ेंगे।' जब लोगों ने अन्य देवताओं की ओर मुड़ गए, वे सच्चे परमेश्वर से दूर हो गए, और वह उन्हें अपरिहार्य परिणामों से दूर करने में असमर्थ था।

इसलिए इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और बाल नामक देवताओं की उपासना करने लगे; वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को, जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था, त्याग कर पराये देवताओं की उपासना करने लगे, और उन्हें दण्डवत् किया; और यहोवा को रिस दिलाई। वे यहोवा को त्याग कर बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों की उपासना करने लगे। इसलिए यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा, और उसने उनको लुटेरों के हाथ में कर दिया जो उन्हें लूटने लगे; और उसने उनको चारों ओर के शत्रुओं के अधीन कर दिया; और वे फिर अपने शत्रुओं के सामने ठहर न सके।
(न्यायियों 2: 11-14)

यह लेखांश प्रभु से लोगों के निरंतर धर्मत्याग का वर्णन करता है। यहाँ परमेश्वर ने 'उनको लुटेरों के हाथ में कर दिया' और 'उनको चारों ओर के शत्रुओं के अधीन कर दिया'। यह फिर से संकट के लिए एक निष्क्रिय प्रतिक्रिया है। उनके धर्मत्याग के कारण, परमेश्वर इस्राएल के दुश्मनों को उनकी भूमि पर आक्रमण करने से रोकने में असमर्थ था।

क्योंकि यहोवा इस्राएल को ऐसा मारेगा, जैसा जल की धारा से नरकट हिलाया जाता है, और वह उनको इस अच्छी भूमि में से जो उसने उनके पुरखाओं को दी थी उखाड़कर फरात के पार तितर-बितर करेगा; क्योंकि उन्होंने अशेरा नामक मूरतें अपने लिये बनाकर यहोवा को क्रोध दिलाया है। और उन पापों के कारण जो यारोबाम ने किए और इस्राएल से कराए थे, यहोवा इस्राएल को त्याग देगा।" (1 राजाओं 14:15-16)

यहाँ परमेश्वर का क्रोध (और निंदा करना) धर्मत्यागी इज़राइल को त्याग रहा है।

क्योंकि उन्होंने ऊँचे स्थान बनाकर उसको रिस दिलाई, और खुदी हुई मूर्तियों के द्वारा उसमें से जलन उपजाई। परमेश्वर सुनकर कोप से भर गया, और उसने इस्राएल को बिल्कुल तज दिया। उसने शीलो के निवास, अर्थात् उस तम्बू को जो उसने मनुष्यों के बीच खडा किया था, त्याग दिया, और अपनी सामर्थ्य को बँधुवाई में जाने दिया, और अपनी शोभा को द्रोही के वश में कर दिया।

उसने अपनी प्रजा को तलवार से मरवा दिया, और अपने निज भाग के विरुद्ध कोप से भर गया। (भजन संहिता 78:58-62)

यहाँ क्रोध की परिभाषा (डेफिनिशन) में शामिल हैं: त्यागना, कैद में पहुंचाने, और उनका समर्पण करना।

तब यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का, और उसको अपने निज भाग से घृणा आई; तब उसने उनको अन्यजातियों के वश में कर दिया, और उनके बैरियों ने उन पर प्रभुता की। (भजन संहिता 106:40-41)

परमेश्वर के क्रोध का वर्णन यहाँ "उन्हें अन्यजातियों के हाथ में देने" के रूप में किया गया है"।

थोडा क्रोध के आवेग में आकर मैंने पल भर के लिये तुझसे मुँह छिपाया था, परन्तु अब अनन्त करुणा से मैं तुझ पर दया करूँगा, तेरे छुड़ानेवाले यहोवा का यही वचन है। (यशायाह 54:8)

इस लेखांश में, "थोडा क्रोध के आवेग में आना" परमेश्वर का उनका चेहरा "पल भर के लिये" छिपाने के रूप में परिभाषित किया गया है, लेकिन परमेश्वर की दया और हमारे प्रति दया चिरस्थायी है।

और जैसा मैंने तुम्हारे सब भाइयों को अर्थात् सारे एप्रैमियों को अपने सामने से दूर कर दिया है, वैसा ही तुमको भी दूर कर दूँगा। यहोवा की यह वाणी है, क्या वे मुझी को क्रोध दिलाते हैं? क्या वे अपने ही को नहीं जिससे उनके मुँह पर उदासी छाए? अतः प्रभु यहोवा ने यह कहा है, क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या मैदान के वृक्ष, क्या भूमि की उपज, उन सब पर जो इस स्थान में हैं, मेरे कोप की आग भड़कने पर है; वह नित्य जलती रहेगी और कभी न बुझेगी।" (यिर्मयाह 7:15,19-20)

परमेश्वर पूछता है, "क्या वे मुझी को क्रोध दिलाते हैं?.....क्या वे अपने ही को नहीं जिससे उनके मुँह पर उदासी छाए?" लोगों की परेशानिया उनके मूर्ति पूजा के परिणाम के रूप में आई थी, परमेश्वर से सजा के रूप में नहीं।

"अपने बाल मुँड़ाकर फेंक दे; मुण्डे टीलों पर चढ़कर विलाप का गीत गा, क्योंकि यहोवा ने इस समय के निवासियों पर क्रोध किया और उन्हें निकम्मा जानकर त्याग दिया है।' (यिर्मयाह 7:29)

ऐसे और भी बाइबल लेखांश हैं जो समान शब्दावली का उपयोग करते हैं, लेकिन इन पर जो हमने गौर किया है एक सम्मोहक मामला बनाने के लिये पर्याप्त होना चाहिये कि परमेश्वर का क्रोध कभी उसकी तरफ से दंड नही होता। परमेश्वर हमें उसे स्वीकार करने या उसे अस्वीकार करने की स्वतंत्रता देता है। परमेश्वर का क्रोध हमारे गलत विकल्पों का स्वाभाविक परिणाम है, जब वह हमें अपना रास्ता खुद लेने देने में मजबूर होता है। परमेश्वर की भूमिका हमेशा एक निष्क्रिय के रूप में जैसे त्यागना, अपने चेहरे को छुपाना, दे देना, जाने देना, समर्पण होने देना और समान शब्दावली से संदर्भित है।

मूसा के सामने अपनी उद्घोषणा में, परमेश्वर ने क्रोध या कोप की सूची को उनके चरित्र की विशेषता के रूप में नहीं दी: “और यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, “यहोवा, यहोवा, परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप को क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।” (निर्गमन 34:6-7)

इसलिए वे परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, “तुम लोग हमको मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुःखित हैं।” अतः यहोवा ने उन लोगों में तेज विषवाले साँप *भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए। (गिनती 21:5-6)

यह लेखांश हमें सूचित करता है कि उनकी शिकायतों के जवाब में “यहोवा ने उग्र नागों को लोगों के बीच भेजा”। अब तक हमने शास्त्रों से मिले प्रमाण को देखा है कि परमेश्वर की नागों को "भेजे" जाने पर क्या क्रिया है? अन्य बाइबिल के लेखांशो के साथ सद्भाव में हमने जांच की है, परमेश्वर लोगों की विद्रोही निष्ठा के कारण उनकी सुरक्षात्मक हस्तक्षेप से उन्हें स्वतंत्रता देने के लिए मजबूर था ।

सबसे पहले उग्र नागों का वहाँ आना कैसे हुआ? “[यहोवा तेरा परमेश्वर] जिसने तुमे उस बड़े और भयानक जंगल में से ले आया है, जहाँ तेज विषवाले सर्प और बिच्छू हैं, और जलरहित सूखे देश में उसने तेरे लिये चकमक की चट्टान से जल निकाला,” (व्यवस्थाविवरण 8:15)

उग्र साँप कई खतरों के रूप में वहाँ थे जिनसे परमेश्वर ने कठोर रेगिस्तानी वातावरण में चमत्कारिक रूप से इस्राएलियों की रक्षा की। इस घटना का वर्णन जिसमें परमेश्वर ने उग्र नागों को भेजा, केवल समस्या होती अगर इसके बजाय परमेश्वर ने भूखे ध्रुवीय भालू को भेजा होता।

बाइबल में परमेश्वर द्वारा लोगों के खिलाफ सेनाओं का हमला या कुछ आपदा भेजे गए के बारे में कई ज़िकर हैं । इस समझ के साथ, , हम यथोचित रूप से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हर धर्मग्रंथ में जहां परमेश्वर ने कुछ हानिकारक भेजा है, इसका मतलब है कि परमेश्वर कारण और प्रभाव की घटनाओं में परिचालक होए बिना इसे होने से रोकने में असमर्थ था। यह परमेश्वर का उद्देश्य नहीं है, और न ही यह उसकी प्रकृति के भीतर है कि वह मानवीय मामले में नियंत्रण करे।

तब यहोवा को अपने देश के विषय में जलन हुई, और उसने अपनी प्रजा पर तरस खाया। यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों को उत्तर दिया, "सुनो, मैं अन्न और नया दाखमधु और ताजा तेल तुम्हें देने पर हूँ, और तुम उन्हें पाकर तृप्त होंगे; और मैं भविष्य में अन्यजातियों से तुम्हारी नामधराई न होने दूँगा। (जोएल 2:18-19)

तब जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने मुझसे कहा, 'तू पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, मुझे यरूशलेम और सिय्योन के लिये बड़ी जलन हुई है। (जकर्याह 1:14)

क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूँ, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुँवारी के समान मसीह को सौंप दूँ। परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सिधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ। (2 कुरिन्थियों 11:2-3)

परमेश्वर की ईर्ष्या पूरी तरह से निःस्वार्थ है। परमेश्वर दूसरों के लिए ईर्ष्या करता है, कभी खुद के लिए नहीं।

यहोवा का कोप इस्राएलियों पर फिर भड़का, और उसने दाऊद को उनकी हानि के लिये यह कहकर उभारा, "इस्राएल और यहूदा की गिनती ले।" इसलिए राजा ने योआब सेनापति से जो उसके पास था कहा, "तू दान से बेर्शेबा तक रहनेवाले सब इस्राएली गोत्रों में इधर-उधर घूम, और तुम लोग प्रजा की गिनती लो, ताकि मैं जान लूँ कि प्रजा की कितनी गिनती है।" योआब ने राजा से कहा, "प्रजा के लोग कितने भी क्यों न हों, तेरा परमेश्वर यहोवा उनको सौगुणा बढ़ा दे, और मेरा प्रभु राजा इसे अपनी आँखों से देखने भी पाए; परन्तु, हे मेरे प्रभु, हे राजा, यह बात तू क्यों चाहता है?" तो भी राजा की आज्ञा योआब और सेनापतियों पर प्रबल हुई। अतः योआब और सेनापति राजा के सम्मुख से इस्राएली प्रजा की गिनती लेने को निकल गए। (2 शमूएल 24:1-4)

जब दाऊद इजरायल की क्रमांकित ले रहा था तो वह मानव संख्या और सेना को देखकर इज़राइल की रक्षा के लिये गर्व और परमेश्वर में अविश्वास का प्रदर्शन कर रहा था। यह प्रभावी रूप से उनके प्रति परमेश्वर का अहिंसक संरक्षण को बाहर रख उन्हें उनके दुश्मन और अन्य खतरो से असुरक्षित बना

रहा था। यहां तक कि युद्ध-कठोर जोआब को भी राजा के अनुरोध पर इजरायल की संख्या करने में खतरा दिखा और उसके बारे में उससे पूछताछ की।

परमेश्वर ने "दाऊद को उनके खिलाफ किया"। क्या इस कथन को, जेसे इसे पढ़ते है, समझने में कोई समस्या हो सकती है? क्या परमेश्वर ने इजरायल की संख्या के लिए दाऊद के कान में फुसफुसाया था कि वह उनके खिलाफ होने का एक अच्छा बहाना हो सके? आइए इस पद्य को, परमेश्वर के कार्यों के बारे में हमने अब तक जो कुछ भी सीखा है, उसके प्रकाश में देखें।

परमेश्वर विनाश में सक्रिय भूमिका नहीं लेता है, और वह बुराई को नहीं भड़काते है, लेकिन कोई है जो करता है। क्या इस घटना में यह संभव है कि परमेश्वर ने "दाऊद को इजरायल की संख्या करने के लिये उसे ऐसा करने से नहीं रोक के उसे उक्साया था? और क्या यह सुझाव देने के लिये सही नहीं होगा कि यह परमेश्वर नहीं था जिसने दाऊद के कान में कानाफूसी की, लेकिन शैतान था? हम कैसे जान सकते हैं? हम इस घटना के बारे में 1 इतिहास की किताब में पढ़ सकते हैं: "और शैतान ने इस्राएल के विरुद्ध उठकर, दाऊद को उकसाया कि इस्राएलियों की गिनती ले"। (1 इतिहास 21:1)

हमें आश्चर्य हो सकता है कि बाइबल स्पष्टतया से अभी तक क्यों नहीं हैं और कहती हैं कि वास्तव में बाइबल के पृष्ठों भीतर हर मुठभेड़ में क्या हुआ; क्या यह बाइबल अध्ययन को बहुत सरल नहीं बना देगा? हां, ये हो सकता हैं। हालांकि, परमेश्वर के और मानव जाति के बीच संचार समस्या कभी भी परमेश्वर की समझ की कमी के कारण नहीं रही है, लेकिन हमारी वजह से। परमेश्वर, उनकी बुद्धि में हमें उसके बारे में सच्चाई को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का विकल्प देता है। बाइबल इस महत्वपूर्ण सिद्धांत को ध्यान में रखकर लिखी गई थी। जब हमारे पास परमेश्वर के बारे में सच्चाई को समझने का अवसर हो, और हम इसे अस्वीकार करे, अधिक प्रकाश हमें केवल उससे दूर करेगा। बाइबल की अस्पष्ट सतह इस कारण से व्याख्याएं की विरोध करने की अनुमति देती है। हमें, हमारी इच्छा के विरुद्ध, उस पर विश्वास करने के लिए राजी करना परमेश्वर के चरित्र में नहीं है। उसी समय, बाइबल उनके लिए प्रचुर प्रमाण प्रदान करती है जो हमारे विनम्र परमेश्वर को खोजने की तलाश में हैं।

तुम मुझे ढूँढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे। ---- यिर्मयाह 29:13

14

परमेश्वर युद्ध कैसे करता है?

परमेश्वर बुराई के खिलाफ सत्य, प्रेम, दया, और माफी के साथ युद्ध लड़ते हैं।

जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे। (1 यूहन्ना 3: 8)

विद्रोह की शुरुआत से शैतान का काम परमेश्वर पर आरोप लगाने और गलतबयानी करना है। यीशु, परमेश्वर का पुत्र, ने परमेश्वर के खिलाफ आरोपों को झूठ प्रदर्शित करके शैतान के काम को नष्ट कर दिया है।

तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिए कि मेरा वचन सुन नहीं सकते। तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं; जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है। (यूहन्ना 8:43-44)

यीशु ने पुष्टि की कि शैतान का प्राथमिक हथियार उसका झूठ का उपयोग है। यह " परमेश्वर के लिए झूठ बोलना असंभव है" (इब्रानियों 6:18); वह सत्य के साथ शैतान के झूठ का मुकाबला करता है।
परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और माँस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के शासकों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। इसलिए सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहनकर, और पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहनकर; और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। (इफिसियों 6:11-17)

यीशु ने हमारे लिए परमेश्वर के कवच के उपयोग का प्रदर्शन किया: परमेश्वर के बारे में सच्चाई की खुशखबरी (“सत्य से अपनी कमर कसकर”), उसकी वाचा का विश्वासयोग्य होना (“धार्मिकता की झिलम पहनकर”), हमारे स्वर्गीय पिता के साथ सुलह का संदेश ("मेल के सुसमाचार”), परमेश्वर की विश्वसनीयता का आश्वासन ("विश्वास की ढाल"), और उन लोगों के लिये जो शैतान और उसके झूठ के बंधन से मुक्त हुए शाश्वत जीवन का वादा (“उद्धार का टोप”)। हमें भी उसी हथियार को उठाने के

लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिसे यीशु ने इस्तेमाल किया था - परमेश्वर का शब्द ("आत्मा की तलवार")।

हे प्रियों अपना बदला न लेना; परन्तु परमेश्वर को क्रोध का अवसर दो, क्योंकि लिखा है, “बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।” परन्तु “यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।” बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो। (रोमियों 12:19-21)

परमेश्वर का प्रतिशोध क्या है? वह अच्छाई के साथ बुराई पर काबू पाता है, और वह अपने बच्चों को भी ऐसा करने के लिए आमंत्रित करता है। हमारे दुश्मनों के साथ प्रतिशोध के बजाय दया करने की तुलना उनके सिर पर "आग के अंगारों" का ढेर से की जाती है। दुश्मन के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करने से हम बुराई के काबू में आ जाते है। हालाँकि, बुराई पर प्रभावी ढंग से काबू पाने के लिये एक रास्ता है - "अच्छाई के साथ।" यह लड़ाई करने का परमेश्वर का तरीका रहा है।

तब यीशु ने कहा, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहें हैं”। (लूका 23:34)

यीशु के ये शब्द हमारे लाभ के लिए हैं। पिता को माफ करने के लिए किसी अनुनय की जरूरत नहीं। समस्या परमेश्वर के साथ नहीं, लेकिन हमारे साथ हैं। हम सोचते हैं कि परमेश्वर हमारे जैसा है। जब यीशु ये शब्द बोले, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहें हैं”, वह न केवल उन लोगों की ओर से बोल रहा था जिन्होंने उसे लटका दिया था; वह हमारी ओर से भी बोल रहा था। परमेश्वर चाहता है कि हमें पता हो कि वह हमारी स्थिति को समझता है (हम नहीं जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं); वह अब भी हमें बिना शर्त प्यार करता है और हमें बचाने के लिए अथक प्रयास कर रहा है।

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, और दया, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं।

--- गलातियों 5:22-23

15

सदोम और अमोरा

सदोम और अमोरा का विनाश के बारे में ये माना जाता है कि यह परमेश्वर का गुस्से में दुष्ट लोगों पर विनाश और मौत की बारिश का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। अगर हम बाइबल में, जैसे इसे पढ़ते है, वर्णन ले, जो प्रतीत होता है वह निम्नलिखित है: दोनों शहर एक समृद्ध कृषि क्षेत्र और व्यापार क्षेत्र में स्थित हैं, और निवासियों के लिए जीवन अपेक्षाकृत आसान हो जाता है। लोगों के पास फुरसत का समय है और अनगढ़ गतिविधियाँ आम हो जाती हैं। परमेश्वर स्वर्ग से नीचे देखता है और उनकी दुष्टता की सीमा से क्रोधित है। वह कुछ समय के लिए कोई पलटा लेने से परहेज करता है, लेकिन अंत में भ्रष्टता इतना बुरा हो जाता है कि परमेश्वर का धैर्य समाप्त हो जाता है। वह धर्मी लूत और उसके परिवार को सदोम को छोड़ने के लिए चेतावनी भेजता है। फिर, क्रोध के एक शानदार प्रदर्शन में, परमेश्वर स्वर्ग से आग और गन्धक बरसाता है। पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को भयानक मौत मिली। सदोम और अमोरा का सत्यानाश हुआ, और परमेश्वर का प्रतिशोध संतुष्ट हुआ।

अब, इसी घटना पे यह समझ के साथ एक और नज़र डालते हैं कि परमेश्वर विनाश में सक्रिय भूमिका नहीं लेता है। दो शहरों के आत्मसेवा निवासियों की कल्पना लगाएं जो उनकी समृद्धि और सुख का आनंद ले रहे: देख, तेरी बहन सदोम का अधर्म यह था, कि वह अपनी पुत्रियों सहित घमण्ड करती, पेट भर भरके खाती और सुख चैन से रहती थी; और गरीब और जरूरतमंद को न संभालती थी (यहेजकेल 16:49)। लोग इस बात से अनजान हैं कि उनके शहर के नीचे (जो भूगर्भीय रूप से अस्थिर क्षेत्र में बने हैं) विस्फोटक बल निर्माण कर रहे हैं (उत्पत्ति 14:10 देखें)। वे इस बात से भी अनजान हैं कि अदृश्य परमेश्वर, जिसे वे अस्वीकार कर रहे हैं, वह वही परमेश्वर है जिसे अब तक उनकी विपत्ति से रक्षा की। वह दिन अंत में आता है जब परमेश्वर उनकी उससे स्वतंत्रता की इच्छा को स्वीकार करते हैं। उनकी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए, वह अनिच्छा से उन्हें जाने देता है। इसका मतलब है कि उसकी आत्मा उनसे याचना करना बंद कर देती है और वह प्रकृति की जंगली घातक शक्तियों से उनकी रक्षा करना भी छोड़ देता है, जिन्हें उसने रोक रखा था । पृथ्वी की सतह के नीचे दरारें खुल गईं और हजारों फीट ऊंचे हवा में एक विस्फोटक ज्वालामुखी फूट पड़ा। यह ज्वालामुखी विस्फोटक पिघली हुई चट्टानों से बना था जो गंधक के रूप में सदोम और अमोरा पर बरसा और मिनटों में उन्हें नष्ट कर दिया। हालाँकि, उत्पत्ति की पुस्तक के लेखक भविष्यवक्ता मूसा ने केवल (उत्पत्ति 19:24) में निम्नलिखित का उल्लेख किया है। -- तब यहोवा ने स्वर्ग से सदोम और अमोरा पर गन्धक और आग बरसाई।

दो शहरों को नष्ट करने में परमेश्वर का कार्य निवासियों को वास्तविक स्वतंत्रता देना था - जिसमें विनाशकारी परिणामों के साथ चुनाव करने की स्वतंत्रता भी शामिल थी।: "मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात की साक्षी बनाता हूँ, कि मैंने जीवन और मरण, आशीष और श्राप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिए तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें; इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानो, और उससे लिपटे रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घ आयु यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब, अर्थात् तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा।" (व्यवस्थाविवरण 30:19-20)

बीमारियाँ, दुर्घटनाएँ, मृत्यु, युद्ध, प्राकृतिक आपदाएँ आदि अनेक कारणों से होते हैं। अक्सर हम सीधे तौर पर जिम्मेदार होते हैं, कभी-कभी शैतान, और कभी-कभी महान बाढ़ के बाद की ताकत अपराधी होती है। अधिक बार कुछ योगदान कारक संयोजन शामिल होते हैं। क्योंकि हम स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते हैं कि कुछ बुरी घटनाएं क्यों हुईं, हम इसके लिए भगवान को दोषी ठहराते हैं। क्या वह उचित है? क्या यह पर्याप्त है? हमारी दोष को स्थानांतरित करने की प्रवृत्ति लंबे समय से रही है। इस जिम्मेदारी से भागना कब और कहाँ शुरू हुआ? और आदम ने कहा, "जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया।" तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "तूने यह क्या किया है?" स्त्री ने कहा, "सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया (उत्पत्ति 312-13)।"

हे यहोवा, तेरी करुणा स्वर्ग में है, तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँची है। तेरा धर्म ऊँचे पर्वतों के समान है, तेरा न्याय अथाह सागर के समान हैं; हे यहोवा, तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है। हे परमेश्वर, तेरी करुणा कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखो के तले शरण लेते हैं।

--- भजन संहिता 36:5-7

16

बाढ़ के बारे में क्या?

नूह के दिन की बाढ़ के बारे में क्या? यदि परमेश्वर विध्वंसक नहीं है, पृथ्वी पर ऐसा क्या हुआ जो हमारी पृथ्वी पर सबसे बड़ी प्रलय लाने का कारण बना? बाइबल और अन्य जगहों पर हमें और कौन-से सबूत मिलते हैं जो हमें पृथ्वी पर सबसे बड़ी बाढ़ का कारण समझा सकते हैं?

तब यहोवा ने कहा, "मेरा आत्मा मनुष्य में सदा के लिए निवास न करेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है; उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी।" (उत्पत्ति 6:3)

परमेश्वर स्पष्ट रूप से एक समय से आगे देख रहा था जब मानव जाति उससे इतनी दूरी तय कर लेगी कि वह प्रकृति की शक्तियों पर अपने निरंतरता को ढीला करके उन्हें विनाश के रास्ते पर जाने देने के लिए मजबूर किया जाएगा। हमें आश्चर्य हो सकता है कि उसे जाने देने के लिए आखिर किस चीज़ ने प्रेरित किया। क्या परमेश्वर ने ऐसा करने के लिए एक परिकलित निर्णय लिया था, या कोई अन्य कारक शामिल था?

कल्पना कीजिए कि आपका एक पड़ोसी है जिसे बहुत सारी व्यक्तिगत समस्याएं हैं। जैसे - उसे आर्थिक समस्या है, और उसे कई स्वास्थ्य समस्याएं हैं, और वह अपने घर से कुछ मीटर से अधिक चलने में असमर्थ है। इसके अलावा उनके पास कार तक नहीं है, जिससे उन्हें यात्रा करना और अपनी जरूरतों को पूरा करना मुश्किल हो जाता है।

एक दिन, उसके साथ बातचीत में, आप उसकी परिवहन समस्या के बारे में सीखते हैं और उसे किराने की दुकान और अन्य स्थानों पर ले जाने की पेशकश करते हैं। अगले कुछ महीनों में, आप उसे डॉक्टर की नियुक्ति, फार्मेसी और सुपरमार्केट की सवारी देते हैं। यह प्रणाली अच्छी तरह से काम कर रही है, और आप उसकी मदद करके खुश हैं।

फिर एक दिन वही पड़ोसी उत्तेजित मन से आपके घर के दरवाजे पर आता है और आपको उसे शहर के बाहर एक बैंक में ले जाने के लिए कहता है। इस बातचीत के दौरान आप देखते हैं कि उसके पास एक बैग, काला स्की मास्क और बंदूक है। तो आप इस स्थिति में क्या करेंगे ? क्या आप अपनी कार की चाबियां पकड़ेंगे और खुशी-खुशी दरवाजे से बाहर जाकर अपने दोस्त को उसकी मंजिल तक पहुंचाएंगे ?

हम सभी के पास ऐसी हदे हैं जिन्हें हम पार नहीं करना चाहते। ये पंक्तियाँ निष्कर्ष, नैतिक और व्यक्तिगत सीमा के मुद्दों से संबंधित है। क्या यह मानने के लिए उचित नहीं है कि परमेश्वर के पास भी ऐसी रेखाएँ हैं जिन्हें उसने पार नहीं किया या नहीं कर सकता है?

यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। उस समय पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी। और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपनी-अपनी चाल-चलन बिगाड़ ली थी। तब परमेश्वर ने नूह से कहा, “सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिए मैं उनको पृथ्वी समेत नाश कर डालूँगा। (उत्पत्ति 6:5,11-13)

बाढ़ से ठीक पहले हमारी दुनिया कैसी थी? परमेश्वर ने नूह को बताया, “क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है” (उत्पत्ति 6:13,)। मानव जाति के हिंसा के कारण, पृथ्वी ही हिंसा का भंडार बन गई। असाधारण रूप से हिंसक ताकतों को जल्द ही आने वाली तबाही में फैलाया गया। मानव समाज निष्कर्ष पतन में था: “और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब जीव ने पृथ्वी पर अपनी-अपनी चाल-चलन बिगाड़ ली थी”।

बाढ़ से पहले के अंधेरे समय में परमेश्वर के कितने वफादार अनुयायी थे ? बाइबल में अकेले नूह का उल्लेख है। इस दुःखद स्थिति को कोन लाया? मानव जाति के विचार "लगातार केवल बुराई के" थे। बाइबल बुराई को कैसे परिभाषित करती है? जब आदम और हव्वा ने "अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष" का फल खाया (उत्पत्ति 2:17), उनका परमेश्वर की अच्छाई के बारे में मन का परिवर्तन पूरी तरह से परिभाषित करता है कि बुराई क्या है। हमारे पहले माता-पिता की हमारे विनम्र परमेश्वर की विकृत तस्वीर वो है जो दुनिया को विरासत में मिला है। महा बाढ़ से पहले के हिंसक निवासियों की दुनिया ये कल्पना करती थी कि परमेश्वर ने उनकी हिंसा को माफ़ किया। परमेश्वर की क्या प्रतिक्रिया थी? "और वह मन में अति खेदित हुआ” (उत्पत्ति 6:6) ।

मानव जाति ने परमेश्वर को उस रेखा तक धकेल दिया था जो वह खुद हिंसा में एक अनैच्छिक प्रतिभागी बनने के बिना पार नहीं कर सकता था। परमेश्वर को प्राकृतिक दुनिया पर अपनी पकड़ ढीली करने के लिए मजबूर किया गया था। जब 120 साल की अवधि समाप्त हो गई थी, और यात्री जहाज़ में सुरक्षित थे, बारिश शुरू हो गई, मूसलाधार वर्षा चालीस दिनों और चालीस रातों के लिए बरसाते हुए। इस विशाल जलप्रलय को क्या उकसाया किया? हमें इसमें महत्वपूर्ण सुराग उत्पत्ति के पहले अध्याय में मिलता हैं:

तब परमेश्वर ने कहा, “जल को दो भागों में अलग करने के लिए वायुमण्डल हो जाए।” इसलिए परमेश्वर ने वायुमण्डल बनाया और जल को अलग किया। कुछ जल वायुमण्डल के ऊपर था और कुछ

वायुमण्डल के नीचे। परमेश्वर ने वायुमण्डल को “आकाश” कहा! तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह दूसरा दिन था। (उत्पत्ति 1:6-8)

वायुमण्डल या अन्तर क्या है? वायुमण्डल का अर्थ है एक विस्तार, अतिजोरी, या एक गुंबद। गुंबद पृथ्वी पर एक आवरण को संदर्भित करता है स्वर्ग या वातावरण में निलंबित या स्थिर। बाइबल का यह पद हमें बताता है कि परमेश्वर ने पृथ्वी पर पानी को गुंबद के ऊपर के पानी से अलग करने के लिए एक गुंबद बनाया।

पूरी पृथ्वी वायुमंडलीय जल वाष्प के विशाल आवरण से घिरी हुई थी, एक विशाल ग्रीनहाउस की तरह। यह व्यवस्था हमारी पृथ्वी को उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक एक हल्की उष्णकटिबंधीय जलवायु देती थी।

ध्रुवीय क्षेत्रों में पाये गए गर्म जलवायु वाले पौधों और जानवरों के जीवाश्म ऐसा साक्ष्य देते हैं जो कभी हमारे ग्रह पर इस तरह का जलवायु मौजूद था। बाइबल भी उन प्राचीन दिनो में पृथ्वी की जलवायु के बारे में महत्वपूर्ण सुराग देती है:

आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया। तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था, और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य भी नहीं था। लेकिन कुहरा पृथ्वी से उठता था जिससे सारी भूमि सिंच जाती थी। (उत्पत्ति 2:4-6)

ये छंद एक दुनिया को जिससे हम आज परिचित हैं उससे बहुत अलग सुझाव देते हैं। “क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था.... लेकिन कुहरा पृथ्वी से उठता था जिससे सारी भूमि सिंच जाती थी”। पृथ्वी पर एक नम फिर भी गर्म और असाधारण जलवायु था, तापमान में कोई अचानक परिवर्तन के साथ नहीं। इस तापमान के साथ भी, कोई गरज या बवंडर नहीं था, या तूफान, या ओले या बर्फ, और बारिश भी नहीं होती। आज की तुलना में यह भी संभावना है कि पृथ्वी की सतह कहीं अधिक थी स्तर, जिसमें कोई विशाल पहाड़ या गहरी समुद्री घाटियाँ नहीं थी। इसके अलावा, पृथ्वी की सतह का बहुत कम हिस्सा पानी से ढका था ।

क्या था जिसने वातावरण में सभी पानी को निलंबित कर दिया, और वह कौन सा तंत्र था जिसने जलप्रलय को शुरू करने के लिए उकसाया था? हम साधारण अवलोकन से जानते हैं कि गर्मी पानी के उदय का कारण बनती है। केतली में गर्म किया गया पानी वाष्पित होने पर केतली से बाहर निकल जाता है। हमारे ग्रह पर पानी की निकायों हर दिन पानी के अणुओं की भारी मात्रा देती है। जितनी अधिक गर्मी को लागू किया जाता है, उतनी तेजी से वे बहार निकलते हैं। अपेक्षाकृत गर्म गर्मी के

दिन की तुलना में सर्दियों में जमी हुई झील की सतह से केवल कुछ ही पानी के अणु वाष्पित हो जाते हैं।

क्या होता अगर महाप्रलय से पहले अधिक ऊष्मा ऊर्जा उपलब्ध होती; क्या इससे वातावरण में अधिक पानी वाष्पित नहीं होता? हमारी पृथ्वी अपनी लगभग सारी ऊष्मा ऊर्जा हमारे सूर्य से प्राप्त करती है। इसके बिना, जब सतह का तापमान परम शून्य पर पहुंच जाता, तो हमारी पृथ्वी बर्फ से भर जाती।।

जब परमेश्वर ने हमारी दुनिया बनाई, तो उसने एक आश्चर्यजनक सटीक गर्मी-ऊर्जा प्रणाली का परिचालन किया जो पानी को भारी मात्रा में वायुमंडल में निलंबित करने में सक्षम था। सूरज इस प्रणाली के संचालन में एक महत्वपूर्ण तंत्र था । यह भी मानना उचित होगा कि बाढ़ से पहले का सूर्य आज की तुलना में अधिक गर्मी देता होंगा । अगर यह सच है, तो यह विश्वास करने के लिए भी उचित है कि जब परमेश्वर को प्राकृतिक दुनिया पर अपनी पकड़ ढीली करने के लिए मजबूर किया गया था तो सूर्य की ऊर्जा के उत्पादन में भी प्रभाव पड़ा होंगा।

वातावरण में नाजुक संतुलन बाधित हो गया, “जब नूह की आयु के छः सौवें वर्ष के दूसरे महीने का सत्रहवाँ दिन आया; उसी दिन बड़े गहरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए। और वर्षा चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर पृथ्वी पर होती रही” (उत्पत्ति 7:11-12)। इतिहास की पहली वर्षा गिरनी शुरू हुई, अंत में हजारों घन मील पानी नीचे पृथ्वी पर गिरने लगा।

भूवैज्ञानिक अस्थिरता वायुमंडलीय अस्थिरता के साथ मेल खाते हुए भूमिगत जलाशय में पानी का दबाव बढ़ाता गया: “उसी दिन बड़े गहरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए” (उत्पत्ति 7:11)। इन फव्वारों ने वर्षा जल में अधिक पानी की आपूर्ति की।

जहाज में केवल आठ लोग ही बचे थे: नूह और उसके परिवार। इस विशाल जहाज पर बड़ी संख्या में जानवरों की प्रजातियां भी थीं। उन्हें एक बार फिर से पृथ्वी को आबाद करने के उद्देश्य से संरक्षित किया गया था।

जहाज के जीवाश्म को पूर्वी तुर्की में जहाज की साइट को समर्पित राष्ट्रीय उद्यान में संरक्षित रखा गया हैं जो की डोगुबयजिट के छोटे शहर के पास है। यह असाधारण पुरातात्विक खोज, अरारोट के पहाड़ों में, एक मजबूत सबूत है कि महान बाढ़ का बाइबिल में वर्णन केवल एक कल्पित कहानी नहीं, लेकिन विश्वव्यापी प्राकृतिक आपदा के लिए विश्वसनीय इतिहास है:

और एक सौ पचास दिन के पश्चात् जल पृथ्वी पर से लगातार घटने लगा। सातवें महीने के सत्रहवें दिन को, जहाज अरारात नामक पहाड़ पर टिक गया।

--- उत्पत्ति 8:3-4

17

क्रूस की गवाही

पुराने नियम में परमेश्वर के कार्यों की एक सही समझ के द्वारा, हमें आश्वासन दिया जाता है कि वह नष्ट नहीं करता - परिस्थितियों की परवाह किए बिना। हालांकि, सबसे सम्मोहक सबूत नए नियम में पाया जाता है कि परमेश्वर नष्ट करने के लिए पापी के पास नहीं आते हैं।

बाइबिल के छात्रों के बीच यह धारणा सार्वभौमिक है कि यीशु ने हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान दी, हालांकि अलग-अलग विचार धराये हैं कि यीशु की मृत्यु हमें कैसे बचाता है। फिर भी, सब विश्वास करते है कि जब यीशु क्रूस पर मरा, तो उसने हमारी ओर से वो अनुभव किया जो हमारी किस्मत में उसके आत्म-बलिदान के हस्तक्षेप के बिना अनुभव करना था।

अगर यह सच है, तो हम उम्मीद करेंगे कि यीशु की मृत्यु ठीक उसी तरह हुई जिस तरह हमें मरना होगा इस संबंध में जिस में परमेश्वर मृत्यु लाने के लिए "करता है"। अगर हम मानते हैं कि यह परमेश्वर है जो पापी का विनाश करता है, तो हम यह भी उम्मीद करेंगे कि परमेश्वर पिता यीशु के पास उसे मारने के लिए आए। क्या हम बाइबल में यही देखते हैं? मत्ती का सुसमाचार मसीह के क्रूस का एक विस्तृत विवरण देता है। यीशु की मृत्यु से ठीक पहले के अंतिम शब्द क्या थे? “एली, एली, लमा शबक्तनी?” अर्थात् “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” (मत्ती 27:46)

यह पद दिखाता है कि यीशु की मृत्यु कैसे हुई। परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र को वह अनुभव करने की अनुमति दी जो प्रत्येक व्यक्ति जो उसके प्रेम को अस्वीकार करता है, अंततः अनुभव करेगा। वे परमेश्वर (जीवन देने वाले) से अलग होने का अनुभव करेंगे। परमेश्वर पिता ने यीशु को नहीं मारा - हमारे पापों ने उसे मार डाला। "पाप की मजदूरी मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। परमेश्वर की किसी भी सहायता के बिना पाप पूरी तरह से मृत्यु स्वयं को लाने में सक्षम है। बिना किसी अपवाद के, सारा जीवन ईश्वर की ओर से है । सभी मृत्यु बिना किसी अपवाद के पाप का परिणाम है। यह कल्पना करना कि परमेश्वर मृत्यु का स्रोत है *अतार्किक है*– बिना किसी अपवाद के।

इस छोटी किताब में हर विनाश और पीड़ा के कारण को, जिस के लिए परमेश्वर को जिम्मेदार माना जाता हैं, जांच करना संभव नहीं है। हालाँकि, जिन लेखांशो की जाँच हमने की है, वे बाइबल में मृत्यु और आपदाओं में परमेश्वर की भूमिका की सही समझ होने की कुंजी हैं। बाइबल की व्याख्या बाइबल करती है। जब शास्त्र एक विशेष लेखांश में परमेश्वर के कार्यों को स्पष्ट करने के लिए पर्दा वापस खींचता है, हम अन्य लेखांशो को जो स्पष्ट नहीं हैं समझने के लिए उसे एक कुंजी के रूप में उपयोग

कर सकते हैं (जब दो बाइबिल लेखांश एक दूसरे से विरोधाभास करते लगते हैं)। इसके अलावा, परमेश्वर के अपने बारे में शब्द विशेष विचार के योग्य हैं, उदाहरण के लिए,:“क्योंकि मैं यहोवा हूँ, मैं बदलता नहीं;” (मलाकी 3:6)। अंत में, परमेश्वर के बारे में सच्चाई, जिसे यीशु ने सिखाया और प्रदर्शित किया, पूरी बाइबल को उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक नेविगेट करने के लिए एक सटीक रोडमैप है।

और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डालकर, सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।

--- इफिसियों 3:17-19

18

परमेश्वर एक अत्याचारी शासक नहीं

यह उन सभी के लिए अद्भुत समाचार है जो अनन्त जलते हुए नरक के सिद्धांत के संपर्क में हैं। यह सिद्धांत बाइबल के गहन अध्ययन द्वारा समर्थित नहीं है। शास्त्र मृत्यु को अचेतन अवस्था के रूप में वर्णित करता है। यह एक अस्थायी नींद है जो कि पुनरुत्थान तक ही रहेगी। उस समय के उपरांत, वे सभी जिन्होंने परमेश्वर के साथ सामंजस्य का विरोध किया है, प्राकृतिक परिणाम के रूप में अनन्त अस्तित्वहीनता को काटेगे।

बाइबल में एक हमेशा जलने वाली जगह के लिए समर्थन पाने के लिए, हमें शाब्दिक रूप से ऐसे शब्दों का उपयोग करना होगा जिन्हें प्रतीकात्मक माना जाता है। अग्नि शब्द का शाब्दिक या प्रतीकात्मक अर्थ हो सकता है। दानिय्येल की पुस्तक में, जब नबूकदनेस्सर ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को जलने वाली उग्र भट्ठी में फेंक दिया था, यह स्पष्ट रूप से एक शाब्दिक आग थी जो उन्होंने अनुभव की थी। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने, जिसने पानी से बपतिस्मा दिया था, कहा मसीह पवित्र आत्मा के साथ और आग के साथ बपतिस्मा देगा, वह स्पष्ट रूप से शाब्दिक आग का जिक्र नहीं, लेकिन लाक्षणिक रूप से आग शब्द का उपयोग कर रहा था।

“क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है,” और "परमेश्वर प्रेम है" (इब्रानियों 12:29, 1 यूहन्ना 4:16)। क्या परमेश्वर के बारे में ये दो निश्चित बयान संघर्ष में हैं? अगर हम आग को शाब्दिक अग्नि मानते हैं तो ही। आग एक रासायनिक प्रतिक्रिया है। क्या परमेश्वर एक रासायनिक प्रतिक्रिया है? यदि हम परमेश्वर के प्यार का प्रभाव एक व्यक्ति पर समझते हैं तो यह बयान पूर्ण सामंजस्य में हैं। परमेश्वर के प्रेम में स्वार्थ भस्म हो जाता है। स्वार्थ वास्तविक प्रेम के विपरीत है। यदि हम परमेश्वर के प्यार को स्वीकार करने के लिए तैयार है, वही प्यार हमारे उपभोग में आके हमारे दिलों में घातक स्वार्थ को भस्म करेगा। यह एक जीवनदान का अनुभव है।

यदि हम अपने स्वार्थ का त्याग न करके परमेश्वर के प्रेम का विरोध करते हैं, तो परमेश्वर का वही प्रेम दुख का कारण होगा। हम इससे दूर जाने और यहां तक कि भागने या परमेश्वर से छिपने का प्रयास करेंगे। यही आदम और हव्वा का अनुभव भी था जब उन्होने परमेश्वर के बारे में सर्प के झूठ पर विश्वास किया। इस तरह हम समझ सकते हैं कि परमेश्वर का प्रेम भस्म करने वाली अग्नि है।

अमीर आदमी और लाजर के बारे में यीशु का दृष्टांत कई बार पीड़ा के शाब्दिक स्थान के सिद्धांत का समर्थन करने के लिए उपयोग किया जाता है:

“एक धनवान मनुष्य था जो बैंगनी कपड़े और मलमल पहनता और प्रति-दिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। और लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन् कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया। और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया, और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाई, और दूर से अब्राहम की गोद में लाज़र को देखा। और उसने पुकारकर कहा, ‘हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।’ परन्तु अब्राहम ने कहा, ‘हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवनकाल में अच्छी वस्तुएँ पा चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएँ परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। ‘और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है कि जो यहाँ से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सके, और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।’ उसने कहा, ‘तो हे पिता, मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; वह उनके सामने इन बातों की चेतावनी दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।’ अब्राहम ने उससे कहा, ‘उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें।’ उसने कहा, ‘नहीं, हे पिता अब्राहम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।’ उसने उससे कहा, ‘जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी उठे तो भी उसकी नहीं मानेंगे’।” (लूका 16:19-31)

यीशु ने इस दृष्टांत का वर्णन एक व्यक्ति पर स्वार्थ और उदासीनता का प्रभाव दरशाने के लिए किया। यीशु आत्म-धार्मिक फरीसियों को संबोधित कर रहे थे, और उन्होंने अपने दृष्टान्त को मरणोत्तर के बाद का जीवन के बारे में आमतौर पर आयोजित गलतफहमी के आसपास लपेटा।

यहूदियों ने धन को परमेश्वर के आशीर्वाद के साथ जोड़ा। उनके दिमाग में एक गरीब व्यक्ति, विशेष रूप से वो व्यक्ति जो कोई शारीरिक कष्ट में था, परमेश्वर द्वारा शापित किया गया था; ऐसा माना जाता था कि किसी आध्यात्मिक कमी या पाप के कारण व्यक्ति को जीवन में वह मिलता है जिसके वह योग्य होता है । दूसरी ओर, अमीर व्यक्ति को परमेश्वर के विशेष पक्ष का आश्वासन था। एक व्यक्ति का धन या स्थिति, फरीसियों के सोचने के तरीके से, परमेश्वर के सामने सही खड़ा होने का उनके अधिकार का एक पैमाना था। यीशु ने उन्हें यह दृष्टांत देके उनके इस संकीर्ण और क्रूर परिप्रेक्ष्य के भ्रम को बेनकाब किया।

पहले हम कुछ कहानी विवरण देखेंगे। उसकी मृत्यु के बाद, भिखारी लाजर खुद को "अब्राहम की गोद” में आराम की स्थित में पाता है। अमीर आदमी भी मर जाता है और नरक में पीड़ा झेलते हुए समाप्त

होता है; वह ऊपर देखता है और अब्राहम और लाजर को कुछ दूरी पर पाता है। अमीर आदमी और "पिता अब्राहम" के बीच एक बातचीत होती है।

अब कुछ विचारणीय प्रश्न पूछकर इस कहानी को ध्यान से देखें:

- अब्राहम और लाजर कहानी में कहाँ स्थित हैं?
- अगर अब्राहम और लाजर स्वर्ग या जन्न्त में हैं, तो यह कैसे संभव है कि अब्राहम अमीर आदमी, जो नरक में है, के साथ बातचीत कर सकता है, और अमीर आदमी को उन्हें देखने के लिए यह कैसे संभव है?
- अगर अब्राहम और लाजर नरक में हैं, तो वे वहाँ क्या कर रहे हैं?
- यदि अब्राहम और लाजर न तो स्वर्ग में हैं और न ही नरक में, तो वे कहां हैं?
- जीभ पर पानी की कुछ बूंदों से ज्वलंत नरक में तड़पते एक व्यक्ति को कितनी राहत मिलेगी?
- क्या लाजर अमीर आदमी को नरक में तड़पते हुए देख और उसकी दलीलों को सुन सकता है?
- अब्राहम की गोद में लाज़र को कैसे आराम दिया जा रहा है?
- क्या लाजर ने अमीर आदमी की पीड़ा या उसके कारण के बारे में अपनी स्पष्ट जागरूकता के बावजूद आराम किया है?
- अब जब उनके हालात उलट हैं तो क्या लाजर को अमीर आदमी के प्रति संवेदनाहीन उदासीनता को बुलावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है?
- दो स्थानों के बीच यात्रा को रोकने वाली "महान खाड़ी" कितनी विस्तृत है?
- नरक और अब्राहम और लाजर के स्थान के बीच संचार को रोकने के लिए इस विशाल खाड़ी को कितना चौड़ा करना होगा
- उन लोगों द्वारा जो खाड़ी के आरामदायक पक्ष पर स्थित हैं, उन लोगों की नरक की पीड़ा के बारे में जागरूकता को रोकने के लिए इस विशाल खाड़ी को कितना चौड़ा करना होगा? तीन सौ गज? तीन सौ मील? क्या ब्रह्मांड पर्याप्त चौड़ा होगा?
- क्या यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि क्योंकि यीशु ने नरक के संदर्भ का उपयोग अमीर आदमी और लाजर के दृष्टांत में किया था तो वह उस अनंत काल तक जलने वाले नरक के सिद्धांत को समर्थन दे रहा था?

क्या यह निष्कर्ष निकालना अधिक उचित नहीं लगता कि यीशु ने अनंत काल तक जलने वाले नरक का मूल सिद्घांत अपने दृष्टांत में इस राक्षसी सिद्धांत को समर्थन देने के बजाय उसे दूर करने के लिए लाया? यीशु सिखा रहे थे कि अगर ब्रम्हांड में कहीं भी एक शाब्दिक नरक था तो उनके लिए जो अनंत काल तक जीवित रहेंगे पूर्ण शांति और वास्तविक खुशी असंभव होती ।

यह सिद्धांत कि अनंत काल तक जलने वाला नरक है, शैतान का एक झूठ है जो हमारे विनम्र, दयालु, क्षमाशील और प्रेम करने वाले परमेश्वर को काल्पनीक सबसे बुरा तानाशाह के रूप में रंगता है और हमें हमारे स्वर्गीय पिता से दूर करने के लिए परिकलित की जाती है। अनंत काल तक जलने वाला नरक कभी नहीं होगा। बाइबल इस के बजाय आने वाले दिन के बारे में बताती है जब सभी दुख समाप्त हो जाएंगे - हमेशा के लिए:

फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, “देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा। और वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।” (प्रकाशितवाक्य 21:3-4)

कई अक्सर आश्चर्य करते है कि हम किस रूप में अनंत काल तक जीवित रहेंगे। क्या हमारे पास मानव शरीर होगा जैसे अभी है, या हम शरीरहीन अस्तित्व में जीवित रहेंगे? और, हमारी आत्मा क्या है?

तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया। (उत्पत्ति 2:7)

इसलिए जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा। (यहेजकेल 18:4)

हमारे जीवन के लिए "जीवन की सांस" या आत्मा की आवश्यकता होती है, जो परमेश्वर से है। हमारे पास जीवित आत्माएँ नहीं हैं। हम में से हर एक जीवित आत्मा है। यह विश्वास कि हमारे पास वियोज्य अमर आत्माएँ है, को बाइबल का समर्थन नहीं है। मसीह के दूसरे आगमन पर हमारे अपूर्ण शरीररो को “एक आँख की जगमगाहट में” (1 कुरिन्थियों 15:52) पूर्णता के लिए बदल दिया जाएगा।

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है। (रोमियों 6:23)

परमेश्वर के वचन में कहीं भी मृत्यु को मौत के अलावा कुछ भी वर्णित नहीं किया गया है। सभी शास्त्र, ठीक से समझे जाने पर, पुष्टि करते हैं कि केवल एक असहमति की आवाज के साथ ही पाप के परिणामस्वरूप मृत्यु होती है: तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे" (उत्पत्ति 3:4)।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। **(**यूहन्ना 3:16)

नाश शब्द का अर्थ है, किसी अस्तित्वहीनता में आना। यह दुख की स्थिति में कहीं और मौजूद होने का मतलब नहीं है।

उसने (यीशु) ये बातें कहीं, और इसके बाद उनसे कहने लगा, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।" तब चेलों ने उससे कहा, "हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।" यीशु ने तो उसकी मृत्यु के विषय में कहा था : परन्तु वे समझे कि उसने नींद से सो जाने के विषय में कहा। तब यीशु ने उनसे साफ कह दिया, "लाज़र मर गया है"। (यूहन्ना 11:11-14)

यीशु ने मौत की तुलना सोने से की क्योंकि परमेश्वर मरे हुओं में से एक व्यक्ति को जीवित करने में सक्षम है। जब यीशु ने लाजर को कब्र में चार दिनों के बाद वापस जीवित उठाया, लाजर को स्वर्ग से वापस नहीं बुलाया गया था। वह अचेत अवस्था से जाग उठा-मौत।

उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएँ नाश हो जाएँगी। **(**भजन संहिता 146:4)

मृत्यु के समय विचार कहीं और नहीं चलते हैं।

क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा? **(**भजन संहिता 6:5)

क्योंकि जीविते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। (सभोपदेशक 9:5)

जब हम मर जाते है उस समय सभी संज्ञानात्मक कार्य समाप्त हो जाते हैं, समय बीतने के किसी भी जागरूकता सहित। पुनरुत्थान का क्षण हमारी आखरी साँसो के तुरंत बाद आएगा।

क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। **(**1 थिस्सलुनीकियों 4:16)

यह पुनरुत्थान मसीह के दूसरे आगमन पर होगा।

“देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। (प्रकाशितवाक्य 22:12)

जब तक यीशु दूसरी बार वापस नहीं आएंगे, तब तक हम अपना अनन्त इनाम नहीं पाएँगे।

जो परमधन्य और एकमात्र अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है; और अमरता केवल उसी की है। (1 तीमुथियुस 6:15-16)

अकेले परमेश्वर अमर हैं। हम नहीं हे।

देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: कि हम सब तो नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे। क्योंकि अवश्य है, कि वह नाशवान देह अविनाश को पहन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहन ले। और जब यह नाशवान अविनाश को पहन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, “जय ने मृत्यु को निगल लिया”। (1 कुरिन्थियों 15:51-54)

हममें और अपने आप में अमरता नहीं है। अमरता परमेश्वर के जीवित संबंध से ही संभव है: "इस नश्वर को अमरता पर रखना होगा।" पॉल भी घोषणा करता है, "हम सभी सोएंगे नहीं।" जो जीवित हैं, मसीह में, दूसरे आगमन पर कभी मृत्यु का अनुभव नहीं करेगा।

तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा रहेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुआई करेगा। गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल के समान भूसा खाया करेगा। दूध-पीता बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का साँप के बिल में हाथ डालेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है। (यशायाह 11:6-9)

नई बनी पृथ्वी पर परमेश्वर की रचना को अदन वाटिका की मूल पूर्णता के लिए फिर से स्थापित किया जाएगा। जानवर जीवित रहने के लिए एक-दूसरे को नहीं मारेंगे, और कोई प्राणी जो मानव जाति के लिए खतरा है नहीं होगा। कोई डर नहीं, कोई दुख नहीं होगा, और न हीं मौत।

और वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।"

---- प्रकाशितवाक्य 21:4

19

हमारे निर्माता और स्थायी

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)

यहाँ सभी सच्चे विज्ञान की नींव है। परमेश्वर ने हमारा विश्व बनाया। परमेश्वर ने हमें बनाया। हम मौके का नतीजा नहीं हैं। हमारे अस्तित्व के पीछे दिव्य उद्देश्य है। हालाँकि, हमारी दुनिया आज एक ऐसे तत्वज्ञान से संतृप्त किया गया है, जो परमेश्वर के वचन को खोलने वाले पूर्णतया सादे कथन का विरोध कर रहा है। नास्तिकता ने हमें परमेश्वर से दूर करने के अपने लक्ष्य में विज्ञान को अपहृत करने का प्रयास किया है। इस जीवन-दर्शन ने एक सदी से अधिक विज्ञान पर एक पकड़ बना रखी है।

यह इस छोटी सी पुस्तक के दायरे में नहीं है कि वे निर्माण-आधारित विज्ञान का समर्थन करने वाले गवाहो की मात्रा की तल्लीन करे क्योंकि इस साक्ष्य के विषय पर कई अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं। फिर भी, परमेश्वर के अस्तित्व को लेकर आज भी लड़ाई छिड़ी हुई है। ऐसे प्रमुख लेखक और वक्ता हैं जिनके बड़े अनुयायी हैं जो लोगों को परमेश्वर से दूर करने के अपने लक्ष्य में लगे हुए हैं। इस आंदोलन को कौन चला रहा है, और इतने सारे लोग परमेश्वर के अस्तित्व को क्यों नकार रहे हैं?

कई ईमानदार लोग अनजाने में परमेश्वर के बारे में एक असंगत दृष्टिकोण रखते हैं। इनमें से कई लोग अपनी कलीसियाओं में परमेश्वर के प्रेम के बारे में सुनकर बड़े हुए हैं, केवल इसलिए कि एक प्यार करने वाले परमेश्वर की तस्वीर को प्रभावी रूप से नकार कर विपरीत तस्वीर द्वारा जो उसे आसानी से नाराज या अप्रसन्न होने वाले एक परमेश्वर के रूप में चित्रित करती है। उस विश्वास के साथ, वे यह भी जोड़ते हैं कि परमेश्वर अपने शत्रुओं को मृत्यु, विनाश, कष्ट और शाश्वत पीड़ा देकर प्रतिशोध लेता है| परमेश्वर के बारे में उनके विचारों को समझने के बाद, यह देखना आसान है कि इतने सारे लोगों ने परमेश्वर में विश्वास करना पूरी तरह से क्यों बंद कर दिया है। लेकिन जो लोग परमेश्वर की विकृत तस्वीर के कारण भगवान को अस्वीकार करते हैं, वे वास्तव में परमेश्वर को अस्वीकार नहीं करते हैं। क्योंकि उनके पास भगवान की सही तस्वीर नहीं है। परमेश्वर के अस्तित्व का द्वितीय प्रश्न केवल इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के चरित्र के बारे में प्राथमिक प्रश्न हर दिमाग में नहीं सुल्झा है।

तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सबको देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। (उत्पत्ति 1:31)

यह श्लोक सृष्टि के वृत्तांत का समापन करता है। परमेश्वर ने पृथ्वी पर सब कुछ "बहुत अच्छे" के रूप में नहीं देखा होता यदि उसका एक प्राणी परमेश्वर सृष्टि को बनाने का कार्य समाप्त हो जाने के पहले ही मर जाता । क्योंकि परमेश्वर दुख और मृत्यु के लेखक नहीं हैं, यह हमारे लिए यह सोचने की संभावना को समाप्त कर देता है कि इससे पहले कि मनुष्य पाप में पड़ सकें, परमेश्वर ने एक ऐसा मॉडल बनाया होगा जो केवल शक्तिशाली जानवरों को आसानी से जीवित रहने की अनुमति देता है।

जीवन का तरीका जो केवल शक्तिशाली जानवरों को जीवित रहने की अनुमति देता है, एक क्रूर तंत्र है जिसे जानवरों के साम्राज्य ने तब से जीवित रहने के लिए अनुकूलित किया है जब से पाप ने हमारी दुनिया में प्रवेश किया है। हालाँकि, बाइबल में एक खुशखबरी है।

पाप के कारण, सृष्टि और उसके रचयिता के बीच जो अलगाव हुआ, वह ठीक हो जाएगा जब परमेश्वर एक नई पृथ्वी बनाएगा। प्यार का कानून तब जीवन का रास्ता होगा जिसमें कोई प्रतिस्पर्धा नहीं, कोई डर नहीं, कोई दुख नहीं, और कोई मृत्यु नहीं होगी। हमारी पृथ्वी के लिए परमेश्वर का मूल उद्देश्य तब एहसास होगा।

क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं। (रोमियों 1:20)

जब हमें विज्ञान का अध्ययन करने का अवसर मिला, तो हम चमत्कारी सटीकता और जटिलता की सराहना सृष्टि में देख करेंगे। परमेश्वर का हस्ताक्षर हर जगह लिखा है। जब हम परमेश्वर के अस्तित्व को इनकार करते हैं, हमें चमत्कार के अस्तित्व से भी इनकार करना चाहिए, लेकिन हम चमत्कार से घिरे हैं: विशाल वृक्ष, नाजुक वाइल्डफ्लावर, सोंगबर्ड कोरस, स्पाइडर वेब, विशाल ब्रह्मांड, एक बच्चे की मुस्कान जब वह अपनी माँ को पहचानता है, आप इसी क्षण जो सांस ले रहे हैं। यह सभी सर्वोच्च क्रम के चमत्कार हैं। वे यथोचित रूप में चमत्कार के अलावा और कुछ से नहीं समझाया जा सकता है। सारा जीवन एक चमत्कार है। सबूत तीव्र है कि परमेश्वर ने हमें और बाकी सब कुछ जिसमें जीवन है बनाया। हमारे आसपास के असाधारण दुनिया को देखने के लिए और यह निष्कर्ष निकालने के लिए कि परमेश्वर ने इसे नहीं बनाया है, उचित नहीं है।

क्योंकि यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर भी किया; उसने उसे सूनसान रहने के लिये नहीं परन्तु बसने के लिये उसे रचा है। वही यह कहता है, “मैं यहोवा हूँ, मेरे सिवाय दूसरा और कोई नहीं है। (यशायाह 45:18)

परमेश्वर ने पृथ्वी को हमारा शाश्वत घर बनाने के लिये रचा।

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। (यूहन्ना 1:1-3,14)

हमारे निर्माता हम में से एक बने हम में अधिक पूरी तरह से प्रकट करने के लिए कि वह कैसे क्या या कोन है।

जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तरागण को जो तूने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? क्योंकि तूने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। तूने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तूने उसके पाँव तले सब कुछ कर दिया है। (भजन संहिता 8:3-6)

मानव परिवार देवदूत "से थोड़ा कम" बनाए गए थे। हालांकि, जो लोग पृथ्वी पर रहते और परमेश्वर के साथ सामंजस्य स्थापित किया हैं वह एक अनुभव के माध्यम से जाएंगे जिसे "स्वर्गदूतों ने भी देखने की इच्छा की" (1 पतरस 1:12)। परमेश्वर के आत्म-त्याग प्रेम का उनका अनुभवात्मक ज्ञान उन्हें ब्रह्मांड में एक विशेष स्थान देगा: “फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने दुल्हे के लिये श्रृंगार किए हो। फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, “देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा”। (प्रकाशितवाक्य 21:2-3)

उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ्य से बनाया, उसने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है। (यिर्मयाह 10:12)

क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।” **(**प्रेरितों के काम 17:28)

ब्रह्मांड, पृथ्वी और पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणी परमेश्वर से अलग नहीं है। हमारे निर्माता ने हमारी दुनिया का निर्माण इसे एक घड़ी की तरह किसी और इनपुट के बिना अपने दम पर काम करने के

लिए नहीं किया। परमेश्वर लगातार "अपनी शक्ति के शब्द द्वारा सभी चीजों को कायम रखता है" क्योंकि "उसके द्वारा सभी चीजें समाहित हैं" (इब्रानियों 1:3; कुलुस्सियों 1:17)

यदि आप अपने दाहिने हाथ में पानी का गिलास पकड़े हुए थे और इसे छोड़ने का फैसला किया, क्या आपको अपने बाएं हाथ का उपयोग अपने दाहिने हाथ को इसे गिराने के लिए मजबूर करने की आवश्यकता होगी? परमेश्वर हमें बताते है, “निश्चय मेरे ही हाथ ने पृथ्वी की नींव डाली, और मेरे ही दाहिने हाथ ने आकाश फैलाया; जब मैं उनको बुलाता हूँ, वे एक साथ उपस्थित हो जाते हैं।” (यशायाह 48:13)

यह कल्पना करना कि ईश्वर एक विध्वंसक है, ईश्वर को उसकी सृष्टि के पालनकर्ता होने की स्थिति से घृणा करता है। परमेश्वर को सक्रिय रूप से नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है विनाश होने के लिए। एक उदाहरण के रूप में, सदोम और अमोरा के विनाश में, एक आम व्याख्या परमेश्वर को, जो कुछ वह कायम या बनाए रख रहा है उसे नष्ट करने के उद्देश्य से, आग और गन्धक बनाते देखता है। विनाशकारी के रूप में परमेश्वर की यह तस्वीर उसे अपने आप के साथ संघर्ष में डाल देती है जैसे आप अपने आप से संघर्ष में होंगे यदि आप अपने बाएं हाथ का उपयोग अपने दाहिने हाथ को पानी का गिलास छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं।

परमेश्वर को नष्ट करने के लिए उसे केवल पापियों को अपनी इच्छानुसार पापी जीवन जीने की अनुमति देने और उस सुरक्षा को हटाने की आवश्यकता है जो परमेश्वर ने उनके चारों ओर रखी थी। वह अब पापियों की रक्षा नहीं करता क्योंकि वे परमेश्वर से कुछ नहीं चाहते। हालांकि यह समझना अनिवार्य है कि वह ऐसा, मृत्यु या विनाश की एक इच्छा के साथ, कभी नहीं करता है। परमेश्वर पापियों को उनके पापमय तरीके से जीने की अनुमति देता है जब तक कि वे अपने दुर्भाग्यपूर्ण भाग्य को पूरा नहीं कर लेते क्योंकि परमेश्वर प्रेम है और सच्चा प्रेम वास्तविक स्वतंत्रता देता है। परमेश्वर एक व्यक्ति या एक राष्ट्र को केवल अनिच्छा से और गहरे दु: ख से छोड़ देता है: “हे एप्रैम, मैं तुझे क्यों छोड़ दूँ? हे इस्राएल, मैं कैसे तुझे शत्रु के वश में कर दूँ? मैं कैसे तुझे अदमा के समान छोड़ दूँ, और सबोयीम के समान कर दूँ? मेरा हृदय तो उलट पुलट हो गया, मेरा मन स्नेह के मारे पिघल गया है। (होशे 11:8)

यीशु ने यरूशलेम पर विलाप के ये शब्द बोले: “हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थराव करता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुम ने न चाहा। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। (मत्ती 23:37-38)

क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं वरन् बचाने के लिये आया है।” (लूका 9:55)

आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है; और आकाश मण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट करता है। दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है। न तो कोई बोली है और न कोई भाषा; जहाँ उनका शब्द सुनाई नहीं देता है। (भजन संहिता 19:1-3)

परमेश्वर अपनी रचना के माध्यम से सभी लोगों से बात करता है। भाषा अवरोध या मुद्रित शब्द की कमी के कारण कोई उसे जानने के निमंत्रण से बाहर नहीं रखा गया है।

अपनी आँखें ऊपर उठाकर देखो, किसने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन-गिनकर निकालता, उन सबको नाम ले-लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बलवन्त है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता।

---- यशायाह 40:26

20

हम अनंत जीवन कैसे पा सकते हैं?

इससे पहले हम उत्पत्ति की पुस्तक में, अध्याय 3 में दर्ज मानव जाति के पतन के बारे में पढ़ते हैं। साँप ने भेष बदलकर, आदम और हव्वा को यह विश्वास दिलाया कि परमेश्वर स्वयं - सेवा कर रहा था और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। जब उन्हें उस झूठ पर विश्वास हो गया, वे अपने जीवन दाता से खुद की दूरी की मांग करने लगे, और उनके लिए मरने की प्रक्रिया शुरू हुई।

परमेश्वर के बारे में शैतान के झूठ का परिणाम सभी दर्द, पीड़ा और मृत्यु है। मानव जाति को अदन के बाग में परमेश्वर से अलग कर दिया गया था क्योंकि आदम और हव्वा ने परमेश्वर के बारे में अपना मन बदल लिया। जहां वे एक बार उस पर भरोसा करते थे, अब वे उसे अविश्वास करने लगे। यह अभी भी हमारी सटीक समस्या है। हमें परमेश्वर के बारे में हमारे मन को बदलने की जरूरत है। जब हम ऐसा करेंगे, तो अविश्वास विश्वास से विस्थापित हो जाएगा, और प्यार उसके बारे में आशंका को विस्थापित कर देगा। हम हमारे निर्माता के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाएगा, और हमारे पास अनन्त जीवन होगा।

जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर के बारे में सर्प के झूठ को माना और उससे छुपने की कोशिश की, वहाँ जो कुछ भी हुआ परमेश्वर उससे खुद नहीं बदले थे। उनका प्यार अपने अब अलग हुए बच्चों के प्रति कम नहीं हुआ था। मुक्ति की कोई भी योजना जो परमेश्वर के मन को हमारे बारे में बदलने के लिये हमारे प्रयासों पर निर्भर करता है, एक समस्या जो मौजूद नहीं है का समाधान करना चाहता है। परमेश्वर के पास हमारे प्रति पहले से ही अच्छे विचार हैं और उसे हमारे बारे में अच्छा सोचने के लिए किसी भी अनुनय की आवश्यकता नहीं है। वह पहले से ही प्यार करता है और असीम रूप से हम में से हर एक को महत्व देता है।

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाया, तो उन्हें मूर्तियों की पूजा करने पर खतरे की चेतावनी दी गई थी। ये झूठे देवता बाइबिल के समय में आम थे और विकृत कल्पनाएँ के उत्पाद थे। वे अक्सर गुस्से में और तुष्टीकरण की जरूरत में थे। भेंट और बलिदान उनके गुस्से को दूर करने के लिए दिए जाते थे। हम गंभीरता से पूछ सकते हैं: क्या भगवान को समझने का हमारा तरीका प्राचीन मूर्ति पूजा के समान है?

और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें। जो काम तूने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। यूहन्ना 17:3-4

अपने पिता से यीशु की इस प्रार्थना में, वह स्पष्ट रूप से अनन्त जीवन को परिभाषित करता है। यह परमात्मा को जाने का अनुभव है। यह अनुभवात्मक ज्ञान हमें हमारे जीवन-दाता से मिलाता है। हम यीशु के जीवन के वास्तविक मिशन को देखना शुरू करते हैं। उसने परमेश्वर को निःस्वार्थ, दयालु, सौम्य, और क्षमाशील के रूप में प्रकट किया। जब लोगों ने यीशु के शब्दों को सुना, तो वे परमेश्वर के वचन को सुन रहे थे। जब लोगों ने यीशु को बीमारो को ठीक करते, भूखो को खाना खिलाते, प्रोत्साहन देते, उसकी गोद में छोटे बच्चे को पकड़ते तो वे परमेश्वर को देख रहे थे। जब वे खुद को गलत और कुरूप समझे जाने की अनुमति देते हुए देखा, फिर भी वे परमेश्वर को उसकी महिमा में देख रहे थे।

भ्रम से बचने के लिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि मोक्ष के कई कथित तरीके हैं, लेकिन ये सभी परमेश्वर की विवादित तस्वीर पेश करती है। यह अध्ययन मोक्ष का एक प्रमुख तरीके पर केंद्रित होगा जिसका पश्चिमी समाज के लगभग सभी ने कुछ अनावरण लिया था। कई ईमानदार लोग उद्धार की इस समझ का पालन करते हैं। वे निष्कर्ष निकालते हैं कि मोक्ष एक कानूनी मुद्दा है।

इस दृश्य की कुछ विशेषताओं में यहशामिल हैं:

- परमेश्वर की संप्रभुता पर उसके बच्चों को स्वतंत्रता के उपहार के बजाय अधिक जोर दिया गया है।
- परमेश्वर की हमें अपने आप में समेटने की इच्छा के बजाय परमेश्वर की बचाने की शक्ति पर जोर देना।
- यह मानने के बजाय कि परमेश्वर हमसे प्यार करता है और हम जैसे हैं वैसे ही अपने करीब आना चाहते हैं। उनका मानना है कि परमेश्वर इतने शुद्ध और पवित्र हैं कि वह हमारे पापों के वजह से हमसे नफरत करते हैं। जब हम पाप करते हैं तो परमेश्वर को दुख होता है क्योंकि वह जानता है कि पाप हमें नष्ट कर देता है। वह इसके अलावा किसी और कारण से नाराज नहीं हैं।
- यह विश्वास कि परमेश्वर को अपने क्रोध को शांत करने के लिए रक्त की आवश्यकता होती है बजाय कि यह समझने के परमेश्वर हमें हमारे रोगविज्ञान संबंधी डर से चंगा करना चाहता है। वह हमें चाहता है कि हम यह समझे के यह पाप है जो घातक है – वह नहीं।
- यह विश्वास कि परमेश्वर हमारे पापों का रिकॉर्ड रख उस का उपयोग आने वाले फैसले में हमारे खिलाफ करता है बजाय कि यह समझना कि जो भी रिकॉर्ड रखा जाएगा, वह प्रदर्शित करता है कि परमेश्वर ने वह सब कुछ किया जो वह हर व्यक्ति को बचाने के लिये कर सकता था।
- यह विचार कि परमेश्वर उनके नियम को तोड़ने पर दंड देता है बजाय यह समझने के कि यह हमारा अपना स्वार्थ है, प्रेम के नियम के साथ घृणा में, जो हमें दंडित करता है। जिस

तरह हम प्रकृति के नियमों को नपुंसकता के साथ नहीं तोड़ सकते, न ही हम प्यार के कानून का उल्लंघन बिना दंड के कर सकते हैं।

- सुसमाचार को शुभ संदेश के रूप में परिभाषित करना कि परमेश्वर ने उसके नियम को तोड़ने पर दंड प्राप्त करने से बचने का एक तरीका प्रदान किया है बजाय यह जानने के कि असली शुभ संदेश खुद परमेश्वर के बारे में है। अगर परमेश्वर इस तरह के व्यक्ति होते जो उनके नियमों को तोड़ने पर उन्हें मौत की सजा देता, तो यह बुरी खबर होती।
- परमेश्वर को बिल्कुल भरोसेमंद व्यक्ति के रूप में देखने के बजाय। हम केवल मोक्ष के संदर्भ में परमेश्वर के बारे में सोचते हैं। वास्तव में, हम जितना अधिक ध्यान हमारे विनम्र परमेश्वर के बारे में सच्चाई पर केंद्रित करते हैं, हमें हमारे अपने उद्धार के बारे में उतना कम चिंता होगी, और उतना अधिक हम दूसरों को प्यार करेंगे और महत्व देंगे। "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा"। (मरकुस 8:35)

कानूनी सुसमाचार हमेशा मोक्ष का आश्वासन पर अनुचित ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। परमेश्वर ने हम पर किसी की मुक्ति स्थिति का पता लगाने के लिए आवश्यकता का बोझ नहीं रखा है-हमारे अपने सहित। इसके बजाय कि हम अपनी आध्यात्मिक हालत पर ध्यान दें, हमें उस पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है जो हमेशा हम प्रत्येक को न केवल हम जैसे हैं, बल्कि हम कैसे हो सकते हैं देखता है। जितना हम संभवतः से अपने आप को प्यार करते और मूल्य देते है परमेश्वर उस से अधिक असीम रूप से हम प्रत्येक को प्यार करता और मूल्य देता है। परमेश्वर हम में से प्रत्येक को उसके साथ अनंत काल बिताने के लिये चाहता है। वह यह भी चाहता है कि हम यह समझें कि वह पूरी तरह से भरोसेमंद है और हमारे भयभीत मन के इलाज में सक्षम है: "प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है" (1 यूहन्ना 4:18)।

हमने संक्षेप में दो बहुत अलग सुसमाचार की तुलना की है: कानूनी सुसमाचार और उपचार सुसमाचार। उपचार सुसमाचार यीशु की शिक्षाओं और उदाहरण के साथ सही सामंजस्य में है, जबकि कानूनी सुसमाचार का मानव न्यायिक प्रणाली के साथ आम विवाद है जिसका उपयोग यीशु (हमारे विनम्र मरहम लगाने वाले) की निंदा उनको मौत के घाट उतार करने के लिए किया गया था।

क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा। (यिर्मयाह 29:11)

धार्मिक व्यवसाय में समय, प्रयास और व्यय की भारी मात्रा में किया गया निवेश, परमेश्वर को हमारे प्रति अच्छे विचार सोचने के लिए राजी करने के लक्ष्य के साथ, एक बहुत भारी बर्बादी है।

अपने सब अपराधों को जो तुमने किए हैं, दूर करो; अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो! हे इस्राएल के घराने, तुम क्यों मरो? क्योंकि, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, जो मरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिए पश्चाताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे। (यहेजकेल 18:31-32)

हम में से प्रत्येक के लिए परमेश्वर की याचिका है कि हम अपने स्वार्थ से मुड़के ज़िंदगी के तरीके को अपना ले।

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। (यूहन्ना 3:16-17)

परमेश्व को हमें पसंद करने या आशीर्वाद देने के लिए निवेश की गई भारी मात्रा में समय, प्रयास और खर्च एक बड़ी गलती और बर्बादी है।

अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। (2 कुरिन्थियों 5:19)

अगर हमें अनंत मृत्यु से बचाने के लिए परमेश्वर की पूरी कोशिश एक शब्द में अभिव्यक्त किया जा सकता है, वह शब्द होगा सुलह।

तुम जो पहले पराये थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे। उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे। (कुलुस्सियों 1:21-22)

मानव जाति के पतन के बाद से, परायापन की ओर स्वभाव हमारे दिमागों में ही समाया हुआ है- कभी परमेश्वर के नहीं।

इसलिए कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, “अंधकार में से ज्योति चमके,” और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। (2 कुरिन्थियों 4:6)

यह पद्य जिस अंधकार को संदर्भित करती है वह हमारा परमेश्वर की गलतफहमी है। परमेश्वर की महिमा उसका चरित्र है, जो यीशु के चेहरे पर दिखाई देता है।

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं। (2 कुरिन्थियों 3:18)

हम यीशु को निहारने से बदल जाते हैं। यह सिद्धांत दोनों तरीके से काम करता है। यदि हम परमेश्वर को स्वयं-सेवा करने वाला मानते हैं, तो यह हमारे स्वयं के स्वार्थ को पुष्ट करता है। यदि हम उसे पूरी तरह से निःस्वार्थ रूप से देखते हैं, तो यह हमारे निहित स्वार्थ को उखाड़ फेंकने का काम करेगा। परमेश्वर के प्रेम, दया, और क्षमा का विचार उन समान गुणों का, जो हम में परिलक्षित होता है, की सुविधा प्रदान करती है।

मैं तुम से कहता हूँ; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्यानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं। (लूका 15:7)

पश्चाताप का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर से कहे "मुझे क्षमा करें"। पश्चाताप का अर्थ है, पीछे मुड़ना या मन को बदलना। सच पश्चाताप, यीशु ने जो सिखाया उसके संदर्भ में, का अर्थ है परमेश्वर के बारे में मन का परिवर्तन। हम उसे उसी रूप में देखेगे जिस रूप में यीशु ने सटीक रूप से उसका प्रतिनिधित्व किया था।

“हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।” (मत्ती 11:28-30)

आत्मिक सुधार के लिए निरर्थक प्रयास में हमें अच्छा काम करने की आवश्यकता नहीं है। मापने के लिए हमारे सभी प्रयास हमें स्वयं पर ध्यान केंद्रित_करने के लिए हतोत्साह करता है और इसके परिणामस्वरूप या तो गर्व होगा या निरुत्साहन। यीशु के पास हमारी दुविधा का हल है। वह बस कहता है, "मेरे बारे में जानें।"

यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहाँ यह लिखा था : “प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ। (लूका 4:17-18)

हमारे लिए जो यीशु पूरा करने के लिए आया उसकी हम सभी को आवश्यकता है; वहाँ कोई अपवाद नहीं हैं।

21

क्या हमें न्याय से डरना चाहिए?

इस पर विचार करते समय, यह सहायक होगा यदि हम पहले यह निर्धारित करें कि किसे न्याय दिया जा रहा है और कौन न्यायाधीश है या कौन न्याय कर रहा है। कृपया ईडन गार्डन में हव्वा और सर्प के बीच की बातचीत को याद करें। सर्प ने ईश्वर की निष्पक्षता, सद्भावना और विश्वसनीयता पर हव्वा के मन में एक प्रश्न आरोपित किया। जब हम इन बातों पर सच्चे मन से विचार करते हैं, तो यह हमारे लिए स्पष्ट हो जाएगा कि जब से मनुष्य पाप में गिरे हैं, तब से परमेश्वर पर मुकदमा चलाया गया है न कि मनुष्यों पर। मतलब मनुष्य परीक्षण कर रहे हैं कि क्या परमेश्वर वास्तव में अच्छा है जैसा कि वह होने का दावा करता है।

परमेश्वर का खुद को परीक्षण पर रखे जाने की अनुमति के विचार को समझ पाना हमारे लिए मुश्किल हो सकता है। फिर भी, यह दृष्टिकोण बाइबल के गहन अध्ययन पर आधारित है। शैतान के साथ वह पहला संवाद से हम अज्ञानतावश परमेश्वर का न्याय करते आ रहे हैं। क्या हमने उसे निष्पक्ष सुनवाई दी है?

यद्यपि हम यह सोचने में गलत हैं कि केवल हम ही हैं जिन्हें पापों के लिए आंका जा रहा है, लेकिन जब न्याय की परीक्षा होने की बात आती है तो हम बिल्कुल भी नहीं छूटे हैं। परमेश्वर ने हमें परीक्षण पर नहीं रखा है; हालाँकि, हम विशेष रूप से खुद को आंकना और निंदा करने में निपुण हैं। यीशु ने कहा कि जो शब्द उन्होंने बोले हैं वे जीवन हैं। हमारे पास उनके शब्दों को स्वीकार या अस्वीकार करने का विकल्प है। यदि उनके शब्द वास्तव में जीवन हैं, और हम उन्हें अस्वीकार करते हैं, तो फिर क्या हमने खुद के लिए नकारात्मक परिणामों के साथ एक निर्णय नहीं लिया है?

परमेश्वर अपने न्याय के फैसले को न्यायालय की तरह घोषित नहीं करता है। जब हम आत्मनिंदा और मृत्यु की राह पर बने रहने के लिए दृढ़ हैं, परमेश्वर हमारे लिए और कुछ नहीं कर सकता हैं सिवाय अनिच्छा से हमारे निर्णय की पुष्टि करने के।

न्याय करने का एक और पहलू है जिस पर हमें विचार करना चाहिए। जब हम दूसरों का जाचते (न्याय) हैं, यह हम पर नकारात्मक प्रतिक्रिया करता है। जब हम दूसरों की निंदा करते हैं, हम केवल इस प्रक्रिया में खुद की निंदा कर रहे हैं। यह समझने के लिए के हमें वास्तव में न्याय के फैसले के समय में किससे डरने की जरूरत है, हमें केवल आइने में देखना होगा।

व्यभिचार में पकड़ी गई महिला का सुसमाचार विवरण हमें परमेश्वर न्याय कैसे करता है उसका उदाहरण देता है:

और यीशु जैतून पर्वत पर चला गया। अलख सवेरे वह फिर मन्दिर में गया। सभी लोग उसके पास आये। यीशु बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। तभी यहूदी धर्मशास्त्री और फ़रीसी लोग व्यभिचार के अपराध में एक स्त्री को वहाँ पकड़ लाये। और उसे लोगों के सामने खड़ा कर दिया। और यीशु से बोले, "हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते रंगे हाथों पकड़ी गयी है। मूसा का विधान हमें आज्ञा देता है कि ऐसी स्त्री को पत्थर मारना चाहियें। अब बता तेरा क्या कहना है?" यीशु को जाँचने के लिये यह पूछ रहे थे ताकि उन्हें कोई ऐसा बहाना मिल जाये जिससे उसके विरुद्ध कोई अभियोग लगाया जा सके। किन्तु यीशु नीचे झुका और अपनी उँगली से धरती पर लिखने लगा। क्योंकि वे पूछते ही जा रहे थे इसलिये यीशु सीधा तन कर खड़ा हो गया और उनसे बोला, "तुम में से जो पापी नहीं है वही सबसे पहले इस औरत को पत्थर मारे।" और वह फिर झुककर धरती पर लिखने लगा। जब लोगों ने यह सुना तो सबसे पहले बूढ़े लोग और फिर और भी एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे और इस तरह वहाँ अकेला यीशु ही रह गया। यीशु के सामने वह स्त्री अब भी खड़ी थी। यीशु खड़ा हुआ और उस स्त्री से बोला, "हे स्त्री, वे सब कहाँ गये? क्या तुम्हें किसी ने दोषी नहीं ठहराया?" स्त्री बोली, "हे, महोदय! किसी ने नहीं।" यीशु ने कहा, "मैं भी तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा। जाओ और अब फिर कभी पाप मत करना।" (यूहन्ना 8:1-11)

धार्मिक गुरुओं ने व्यभिचारी महिला को यीशु को नष्ट करने के लिए एक जाल के रूप में इस्तेमाल किया। क्योंकि वे यीशु से नफरत करते थे और उसे अपने धर्म के लिए खतरा मानते थे।

महिला के आरोपियों ने मूसा के कानून की अपील की। फरीसियों के साथ एक और मुठभेड़ में जो तलाक के विषय पर थी, यीशु ने उन्हें बताया कि मूसा की व्यवस्था में उनके दिलों की कठोरता के कारण रियायतें शामिल थी: मसीह येशु ने उन्हें समझाया, "तुम्हारे कठोर हृदय के कारण मूसा ने तुम्हारे लिए यह आज्ञा रखी (मरकुस 10:5)।

इस दरबार के दृश्य में जो कुछ हुआ, उसका परिमाण स्पष्ट हो जाएगा जब हमें एहसास होगा कि यीशु पृथ्वी पर दिव्यता के सभी पूर्वाग्रहों के साथ, न्याय पर अमल के अधिकार सहित, परमेश्वर थे। यीशु ने उसके सामने लाए मामले में तुरंत फैसला नहीं किया, लेकिन इसके बजाय नीचे झुका और जमीन पर अपनी उंगली से लिखा। जब उन्होंने उन्हें उनके सवाल का जवाब के लिए दबाया, उन्होंने उनसे कहा, "तुम में से जो पापी नहीं है वही सबसे पहले इस औरत को पत्थर मारे"। उन्होंने फिर जमीन पर लिखना जारी रखा।

यीशु ने जो कहा और किया उस सभी में उनका एक उद्देश्य था। जब उन्होंने जमीन पर लिखा, यह धार्मिक नेताओं के सवाल से बचने के लिए नहीं था। वह उन परिस्थितियों को जानते थे जिन में उस महिला को उनके सामने लाया गया था। यीशु उसके प्रत्येक अभियुक्त के इतिहास को भी जानते थे और उन्होंने उनके विचारों और उद्देश्यों को पढ़ा था। वह गवाहों की उपस्थिति में इन पाखंडी लोगों के

लिए एक तीखी फटकार लगा सकता था। इसके बजाय, उन्होंने शालीनता से धार्मिक नेताओं को उनके पापों को धुल में लिखते हुए अवगत कराया--- उनके पापों का एक अस्थायी लिखित रिकॉर्ड।

यीशु प्रत्येक व्यक्ति को प्यार करता और असीम रूप से मूल्यवान मानता था जो परिस्थितियों के बावजूद उनके चारों ओर इकट्ठे होते थे। उनका लक्षय दुनिया को बचाना था, और उन्होंने महिला और उसके आरोपियों की सुलह मांगी, जिन्हें उन्होंने आगे पराया करने की इच्छा नहीं की थी।

यीशु ने धर्मगुरुओं से कहा, “तुम में से जो पापी नहीं है वही सबसे पहले इस औरत को पत्थर मारे”। यहां उन्होंने न्याय करने की जिम्मेदारी उन्हें वापस सौंप दी। यीशु इस दुनिया में न्याय करने और निंदा करने के लिए नहीं आए, और वह एक न्यायाधीश की भूमिका में धक्के से नहीं होंगे। क्या शास्त्रियों और फारीसीयों ने उनके शब्दों को महिला पर पत्थर फेंकने के निमंत्रण के रूप में लिया था? जाहिरा तौर पर नहीं, जैसा कि वे सभी "एक-एक करके" दृश्य से बाहर निकल गए ।

यीशु, जो परमेश्वर है, ने स्त्री की निंदा नहीं की, लेकिन अपने शब्दों में "जाओ और फिर कभी पाप न करो," उसने उसके लिए जीवन के मार्ग का द्वार खोल दिया। वह उसे केवल उन कार्यों को छोड़ने की आज्ञा नहीं दे रहा था जो उसे उसकी उपस्थिति में लाए थे; वह उसे उसके घातक पाप से मुक्ति प्रदान कर रहा था । यह विश्वास करने का पाप कि परमेश्वर हमारे भरोसे के योग्य नहीं है।

यीशु ने इस महिला को भविष्य में आने वाली निंदा से बचने का रास्ता सुझाया। उन्होंने एक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर का उसके लिए प्रेम को प्रकट किया। यह महिला जीवन दाता की उपस्थिति में थी, और वह जानती थी कि वह उनसे प्यार और उन पर भरोसा कर सकती थी। परमेश्वर के प्रति उसकी दृष्टिकोण और उसका संबंध इस मुठभेड़ के बाद मौलिक तरीके से बेहतर होने के लिए बदल गया था। उसके लिए, जो न्याय हुआ वह जीवन का रूपांतरण और जीवन देने वाला था।

यीशु ने कठोर हिर्दय वाले शास्त्रियों और फारीसीयों की निंदा नहीं की जो महिला की निंदा करने के लिए बहुत जल्दी में थे, लेकिन उन्होंने उनके सामने एक आध्यात्मिक दर्पण रखा जो उनके अपने अंधेरे चरित्र का प्रतिबिंबित हुआ। परिणामस्वरूप वे "उनकी अपनी अंतरात्मा की आवाज में दोषी ठहराए गए", और वे जीवन दाता के शुद्ध, निःस्वार्थ प्रेम की उपस्थिति से जाने के लिए मजबूर महसूस करने लगे। वे दूसरे की निंदा करने के लिए आए थे, लेकिन इस प्रक्रिया में वे खुद को अंदर ही अंदर धिक्कारते हुए नज़र आए।

सो, न्याय करने वाले मेरे मित्र तू चाहे कोई भी है, तेरे पास कोई बहाना नहीं है क्योंकि जिस बात के लिये तू किसी दूसरे को दोषी मानता है, उसी से तू अपने आपको भी अपराधी सिद्ध करता है क्योंकि तू जिन कर्मों का न्याय करता है उन्हें आप भी करता है। अब हम यह जानते हैं कि जो लोग ऐसे

काम करते हैं उन्हें परमेश्वर का उचित दण्ड मिलता है। किन्तु हे मेरे मित्र क्या तू सोचता है कि तू जिन कामों के लिए दूसरों को अपराधी ठहराता है और अपने आप वैसे ही काम करता है तो क्या तू सोचता है कि तू परमेश्वर के न्याय से बच जायेगा? (रोमियों 2:1-3)

परमेश्वर हम में से प्रत्येक को वास्तविक स्वतंत्रता देता है। वह आत्म-निंदा की हमारी पसंद को अधिभावी या रद्द नहीं करेगा। यहाँ परमेश्वर का निर्णय इस आत्म-निंदा के प्रति उनका अनिच्छुक अनुसमर्थन है जब हम पारस्परिक प्रेम और जीवन के घेरे के बाहर रहना चुनें। इस फैसले से कोई बच नहीं सकता क्योंकि परमेश्वर हमें, हमारी इच्छा के विरुद्ध, उस मार्ग पर चलने के लिए मजबूर नहीं कर सकते जो जीवन की ओर ले जाता है।

पिता किसी का भी न्याय नहीं करता किन्तु उसने न्याय करने का अधिकार बेटे को दे दिया है। (यूहन्ना 5:22)

परमेश्वर, पिता, हमारा न्याय नहीं करते।

आत्मा ही है जो जीवन देता है, देह का कोई उपयोग नहीं है। वचन, जो मैंने तुमसे कहे हैं, आत्मा है और वे ही जीवन देते हैं। (यूहन्ना 6:63)

यीशु के वचन जीवन हैं। यीशु ने जो भी शब्द बोला है, उसमें उन्होंने परमेश्वर के मेल-मिलाप से प्रेम को प्रकट किया।

यीशु ने पुकार कर कहा, "वह जो मुझ में विश्वास करता है, वह मुझ में नहीं, बल्कि उसमें विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है। और जो मुझे देखता है, वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। मैं जगत में प्रकाश के रूप में आया ताकि हर वह व्यक्ति जो मुझ में विश्वास रखता है, अंधकार में न रहे। "यदि कोई मेरे शब्दों को सुनकर भी उनका पालन नहीं करता तो भी उसे मैं दोषी नहीं ठहराता क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने नहीं बल्कि उसका उद्धार करने आया हूँ। जो मुझे नकारता है और मेरे वचनों को स्वीकार नहीं करता, उसके लिये एक है जो उसका न्याय करेगा। वह है मेरा वचन जिसका उपदेश मैंने दिया है। अन्तिम दिन वही उसका न्याय करेगा। (यूहन्ना 12:44-48)

यीशु हमारा न्याय नहीं करता और न ही हमारी निंदा करता है। परमेश्वर हमें जीवन का वचन प्रदान करता है, लेकिन वह हमें इसे स्वीकार करने के लिए कभी मजबूर नहीं करेगा।

"दूसरों पर दोष लगाने की आदत मत डालो ताकि तुम पर भी दोष न लगाया जाये। क्योंकि तुम्हारा न्याय उसी फैसले के आधार पर होगा, जो फैसला तुमने दूसरों का न्याय करते हुए दिया था। और परमेश्वर तुम्हें उसी नाप से नापेगा जिससे तुमने दूसरों को नापा है। "तू अपने भाई बंदों की आँख का तिनका तक क्यों देखता है? जबकि तुझे अपनी आँख का लट्ठा भी दिखाई नहीं देता। जब तेरी अपनी आँख में लट्ठा समाया है तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है कि तू मुझे तेरी आँख का तिनका

निकालने दे। ओ कपटी! पहले तू अपनी आँख से लट्ठा निकाल, फिर तू ठीक तरह से देख पायेगा और अपने भाई की आँख का तिनका निकाल पायेगा। (मत्ती 7:1-5)

यदि परमेश्वर पिता हमारा न्याय नहीं करता है और यीशु हमारा न्याय नहीं करता है, हम यह क्यों सोचेंगे कि हम दूसरों को आंकने के योग्य हैं जब हम एक न्यायिक भावना (हमारी खुद की आंख में एक लट्ठा) को शरण देते हैं?

मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो मेरे वचन को सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, वह अनन्त जीवन पाता है। न्याय का दण्ड उस पर नहीं पड़ेगा। इसके विपरीत वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश पा जाता है। (यूहन्ना 5:24)

परमेश्वर के बारे में सच्चाई को समझना और उनपर विश्वास करना सीखना उसे जीवन की ओर ले जाता है। यीशु ने कहा, “जो उसमें विश्वास रखता है उसे दोषी न ठहराया जाय” (यूहन्ना 3:18)।

किन्तु पौलुस और बरनाबास ने निडर होकर कहा, “यह आवश्यक था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता किन्तु क्योंकि तुम उसे नकारते हो तथा तुम अपने आपको अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझते, सो हम अब गैर यहूदियों की ओर मुड़ते हैं। (प्रेरितों के काम 13:46)

यह आत्म-निंदा का एक ज्ञानवर्धक उदाहरण है।

“किसी को दोषी मत कहो तो तुम्हें भी दोषी नहीं कहा जायेगा। किसी का खंडन मत करो तो तुम्हारा भी खंडन नहीं किया जायेगा। क्षमा करो, तुम्हें भी क्षमा मिलेगी। (लूका 6:37)

लूका के सुसमाचार में, विलक्षण पुत्र के दृष्टांत हमें यह सिखाते हैं कि इससे पहले कि हम पूछें परमेश्वर ने हमें माफ कर दिया है। यदि हमें आंका जाता, हमारी निंदा की जाती, या हमें अक्षम किया जाता , हम केवल अपने आप को ही दोष देंगे, “क्योंकि जो जैसा बोयेगा, वैसा ही काटेगा” (गलातियों 6:7)।

यीशु ने कहा, “मैं इस जगत में न्याय करने आया हूँ, ताकि वे जो नहीं देखते वे देखने लगें और वे जो देख रहे हैं, नेत्रहीन हो जायें।” कुछ फ़रीसी जो यीशु के साथ थे, यह सुनकर यीशु से बोले, “निश्चय ही हम अंधे नहीं हैं। क्या हम अंधे हैं?” यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अंधे होते तो तुम पापी नहीं होते पर जैसा कि तुम कहते हो कि तुम देख सकते हो तो वास्तव में तुम पाप-युक्त हो।” (यूहन्ना 9:39-41)

यीशु किस "न्याय" के लिए इस दुनिया में आया था? वह मानव जाति के लिए परमेश्वर के प्रेम को और हम में से प्रत्येक पर रखे गए अनंत मूल्य को प्रकट करने के लिए इस दुनिया में आया था। वह

चाहता है कि हम एक दूसरे को एसे देखे जैसे वह हमें देखता है, और हम एक दूसरे को एसा महत्व दे जैसा वह हमें महत्व देता है। यीशु हमें दूसरों के पापों के साथ-साथ कृत्रिम रूप से निर्मित अंतर, जो हमें विभाजित करते हैं, के लिए अंधे होना सिखा रहा है: संप्रदायवाद, राष्ट्रवाद, आदिवासीवाद, पक्षपातपूर्ण राजनीति, या कोई भी अन्य युक्ति जो मानसिकता रूप में हमें उनके खिलाफ प्रोत्साहित करती है।

फरीसियों ने यीशु के इस सबक को जो वह सिखा रहे थे नहीं समझा। वे जमकर संप्रदायवादी थे और उन अन्यजातियों को कुत्तों के रूप में देखते थे, जो यहूदी वंश के नहीं थे। वो भी दूसरों के पापों को देखते हुए और न्याय करते हुए आत्म- ख़याली विशेषज्ञ थे।

परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने अपने एकमात्र पुत्र को दे दिया, ताकि हर वह आदमी जो उसमें विश्वास रखता है, नष्ट न हो जाये बल्कि उसे अनन्त जीवन मिल जाये। परमेश्वर ने अपने बेटे को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि वह दुनिया को अपराधी ठहराये बल्कि उसे इसलिये भेजा कि उसके द्वारा दुनिया का उद्धार हो। जो उसमें विश्वास रखता है उसे दोषी न ठहराया जाय पर जो उसमें विश्वास नहीं रखता, उसे दोषी ठहराया जा चुका है क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम में विश्वास नहीं रखा है। इस निर्णय का आधार यह है कि ज्योति इस दुनिया में आ चुकी है पर ज्योति के बजाय लोग अंधेरे को अधिक महत्त्व देते हैं। क्योंकि उनके कार्य बुरे हैं। (यूहन्ना 3:16-19)

इस अंश में नाम का अर्थ चरित्र है। परमेश्वर के चरित्र का रहस्योद्घाटन को अस्वीकार करना, जिसे यीशु ने प्रकाश में लाया, वास्तविकता में परमेश्वर को अस्वीकार करना है। यीशु में, परमात्मा कह रहे है – यह ही हूं जो मैं वास्तव में हूँ।

अलख सुबह सभी प्रमुख याजकों और यहूदी बुज़ुर्ग नेताओं ने यीशु को मरवा डालने के लिए षड्यन्त्र रचा। फिर वे उसे बाँध कर ले गये और राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया। (मत्ती 27:1-2)

यह कैसी तस्वीर है! पाप-संतृप्त धर्मवादियों की उनके जीवन दाता की मृत्यु की मांग, और वह उनका विरोध नहीं कर रहा है और यहां तक कि वह न ही उन पर निर्णय पारित कर रहा है! कौन या क्या घातक है - परमेश्वर या पाप?

हम मसीह के परीक्षण और सूली पर चढ़ाए जाने के पीछे के गहरे अर्थ को समझे बिना उसकी मृत्यु से पहले के अंतिम घंटों के बारे में पढ़ते और सुनते हैं। यीशु पूरी तरह से परमेश्वर और साथ ही साथ पूरी तरह से मनुष्य है। जब पोंटियस पिलाट के सामने यीशु को परीक्षण के लिए लाया गया था, वह पूरी तरह से परमेश्वर थे। जब उन्हें आंका गया और उनकी निंदा की गई, तो वे पूरी तरह से

परमेश्वर थे। जब उसे चाबुक से मारा गया, उसका मजाक उड़ाया गया और उसे मौत के घाट उतार दिया गया वह पूरी तरह से परमेश्वर थे।

परमेश्वर ने स्वयं को परीक्षा में डालने और दोषी ठहराने की अनुमति दी। क्यों? क्योंकि हमारे लिए यह समझना मुश्किल है कि हमारे पापों ने उसके साथ क्या किया है।

यीशु, परमेश्वर का पुत्र, पृथ्वी पर अपने जीवन के अंतिम समय के दौरान बेहद पीड़ित था - जितना हम कल्पना कर सकते हैं, उससे अधिक। लेकिन यीशु की पीड़ा जीथसेमेन के बगीचे में शुरू नहीं हुई, न ही यह सूली पर उसके मरने के शब्दों के साथ खत्म हुई। जब से पाप हमारे संसार में आया है तब से परमेश्वर ने हमारे साथ और हमारे लिए पीड़ा सही, और वह उस दिन तक हमारे साथ और हमारे लिए कष्ट उठाते रहेंगे जब तक पाप अपने विनाशकारी पाठ्यक्रम को चलाता रहेगा है, और सभी दुख और मौत एक अनन्त अंत का सामना करेगे।

यीशु का परीक्षण और पीड़ा, उन लोगों के हाथों जिन्हें उन्होंने उनके असीम प्रेम को साझा करने के लिए बनाया था, हमें उस दुख की तस्वीर को देना चाहिए जिसे हमने हजारों वर्षों से परमेश्वर पर डाला है। हम उदासीनता, निष्क्रियता, घबराहट और यहां तक कि सक्रिय के आरोप, विध्वंसकारी विनाश के जवाब देने के लिए अपने मानव दरबार से पहले परमेश्वर का जयकारा लगाते रहते हैं। बहुत बार आरोप के अनुसार हमारे फैसले दोषी है! परमेश्वर अपने आश्रित बच्चों को समेटने के लिए जो वह कर रहे है उसकी तुलना में और क्या कर सकते है? सलीब सुलह करने की दिव्य कृति है। सलीब शैतान के इस विवाद को समाप्त करता है कि परमेश्वर स्वयं-सेवा करने वाला, अडिग और अविश्वासनीय है।

यहां तक कि जितना हमने परमेश्वर के चरित्र को काला किया है, उतना ही अच्छी खबर है - परमेश्वर जानता है कि हम उसे क्यों गलत समझते हैं, और वह इसके लिए हमारी निंदा नहीं करता है। उसने हमारे लिए जो कुछ भी किया और जो कुछ भी वह रोज़ाना करता है उसके लिए हमारा कृतध्नता के बावजूद वह हमें प्यार करना जारी रखेगा। लेकिन अगर हमें यह एहसास हो कि यह केवल हमारे बारे में नहीं है तो यह परमेश्वर के लिए अद्भुत नहीं होगा; हमारे निर्माता अंतरंग रूप से हमारी दुविधा में भी शामिल हैं। क्या हम उसके बारे में सोच सकते हैं? क्या हम उसको इस रूप में देखने के लिए खुद को अनुमति दे सकते हैं जैसा वह वास्तव में है - अडिग, अन्य-केंद्रित प्यार करने वाला, और प्यार लौटाने वाला जिसका वह हकदार है? क्या इतना पूछना बहुत है? “हम उससे प्रेम करते हैं क्योंकि पहले परमेश्वर ने हमें प्रेम किया है” (1 यूहन्ना 4:19)।

उनके सारे संकट में उसने भी कष्ट उठाया, और उसके सम्मुख रहने वाले दूत ने उनका उद्धार किया; प्रेम और कोमलता से उसने आप ही उन को छुड़ाया; उसने उन्हें उठाया और प्राचीनकाल से सदा उन्हें लिए फिरा।

--- यशायाह 63: 9

22

परमेश्वर का न्याय कैसा दिखता है?

भलाई करना सीखो; यत्न से न्याय करो, उपद्रवी को सुधारो; अनाथ का न्याय चुकाओ, विधवा का मुकद्दमा लड़ो॥

---- यशायाह 1:17

परमेश्वर का निर्णय कभी भी हमारे खिलाफ़ न्यायिक सजा नहीं देता है। यह यहाँ दुख से राहत और अनुचित दुनिया में निष्पक्षता को बढ़ावा देना के रूप में परिभाषित किया गया है।

कि देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे मैं ने चुना है; मेरा प्रिय, जिस से मेरा मन प्रसन्न है: मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा; और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा। वह न झगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा; और न बाजारों में कोई उसका शब्द सुनेगा। वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा; और धूआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा, जब तक न्याय को प्रबल न कराए। और अन्यजातियां उसके नाम पर आशा रखेंगी। (मत्ती 12:18-21)

परमेश्वर का निष्पक्ष, विनम्र निर्णय विश्वास दिलाता है।

फिर जब तुम अपने देश के खेत काटो तब अपने खेत के कोने कोने तक पूरा न काटना, और काटे हुए खेत की गिरी पड़ी बालों को न चुनना। और अपनी दाख की बारी का दाना दाना न तोड़ लेना, और अपनी दाख की बारी के झड़े हुए अंगूरों को न बटोरना; उन्हें दीन और परदेशी लोगों के लिये छोड़ देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। (लैव्यवस्था 19:9-10)

परमेश्वर ने प्राचीन समाज में वंचितों के लिए प्रावधान करने की मांग की।

और यदि कोई परदेशी तुम्हारे देश में तुम्हारे संग रहे, तो उसको दु:ख न देना। जो परदेशी तुम्हारे संग रहे वह तुम्हारे लिये देशी के समान हो, और उससे अपने ही समान प्रेम रखना; क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। तुम न्याय में, और परिमाण में, और तौल में, और नाप में कुटिलता न करना। सच्चा तराजू, धर्म के बटखरे, सच्चा एपा, और धर्म का हीन तुम्हारे

पास रहें; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया। (लैव्यवस्था 19:33-36)

हाय उन पर जो दुष्टता से न्याय करते, और उन पर जो उत्पात करने की आज्ञा लिख देते हैं, कि वे कंगालों का न्याय बिगाड़ें और मेरी प्रजा के दीन लोगों का हक मारें, कि वे विधवाओं को लूटें और अनाथों का माल अपना लें! (यशायाह 10:1-2)

परमेश्वर समावेशी है- उसके साथ कोई बाहरी व्यक्ति नहीं है। परमेश्वर मानव कानूनों, व्यापार प्रथाओं और संस्थानों के बारे में जो, गरीबों की कीमत पर अमीरों को लाभान्वित करें, जानते है। वह इसे डकैती कहते है। व्यापार में किसी भी प्रकार की गलत व्याख्या बाइबल के अंतर्गत चोरी की परिभाषा में आती है।

वे कहते हैं, क्या कारण है कि हम ने तो उपवास रखा, परन्तु तू ने इसकी सुधि नहीं ली? हम ने दुःख उठाया, परन्तु तू ने कुछ ध्यान नहीं दिया? सुनो, उपवास के दिन तुम अपनी ही इच्छा पूरी करते हो और अपने सेवकों से कठिन कामों को कराते हो। सुनो, तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते और झगड़ते और दुष्टता से घूंसे मारते हो। जैसा उपवास तुम आजकल रखते हो, उस से तुम्हारी प्रार्थना ऊपर नहीं सुनाई देगी। जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं अर्थात जिस में मनुष्य स्वयं को दीन करे, क्या तुम इस प्रकार करते हो? क्या सिर को झाऊ की नाईं झुकाना, अपने नीचे टाट बिछाना, और राख फैलाने ही को तुम उपवास और यहोवा को प्रसन्न करने का दिन कहते हो? जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहने वालों का जुआ तोड़कर उन को छुड़ा लेना, और, सब जुओं को टूकड़े टूकड़े कर देना? क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना? (यशायाह 58:3-7)

यदि हम जरूरतमंदों की मदद करने में उपेक्षा करते हैं, तो केवल धार्मिक प्रदर्शन वैधता है। यीशु ने उच्चारित किया, “पर हे फरीसियों, तुम पर हाय ! तुम पोदीने और सुदाब का, और सब भांति के साग-पात का दसवां अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो: चाहिए तो था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते”। (लूका 11:42)

सेनाओं के यहोवा ने यों कहा है, खराई से न्याय चुकाना, और एक दूसरे के साथ कृपा और दया से काम करना, न तो विधवा पर अन्धेर करना, न अनाथों पर, न परदेशी पर, और न दीन जन पर ; और न अपने अपने मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना करना। (जकर्याह 7:9-10)

परमेश्वर किसी भी रूप में उत्पीड़न को स्वीकार नहीं करता है, न ही किसी भी रूप में दूसरे की कीमत पर एक का स्वयं लाभ उठाने की योजना बनाने की मंजूरी देता है।

हे मेरे भाइयों, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो। क्योंकि यदि एक पुरूष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभा में आए और एक कंगाल भी मैले कुचैले कपड़े पहिने हुए आए। और तुम उस सुन्दर वस्त्र वाले का मुंह देख कर कहो कि तू वहां अच्छी जगह बैठ; और उस कंगाल से कहो, कि तू यहां खड़ा रह, या मेरे पांव की पीढ़ी के पास बैठ। तो क्या तुम ने आपस में भेद भाव न किया और कुविचार से न्याय करने वाले न ठहरे? हे मेरे प्रिय भाइयों सुनो; क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी, और उस राज्य के अधिकारी हों, जिस की प्रतिज्ञा उस ने उन से की है जो उस से प्रेम रखते हैं पर तुम ने उस कंगाल का अपमान किया: क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार नहीं करते? और क्या वे ही तुम्हें कचहिरयों में घसीट घसीट कर नहीं ले जाते? क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिस के तुम कहलाए जाते हो? तौभी यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख, सचमुच उस राज व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा ही करते हो। (याकूब 2:1-8)

परमेश्वर के साथ कोई पक्षपात नहीं है; हम सब उसकी नज़र में समान हैं: “कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता” (प्रेरितों के काम 10:34)।

हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें॥ (याकूब 1:27)

शुद्ध धर्म संप्रदायवाद, समारोहवाद, हठधर्मिता, भावुकता, या सनकी अनुरूपता नहीं है।

तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। क्योंकि मैं भूखा था,

और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए। तब धर्मी उस को उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा, और पिलाया? हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा, और कपड़े पहिनाए? हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए? तब राजा उन्हें उत्तर देगा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। (मत्ती 25:34-40)

यीशु के भाई या बहन होने के लिए क्या योग्यताएं हैं? केवल एक ही है: मानव जाति का एक सदस्य होना। हम सभी यीशु के परिवार के सदस्य हैं।

और मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।

--- यीशु (मत्ती 8:11)

23

परमेश्वर विनम्र है

परमेश्वर ब्रह्मांड में सबसे शक्तिशाली है; वैसे ही वह सबसे विनम्र भी है।

तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "मत डरो; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ; जो सब लोगों के लिये होगा, कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और वही मसीह प्रभु है। और इसका तुम्हारे लिये यह चिन्ह है, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे।" (लूका 2:10-12)

परमेश्वर संसार में चरनी में पड़े एक अहानिकर बच्चे के रूप में आए।

"हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मत्ती 11:28-30)

यीशु, परमेश्वर का पुत्र, कैसे स्पष्ट हो सकता है? वह कहता है, "मैं दिल से नम्र और दीन हीन हूँ।"

यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।" (मत्ती 8:20)

यहाँ यीशु ने अपने आप को समाज के सबसे गरीब सदस्यों के साथ अपनी पहचान की है: बेघर।

और उन्होंने उसे बैंगनी वस्त्र पहनाया और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा, और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, "हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!" वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे। जब वे उसका उपहास कर चुके, तो उस पर बैंगनी वस्त्र उतारकर उसी के कपड़े पहनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए। तब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया, और उसके कपड़ों पर चिट्ठियाँ डालकर, कि किस को क्या मिले, उन्हें बाँट लिया। उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए। तब पवित्रशास्त्र का वह वचन कि वह अपराधियों के संग गिना गया, पूरा हुआ। (मरकुस 15:17-20,24,27-28)

उनके विनम्र जन्म से लेकर उनके दो चोर के बीच सूली पर चढ़ने तक, यीशु परमेश्वर के पुत्र, ने लगातार नम्रता और विनम्रता का प्रदर्शन किया।

हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले? (मीका 6:8)

“यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे? (आमोस 3:3)

जब हम विनम्र होंगे जेसा परमेश्वर है तो हम परमेश्वर के साथ सहस्वरता में चलेंगे।

जब हम नम्रता का परिचय देते हैं जिसे हमारे विनम्र परमेश्वर ने प्रदर्शन किया था, हम उसकी विश्वसनीयता के बारे में संदेह के एक परमाणु का मनोरंजन कैसे कर सकते हैं?

जब हम उस नम्रता को समझते हैं जो हमारे विनम्र परमेश्वर ने प्रदर्शित किया, हम उसकी विश्वसनीयता के बारे में एक छोटा सा भी संदेह कैसे कर सकते हैं?

हम तो सबके सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। वह सताया गया, तो भी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला। अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवितों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।

--- यशायाह 53:6-9

24

परमेश्वर एक सेवक है, गुलामो का स्वामी नहीं

अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है: परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।

--- यीशु (यूहन्ना 15:15)

परमेश्वर नहीं चाहता कि हमारा अन्ध-विश्वास प्रस्तुत हो। वह हमारी दोस्ती चाहता है। जब हम किसी मित्र से बात करते हैं, तो हम औपचारिकता या रहस्यवाद का उपयोग नहीं करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ ईमानदारी से बात करें जैसे हम एक करीबी दोस्त के साथ बात करते हैं - यह प्रार्थना का वास्तविक अर्थ है। परमेश्वर ने हमें तर्क करने की क्षमता से बनाया है, और वह हमें उस क्षमता का उपयोग करने के लिए आमंत्रित करता है: यहोवा कहता है, “आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें:” (यशायाह 1:18)।

यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, “तुम जानते हो, कि अन्यजातियों के अधिपति उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने; जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परन्तु इसलिए आया कि सेवा करे और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राण दे।” (मत्ती 20:25-28)

यीशु ने मानवजाति की सेवा करने के लिए स्वयं को समर्पित करके जीवन की व्यवस्था का प्रदर्शन किया।

और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। और सारे सीरिया देश में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों और दुःखों में जकड़े हुए थे, और जिनमें दुष्टात्माएँ थीं और मिर्गीवालों और लकवे के रोगियों को उसके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया। और गलील, दिकापुलिस, यरूशलेम, यहूदिया और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली। (मत्ती 4:23-25)

एक कोढ़ी ने उसके पास आकर, उससे विनती की, और उसके सामने घुटने टेककर, उससे कहा, “यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।” उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, “मैं

चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।" और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया। (मरकुस 1:40-42)

यीशु ने सभी दुख से राहत देने के लिए अथक ढंग और दया से काम किया। कोई भी उनके ध्यान और प्यार भरे देखभाल से परे नहीं था: "और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं (यूहन्ना 21:25)।

यीशु ने, यह जानकर कि पिता ने सब कुछ उसके हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ, और परमेश्वर के पास जाता हूँ। भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अँगोछा लेकर अपनी कमर बाँधी। तब बर्तन में पानी भरकर चेलों के पाँव धोने और जिस अँगोछे से उसकी कमर बंधी थी उसी से पोंछने लगा। (यूहन्ना 13:3-5)

यह पारदर्शक "परमेश्वर का कार्य" मसीह के अंतिम भोजन स्थान पर अपने परीक्षण और सूली पर चढ़ने से कुछ घंटे पहले ही होता है। लूका का सुसमाचार इस दौरान यीशु के शिष्यों के बारे में भयंकर विस्तार से जानकारी देता है: "उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ; कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है?" (लूका 22:24)

यीशु जानता था कि वह परमेश्वर से आया था। सब चीजें उसके हाथ में थीं। दूसरे शब्दों में, यीशु पूरी तरह से वाकिफ थे कि वह परमेश्वर की शक्ति के साथ परमेश्वर था। वह यह भी जानते थे कि उनके अपने शिष्य इस विवाद के बीच में थे कि परमेश्वर के राज्य में उनमें से सबसे महान कौन होगा। यीशु ने क्या किया? उन्होंने "एक तौलिया लिया, और खुद की कमर को उस अँगोछे से बंध दिया" और अपने स्वयं के महत्वपूर्ण शिष्यों के पैरों को धोया (यह उस संस्कृति में एक घरेलू गुलाम का कार्य था।)

जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

--- फिलिप्पियों 2:5-7

25

परमेश्वर आपको बिना शर्त प्यार करता है

“क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हाँ, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता। देख, मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है।

--- यशायाह 49:15-16

हमारे पास कई बार ऐसा समय हो सकता है जब हमें लगता है कि परमेश्वर ने हमें भुला दिया है, लेकिन भावनाएं हमेशा वास्तविकता का सटीक माप नहीं होती हैं। परमेश्वर कहते हैं कि वह नहीं भूलेंगे: “क्या दो पैसे की पाँच गौरैयाँ नहीं बिकती? फिर भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। वरन् तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, अतः डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। (लूका 12:6-7)

क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी। (रोमियों 8:38-39)

परमेश्वर के प्रेम का पूरी तरह से वर्णन करना या उसे समझना हमारे लिए असंभव है।

देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ, और हम हैं भी; इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। (1 यूहन्ना 3:1)

परमेश्वर की आशा है कि हम सभी ने उसे हमारे स्वर्गीय पिता के रूप में पहचानेंगे। तब हम अपनी विरासत को परमेश्वर के बेटों और बेटियां के रूप में महसूस करेंगे।

“देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुँह सदा देखते हैं। [क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने आया है।] “तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक भटक जाए, तो क्या निन्यानवे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूँढ़ेगा? और यदि ऐसा

हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह उन निन्यानवे भेड़ों के लिये जो भटकी नहीं थीं इतना आनन्द नहीं करेगा, जितना कि इस भेड़ के लिये करेगा। ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो। (मत्ती 18:10-14)

हर व्यक्ति, सिंहासन पर ह्युगेतिस्ट सम्राट से सड़क पर सबसे गरीब भिखारी तक, परमेश्वर के लिए मूल्यवान है। किस तरह मूल्यवान है? यदि पृथ्वी पर केवल एक पापी होता, फिर भी परमेश्वर स्वर्ग छोड़ देता, बड़ा नुकसान उठाता और उसे पाप से बाहर निकालने के लिए मर जाता।

यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझसे सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।

--- यिर्मयाह 31:3

26

परमेश्वर का साम्राज्य

जब फरीसियों ने उससे पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो उसने उनको उत्तर दिया, “परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप में नहीं आता। और लोग यह न कहेंगे, कि देखो, यहाँ है, या वहाँ है। क्योंकि, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।”

--- यीशू (लूका 17:20-21)

इस दुनिया के राज्य और संस्थान सभी हमारी मानवीय आंखों को दिखाई देते हैं। लेकिन अगर हम परमेश्वर के राज्य की एक प्रकट अभिव्यक्ति के लिए देख रहे हैं, तो हम इसे खोज नहीं पाएंगे। हालाँकि परमेश्वर का राज्य तभी स्पष्ट और दृश्यमान होगा जब परमेश्वर और एक दूसरे के लिए हमारा प्रेम हमारे स्वार्थ की जगह ले लेगा।

फिर उसने (यीशू) कहा, “हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किससे दें, और किस दृष्टान्त से उसका वर्णन करें? (मरकुस 4:30)

मानव भाषा में शब्दों को खोजना कितना कठिन है जो परमेश्वर के राज्य की एक सटीक तस्वीर उन लोगों को बताएं जो केवल इस दुनिया के राज्यों से परिचित हैं!

यीश् ने उसको उत्तर दिया, “मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।” (यूहन्ना 3:3)

आध्यात्मिक बातो को समझने योग्य करना पवित्र आत्मा का कार्य है। जब हम पवित्र आत्मा के कोमल प्रभाव का स्वागत करते हैं, आध्यात्मिक वास्तविकता इसे परमेश्वर के राज्य को देखना या समझना संभव बनाने पर ध्यान केंद्रित करती है। इस नई वास्तविकता के परिप्रेक्ष्य में बदलाव सामंजस्य और जीवन-दर्शन है, जैसे "फिर से पैदा होना।"

पवित्र आत्मा धर्म की सीमाएँ के भीतर काम करने तक सीमित नहीं है, जैसा कि हम कभी-कभी कल्पना करते हैं। वह कोई पृष्ठभूमि, ग्रह पर स्थान, या कुशल विचारधारा की परवाह किए बिना हर एक से बोलता है। परमेश्वर की पवित्र आत्मा नास्तिकों के हृदय पर भी कार्य करती है। जब कोई उसके अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है तो ईश्वर पूर्वाग्रह नहीं करता है और नाराज नहीं होता है।

पवित्र आत्मा की आध्यात्मिक चीज़ों का पदार्थ को समझने योग्य केवल सिर का ज्ञान नहीं है, बल्कि दिल का एक परिवर्तन है। कई मामलों में एक दयालु और उदार अज्ञेयवादी या नास्तिक पवित्र आत्मा

के प्रभाव के प्रति अधिक प्रतिक्रियाशील है और इसलिए परमेश्वर के राज्य के करीब है। लेकिन दुख की बात है कि एक धर्मी, कठोर हृदय वाला धर्मवादी ईश्वर और उसके राज्य से दूर है। परमेश्वर के लिए इससे ज्यादा मुश्किल क्या हो गा - अपने अस्तित्व के बारे में किसी व्यक्ति के दिमाग को बदलना या दुराग्रही, कठोर हृदय को बदलना?

फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; पर चेलों ने उनको डाँटा। यीशु ने यह देख क्रुद्ध होकर उनसे कहा, “बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की तरह ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।” (मरकुस 10:13-15)

जब परमेश्वर और उसके राज्य के बारे में सच्चाई सीखने की बात आती है, तो सबसे कठिन हिस्सा सीखना नहीं है, बल्कि उन गलत चीजों को भूलना है जो हमने सीखी हैं। हम में से कई लोगों ने परमेश्वर की तस्वीर विकसित करने में बहुत बड़ा निवेश किया है। अगर हमें पता चलता है कि यह एक गलत तस्वीर है, तो उस तस्वीर या समझ को छोड़ना विशेष रूप से कठिन हो सकता है। क्योंकि परमेश्वर की विकृत तस्वीर इतने लंबे समय से लोकप्रिय धर्म में अंतर्निहित है, यह परमेश्वर और उसके राज्य के बारे में सच्चाई को समझने के लिए सबसे बड़ी बाधा के रूप में खड़ा है। हालाँकि बच्चो ने परमेश्वर की इस विकृत तस्वीर का अपेक्षाकृत कम संपर्कन किया था, उन्हें हमारे विनम्र परमेश्वर के बारे में सच्चाई को स्वीकार करना आसान बनाते हुए।

उसी समय चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, “स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?” इस पर उसने एक बालक को पास बुलाकर उनके बीच में खड़ा किया, और कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाओगे। जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। (मत्ती 18:1-4)

स्वर्ग का राज्य दुनिया के राज्यों से विपरीत है। अहंकार, चालाकी, जबरदस्ती, या स्थिति का अभिमान के लिए कोई जगह नहीं है। हमें अपने स्वर्गीय पिता में बच्चे-जैसा विश्वास होना चाहिए और सिखाया जाने वाली एक खुली इच्छा।

“स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पा कर छिपा दिया, और आनन्द के मारे जाकर अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया। “फिर स्वर्ग का राज्य एक

व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया। (मत्ती 13:44-46)

जब हमें परमेश्वर के बारे में सच्चाई समझ में आती है - कि उनके पास असीम, अन्य-केंद्रित प्रेम है और वह पूरी तरह से भरोसेमंद, दयालु और उदार है - हमें एक ही समय में उसका राज्य क्या और

कैसा है, इसकी स्पष्ट समझ होगी। हम परमेश्वर की हमारी विकृत तस्वीर को बेकार के रूप में देखेंगे और परमेश्वर और उसके राज्य की सच्ची तस्वीर खरीदने के लिए खुशी से इसे बेच देंगे।

और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उसने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया, उससे पूछा, "सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है?" यीशु ने उसे उत्तर दिया, "सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है: 'हे इस्राएल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।' और दूसरी यह है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।' इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।" शास्त्री ने उससे कहा, "हे गुरु, बहुत ठीक! तूने सच कहा कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं। और उससे सारे मन, और सारी बुद्धि, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना; और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमबलियों और बलिदानों से बढ़कर है।" जब यीशु ने देखा कि उसने समझ से उत्तर दिया, तो उससे कहा, "तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं।" और किसी को फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ। (मरकुस 12:28-34)

यीशु ने उस मुंशी को प्रोत्साहन दिया जिसका वह जवाब दे रहा था: "तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं।" अधिकांश की तुलना में लेखपाल ने आध्यात्मिक वास्तविकता की गहरी समझ व्यक्त की। वह शास्त्र के उथले पढ़ने से आगे निकल गया और यीशु के देखने के लिए लाए गए कानून की प्रेम-दृष्टि को समझ लिया।

जब प्यार का कानून भूमि का एकमात्र नियम बनेगा तो धरती नई जैसे कैसे बनेगी? परमेश्वर का अन्य-केंद्रित प्रेम सभी मानवता में परिलक्षित होगा। प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्ति को प्यार और "खुद से बेहतर" के रूप में मूल्य करेंगा (फिलिप्पियों 2:3)। वहाँ खुशी और सुरक्षा की स्थिति हमारी कल्पना के असीम रूप से परे मौजूद होगी।

परन्तु जैसा लिखा है, "जो आँख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।"

--- 1 कुरिन्थियों 2:9

27

परमेश्वर हमें सच्ची स्वतंत्रता प्रदान करता है

तब परमेश्वर ने कहा, “अब हम मनुष्य बनाएं। हम मनुष्य को अपने स्वरूप जैसा बनाएगे। मनुष्य हमारी तरह होगा। वह समुद्र की सारी मछलियों पर और आकाश के पक्षियों पर राज करेगा। वह पृथ्वी के सभी बड़े जानवरों और छोटे रेंगनेवाले जीवों पर राज करेगा।”

----- उत्पत्ति 1:26

परमेश्वर ने पृथ्वी पर मानव जाति को जो प्रभुत्व दी वह दुरुपयोग या शोषण को मंजूरी नहीं देता। आदम और हव्वा और उनके वंश को पृथ्वी और इसमें प्रत्येक प्राणी की देखभाल करने वाले होने चाहिए थे। पवित्रशास्त्र ने रिकॉर्ड किया, “स्वर्ग यहोवा का है। किन्तु धरती उसने मनुष्यों को दे दिया (भजन संहिता 115:16)”। जब हमारे पहले माता-पिता ने झूठ पर विश्वास किया कि परमेश्वर स्वार्थी और प्रतिबंधक हैं, वे धोखेबाज से हार गए थे और उनके दिमाग उसके बंधन में लाया गया, “क्योंकि कोई व्यक्ति जो उसे जीत लेता है, वह उसी का दास हो जाता है (2 पतरस 2:19)” । जहां आदम और हव्वा को एक बार आजादी मिली थी , वो और उनके बच्चे अब शैतान के बंधन में थे। पाप में पड़ने के बाद एक भयानक क्षण के लिए, यह दिखाई दिया गया कि मानव जाति के पास कोई सहारा नहीं होगा , लेकिन उन्हें शैतान और अन्य गिरे हुए देवदूत के जैसे अपरिहार्य विनाश के रूप में असहाय बर्बाद होना पड़ेगा।

फिर भी खुशखबरी है; परमेश्वर ने उनके और उनके वंशजों के लिए बंधन से निकलने का रास्ता प्रदान किया। इस आपातकाल को पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने शैतान से ये शब्द बोले: “मैं तुम्हें और स्त्री को एक दूसरे का दुश्मन बनाऊँगा। तुम्हारे बच्चे और इसके बच्चे आपस में दुश्मन होंगे। तुम इसके बच्चे के पैर में डसोगे और वह तुम्हारा सिर कुचल देगी (उत्पत्ति 3:15)।” यह दुश्मनी क्या है?

जब शैतान और उसके अनुयायियों ने परमेश्वर के खिलाफ स्वर्ग में विद्रोह किया, उन्होंने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ लंबे समय के संबंध की स्थिति से ऐसा किया। उनके पास परमेश्वर के प्रेम को जानने का पर्याप्त अनुभव था और उसकी अच्छाई पर संदेह करने का कोई कारण नहीं था। जब उन्होंने अपने आप को परमेश्वर से काट दिया जैसा उन्होंने किया, उन्होंने खुद को पवित्र आत्मा

के जवाब में असमर्थ बना दिया। अपने अड़ियल अभिमान के कारण, उन्होंने खुद को पश्चाताप करने और अपने निर्माता के पास वापस लौटने में असमर्थ बना अंधेरे और अंतिम विस्मरण में बर्बाद कर लिया था।

जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो उन्होंने ऐसा परमेश्वर के बारे में सीमित ज्ञान और उसके साथ सीमित अनुभव से किया। उन्हें शैतान ने धोखा दिया था; उन्होंने उनके निर्माता को अस्वीकार करने के बारे में गणना का निर्णय नहीं किया था। मानव जाति का परमेश्वर से अलगाव बिना उपाय के नहीं था। परमेश्वर का वादा कि वह शैतान और औरत के बीच “दुश्मनी डालेगा" पृथ्वी की मूल सुसमाचार संदेश था।

परमेश्वर ने दया करके आदम और हव्वा और उनके वंशज को यह आशा दी कि उनके दिल और दिमाग अभी भी पवित्र आत्मा के जवाब के लिए सक्षम होंगे – वे अभी भी परमेश्वर के प्यार के लिए असुरक्षित होंगे। मनुष्य हमेशा के लिए शैतान के बंधन में नहीं रहेगा। प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा शैतान के विरुद्ध परमेश्वर द्वारा सुरक्षित रखी जाएगी। हमारे निर्माता के साथ मेल मिलाप करने के लिए यह हमारी चुनने की स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है।

कि यह भी कभी अपनी विनाशमानता से छुटकारा पाकर परमेश्वर की संतान की शानदार स्वतन्त्रता का आनन्द लेगी। (रोमियों 8:21)

मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है, ताकि हम स्वतन्त्रता का आनन्द ले सकें। इसलिए अपने विश्वास को दृढ़ बनाये रखो और फिर से व्यवस्था के विधान के जुए का बोझ मत उठाओ। (गलातियों 5:1)

अतः यदि पुत्र तुम्हें मुक्त करता है तभी तुम वास्तव में मुक्त हो। (यूहन्ना 8:36)

इस युग के स्वामी (शैतान) ने इन अविश्वासियों की बुद्धि को अंधा कर दिया है ताकि वे परमेश्वर के साक्षात प्रतिरूप मसीह की महिमा के सुसमाचार से फूट रहे प्रकाश को न देख पायें। क्योंकि उसी परमेश्वर ने, जिसने कहा था, “अंधकार से ही प्रकाश चमकेगा” वही हमारे हृदयों में प्रकाशित हुआ है, ताकि हमें यीशु मसीह के व्यक्तित्व में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान की ज्योति मिल सके। (2 कुरिन्थियों 4:4,6)

क्या यह कानूनीवाद और असंगति के काले आवरण को हटाने का समय नहीं है जिसके साथ शैतान ने यीशु मसीह के सुसमाचार को ढक दिया है? क्या यह हमारे कोमल परमेश्वर के चरित्र के बारे में गलतफहमी अस्वीकार करने का समय नहीं है?

सो यीशु उन यहूदी नेताओं से कहने लगा जो उसमें विश्वास करते थे, "यदि तुम लोग मेरे उपदेशों पर चलोगे तो तुम वास्तव में मेरे अनुयायी बनोगे। और सत्य को जान लोगे। और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।"

---- यीशु (यूहन्ना 8:31-32)

सच्चाई हमारे विनम्र परमेश्वर के बारे में अच्छी खबर है!

यहोवा कहता है, "बुद्धिमान को अपनी बुद्धिमानी की डींग नहीं मारनी चाहिए। शक्तिशाली को अपने बल का बखान नहीं करना चाहिए। सम्पत्तिशाली को अपनी सम्पत्ति की हवा नहीं बांधनी चाहिए। किन्तु यदि कोई डींग मारना ही चाहता है तो उसे इन चीज़ों की डींग मारने दो: उसे इस बैंत की डींग मारने दो कि वह मुझे समझता और जानता है। उसे इस बात की डींग हाँकने दो कि वह यह समझता है कि मैं यहोवा हूँ। उसे इस बात की हवा बांधने दो कि मैं कृपालु और न्यायी हूँ। उसे इस बात का ढींढोरा पीटने दो कि मैं पृथ्वी पर अच्छे काम करता हूँ। मुझे इन कामों को करने से प्रेम है।" यह सन्देश यहोवा का है।

--- यिर्मयाह 9:23-24

कैप्सूलीकरण

1. सही तरीके से समझा जाए तो बाइबल वाजिब है। बाइबल खुद को परिभाषित और व्याख्या करता है। (यशायाह 1:18; 1 कुरिन्थियों 2:13)

2. हमारे तरीके और विचार परमेश्वर के तरीकों और विचारो को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। (यशायाह 55: 8-9; भजन संहिता 50:21)

3. परमेश्वर की महिमा उनका चरित्र है। (निर्गमन 34:6-7 ; 2 कुरिन्थियों 4:4,6)

4. परमेश्वर प्रेम है। (1 यूहन्ना 4: 8,16)

5 परमेश्वर का प्यार पूरी तरह से निःस्वार्थ है। (यूहन्ना 3:16-17; रोमियों 5: 8)

6. प्रेम के लिए स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। (व्यवस्था विवरण 30: 19-20; यूहन्ना 8:32, 36)

7. यीशु परमेश्वर है। (यूहन्ना 1: 1-3, 14; कुलुस्सियों 1: 13-17)

8. यीशु परमेश्वर का सबसे स्पष्ट रहस्योद्घाटन है। (इब्रानियों 1: 3)

9. परमेश्वर कभी नहीं बदलते। (मलाकी 3:6; इब्रानियों 13: 8; याकूब 1:17)

10. परमेश्वर सृष्टिकर्ता और निर्वाहक है-विनाशक नहीं। (उत्पत्ति 1: 1; भजन संहिता 33: 6, 9; इब्रानियों 1: 3; लूका 9:56; यूहन्ना 10:10)

11. विवाद में प्रश्न परमेश्वर के शासन के सिद्धांतों के बारे में है - उसकी शक्ति के बारे में नहीं है। (उत्पत्ति 3: 1-5)

12. परमेश्वर का राज्य प्रेम के नियम से संचालित होता है - कानून के नियम द्वारा नहीं। (मत्ती 22: 37-40; गलातियों 5: 14, 22-23; 1 कुरिन्थियों 13)

13. परमेश्वर कभी बल का प्रयोग नहीं करता। वह अच्छे के साथ बुराई पर काबू पा लेता है। (मत्ती 5: 43-48; रोमियों 12: 20-21; लूका 23:34)

14. शैतान परमेश्वर का विरोधी और धोखे का मालिक है। (यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 11:14; प्रकाशित वाक्य 12: 7-9; 1 पतरस 5: 8)

15. पाप परमेश्वर को आत्म-सेवा और अविश्वास के रूप में देख रहा है। (उत्पत्ति 3:1-5; कुलुस्सियों 1:21)

16. पाप घातक है - परमेश्वर नहीं। (रोमियों 6:23; याकूब 1: 13-15)

17. परमेश्वर हमें न्याय नहीं करते हैं - हम खुद को न्याय करते हैं। (यूहन्ना 3:17-21; 5: 22; 12:44-48; मत्ती 7:1-5; लूका 6: 37; रोमियों 2:1-3)

18. सुसमाचार परमेश्वर के बारे में अच्छी खबर है। (2 कुरिन्थियों 4: 3-6; प्रकाशित वाक्य 14: 6-7; लूका 15: 11-32; यूहन्ना 3:16-17; रोमियों 5:8)

19. उद्धार चिकित्सा सुलह है - यह कानूनी मुद्दा नहीं है। (मरकुस 2: 16-17; लूका 4: 18-19; प्रेरितों के काम 28: 27; 2 कुरिन्थियों 5:18)

20. परमेश्वर को जानना शाश्वत जीवन है। (यूहन्ना 17:3)

हमारे विनम्र परमेश्वर के आधिनियम परमेश्वर के बारे में आरोपों को कि वह बेपरवाह , न्यायशील, नियंत्रित, अनुचित, बुरा-स्वभाव का, या हिंसक है बाइबल से सम्मोहक साक्ष्य प्रस्तुत कर बेनकाब करता है । पुस्तक दर्शाती है कि संपूर्ण बाइबिल, सही ढंग से समझे जाने पर निश्चित बयान के साथ सद्भाव में है: "परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4: 8)।

लेखक के हमारे विनम्र परमेश्वर की स्पष्ट तस्वीर की खुद की यात्रा 50 साल से अधिक तक फैली हुई हैं। वह अपनी पत्नी, जूली, के साथ उत्तरी मिनेसोटा में उनके वाल्डेन-प्रेरित केबिन में रहता है। वह कई चार-पैर वाले और पंख वाले दोस्त की संगती का आनंद लेता है।